हिमाचल प्रदेश के

घटना और श्रमप्रधान गीत



हिमाचल ज्ञान कोष माला

हिमाचल प्रदेश के

घटना और श्रम प्रधान गीत

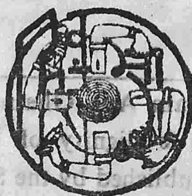
(मूल गीत हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादन :

एम. आर. ठाकुर

डा. बंशीराम शर्मा

रमेश जसरोटिया



हिमाचल कला संस्कृति और भाषा अकादमी

शिमला

हिमाचल प्रदेश के
घटना और श्रमप्रधान गीत

प्रकाशक : सचिव, हिमाचल कला, संस्कृति
और भाषा अकादमी
क्लिफ एण्ड एस्टेट, शिमला-171 001

प्रथम संस्करण : 1986
प्रतियां 1,000
मूल्य : रु. 15.00

Himachal Pradesh Ke Shram Aur Ghatnapradhan Geet, a collection of songs on true incidents & dignity of labour of Himachal Pradesh with Hindi translation. Published by the Secretary, Himachal Academy of Arts, culture & Languages, Cliff end Estate Shimla-171 001 and *Printed at* **M/s New Printers**, Green Field Cottage (Near Ice Sketing Rink) Shimla-171 001

प्राक्कथन

हिमाचल प्रदेश संस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र है। ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे इस भूखण्ड में प्रागैतिहासिक काल के सांस्कृतिक अवशेष जीवन्त रूप में सुरक्षित है क्योंकि 'ग्राम देव प्रथा' ने ग्रामीण मान्यताओं को बदलने की स्वीकृति नहीं दी। प्रदेश का इतिहास लिखित रूप में सुरक्षित रखने के प्रयत्न नहीं हुए परन्तु लोक मानस ने उसे गीतों तथा गाथाओं के माध्यम से अमर बना दिया।

लोक मानस को सही ढंग से पहचानने के लिए लोक गीत सशक्त माध्यम है। एक पुरानी कहावत है कि ऐसा मनुष्य खोज पाना असम्भव जिसने कभी दु:ख में न तो आंसू बहाए हों और न प्रसन्नता में गाना गाया हो। लोकगीतों का विषय कुछ भी हो सकता है परन्तु मानव जीवन में प्रेम, घटना तथा श्रम का सर्वाधिक महत्व है।

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना प्रदेश की संस्कृति साहित्य तथा कलाओं के संरक्षण के उद्देश्य से सन् 1972 ई0 में हुई थी। अकादमी द्वारा प्रदेश की संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर 20 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। संस्कार गीतों की एक पुस्तक 982 में प्रकाशित हुई और उसी कड़ी में घटना तथा श्रम प्रधान लोक गीतों का यह दूसरा पुष्प आपके सामने है।

श्रम तथा घटनायें पर्वतीय जनमानस की नियति है। इन दोनों विशेषताओं के अभाव में यहां का सामाजिक जीवन नीरस हो जायेगा। घटनाएं सुखद तथा दुखद किसी भी प्रकार की हो सकती हैं। प्रस्तुत संग्रह में शौर्य प्रधान गीत यथा—होकू रावत, सिंगा वज़ीर, नोतमाम नेगी, कौरव पांडव युद्ध, जगता आदि, सती गीत यथा—महासती कुज़ी, महासती लोता, महासती नरज़ी आदि और प्रेमगीत तथा श्रमगीत संकलित हैं। इन गीतों में से अनेक पाठकों तथा श्रोताओं के लिए बिल्कुल नए हैं जिन्हें पहले कभी भी प्रकाशित नहीं किया गया है।

इस संकलन में संगृहीत लोकगीत मात्र घटनाओं तथा श्रम से ही सम्बन्धित नहीं है बल्कि इनके माध्यम से स्थानीय जन-विश्वासों की झलक भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो जाती है। किन्नौर से प्राप्त पितीराम पतिराम गीत में शिखरों पर निवास करने वाले देवी-देवताओं से सम्बन्धित विश्वासों की झलक मिलती है। लाहुल से प्राप्त 'ब्रूसींग' गीत में विभिन्न वस्तुओं में सौन्दर्य भावना तथा श्रमगीत 'खुई कोर थे' गाय का सन्दर्भ, बिलासपुर क्षेत्र के गीत 'भूली जायां दिलड़ुआ' में

गोविन्द सागर के बनने से साण्डू मैदान के प्रति मोह के भाव, कुल्लू से उपलब्ध 'हेसरू बोला' तथा 'हां लाम्बू लोहरा' में श्रम के ढंग तथा महत्ता सम्बन्धी विचार सुन्दर ढंग से सामाजिक व्यवस्था का चित्रांकन करते हैं।

अकादमी द्वारा प्रदेश के लोकगीतों के संकलन तथा प्रलेखन की एक विस्तृत योजना तैयार की गई है जिसके अन्तर्गत 'हिमाचल ज्ञानकोष माला' के अन्तर्गत प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया जायेगा। प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना की कड़ी का द्वितीय पुष्प है।

वीरभद्र सिंह

मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश

तथा

अध्यक्ष, हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी

शिमला : 22 दिसम्बर, 1986

दो शब्द

लोक-गीत और लोक गाथाएं हिमाचल प्रदेश की संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। इतिहास के संरक्षण की दिशा में इस क्षेत्र में अधिक कार्य नहीं हुआ है क्योंकि यहां का जनमानस आत्म संतुष्टि तथा आध्यात्मिक भावना से ओतप्रोत रहा और प्रसिद्धि से दूर रहने में प्रसन्नता अनुभव करता था।

हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी का एक संकलन 'संस्कार लोकगीत' के शीर्षक से छपा था, उसका पाठकवर्ग ने स्वागत किया और अब घटना तथा श्रम प्रधान गीतों के संकलन-प्रकाशन का यह प्रयास आपके सामने है। अकादमी अपने कार्यक्रमों में निरन्तर गतिशील है और अब नई योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है जिससे सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में प्रगति होगी। प्रदेश में संस्कृति के संरक्षण के क्षेत्र में ग्राम देवताओं का महत्वपूर्ण योगदान है उनके सम्बन्ध में अनेक लोकगीत प्रचलित हैं, आशा है अकादमी उन्हें शीघ्र ही प्रलेखित तथा संरक्षित कर पाएगी।

घटना और श्रमप्रधान गीतों के प्रकाशन से अब तक अवर्गीकृत गीतों का संकलन प्रस्तुत करने में अकादमी गौरव अनुभव करती है।

नारायण चन्द पराशर
उपाध्यक्ष अकादमी
तथा
अध्यक्ष, कार्यकारी परिषद

निवेदन

लोकसंस्कृति मानवाकुल का आभूषण है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन का आद्योपान्त संगम रहता है। यहां पुराना कुछ नहीं हैं, सभी कुछ नया तथा ताज़ा है। घटनाएं बदलती हैं पर गीत अपने नए रूप में पुरानी धुनों पर आते जाते हैं। लोकसंस्कृति सबकी सामूहिक धरोहर है, उन पर किसी एक का अधिकार नहीं है। अतः सम्पूर्ण समाज अपने हितों, रुचियों तथा उद्देश्यों की रक्षा के लिए उसे ग्राह्य तथा उपयोगी बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

अलिखित सामाजिक घटनाक्रम का नाम ही लोकसाहित्य है। लोकसाहित्य में वाणी है राग, लय तथा ताल है। जब लोकसाहित्य चिन्तन-पक्ष को भी साथ मिला कर चलता है तब उसका नाम लोकसंस्कृति हो जाता है। हिमाचल कला, संस्कृति और भाषा अकादमी प्रदेश की लोकसंस्कृति के प्रलेखन तथा संरक्षण की दिशा में अनेक योजनाओं पर कार्य कर रही है। लोकगीतों के क्षेत्र में संस्कार गीतों की पुस्तक का प्रकाशन सन् 1982 ई० में हुआ। इसके पश्चात भर्तृहरि से सम्बन्धित लोकगाथा का संकलन तथा प्रकाशन किया गया। श्रम तथा घटनाएं इस प्रदेश के लोकमानस तथा सामाजिक जीवन की दिनचर्या हैं। प्रतिदिन घटनाएं घटती हैं। मानव शक्ति के अधिकाधिक उपयोग के लिए यहां मशीनीकरण का विकल्प नहीं है। किस प्रकार बड़ी से बड़ी वस्तु को सामूहिक बल से एक से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, उसके लिए मशीन का प्रबन्ध करने से सम्भवतः वर्षों लग जाएं परन्तु लोकगीत की कुछ पंक्तियां कार्यरत व्यक्तियों में लय के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरणा ही नहीं देतीं बल्कि उनकी शक्ति को अनेक गुणा बढ़ा भी देती है।

हिमाचल प्रदेश के सम्पूर्ण ज्ञान का आभास किसी एक पुस्तक में समाहित किया जाना सम्भव नहीं है - इसके लिए हिमाचल ज्ञानकोष योजना तैयार की गई है। इस योजना के अन्तर्गत सात भागों में विभिन्न विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित की जाएंगी। इस योजना के अन्तर्गत सातवें खण्ड का प्रकाशन हिमाचल प्रदेश की सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के शीर्षक से किया जा चुका है। संस्कार गीत तथा घटना और श्रम प्रधान गीत इसी विशद योजना के अंग हैं।

इस प्रदेश में लोक कवि बहुत सम्वेदनशील तथा प्रतिभा सम्पन्न रहा है। एक समालोचक ने ठीक ही कहा था कि सरलता सिद्धहस्त साहित्यकार का सबसे बड़ा गुण है। कर्मो छैला के गीत में कवि कहता है :—

हाय बो मेरेया कर्मोआ छैला हे
तेरे साही मणू भी नी हूणा हे
ब्रिकु गल् बैटरी बलोरी हे
आई मामे भाणजे री जोड़ी हे

अर्थात् 'कर्मो तुम कितने सुन्दर हो, आप जैसा कोई मनुष्य नहीं हो सकता। ब्रिकु मोड़ पर टार्च जल रही है, मामा भान्जा की जोड़ी आ रही है।'

श्रम के प्रति आह्वान 'हेसरू बोला— हे सार' में कितना सटीक है—

हेसरू बोला हे सार
रौंई रा दार—हे सार
जोर नीं लांदा— हे सार
देउआ री कार हे सार

अर्थात 'हेसरू बोलिए ! रई वृक्ष का शहतीर है, हे सार ! (तुम) जोर नहीं लगाते हे सार ! देवता की सौगन्ध (जोर लगाने के लिए), हे सार !' जिसने श्रम का जीवन जीया है, उसे पता है कि सामूहिक शक्ति के लिए ये शब्द कितने प्रेरक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इस प्रकार की सहजता तथा सरलता के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे।

घटना तथा श्रम प्रधान गीतों के संग्राहकों ने इन लोकगीतों को एकत्रित करने के लिए मेहनत की है। अकादमी के भूतपूर्व सचिव श्री एम० आर० ठाकुर ने इन्हें वर्तमान रूप में प्रस्तुत करने के लिए योजना बनाई तथा कार्य किया। कुमारी विद्या शर्मा ने प्रस्तुत पुस्तक के लोकगीतों के सग्रह का कार्य मनोयोग से किया है तथा मै० न्यू प्रिन्टर्ज़, शिमला के मालिक ने इसे मुद्रित करने में योगदान दिया। इन सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापन हमारा कर्तव्य है।

शिमला : 25 दिसम्बर, 1986 — डॉ० बंशीराम शर्मा

क्रम

सिरमौर क्षेत्र

मियां होकूरावत

वर्तमान सिरमौर हिमाचल प्रदेश का एक ज़िला है। यहां पर हजारों वर्ष तक राजतंत्रीय शासन रहा है। जब कभी राजा अल्पायु या निर्बल होता तो राजकर्मचारी उस पर हावी हो जाते थे व प्रजा पर मनमाना शासन थोपते थे। गिरीपार के वासियो ने इस अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध समय समय पर आवाज़ उठाई। यद्यपि शासन के क्रूर हाथों ने उसे कुचल कर रख दिया पर शहीदों की यादगार लोक गीतों के माध्यम से सदा अमर रही। इन शहीदों और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द करने वालों में घन्डोरी निवासी मियां होकूरावत का प्रथम स्थान है जिसने १६८० ई० के लगभग अन्याय को सहन करने के स्थान पर अपने प्राणों की आहुती देना श्रेष्टकर समझा। उसकी याद में आज भी गीत गाया जाता है।

संग्रहण व अनुवाद

प्रो० रूप कुमार शर्मा

मियां होकूरावत

धानी गाणी ठाहरी देवी दुरिगा माई,
भूले देणे बिसरे, यादो दिलाई ।
बोहुता देणा शादड़ा, पाछड़े पाई,
आखरों देणे होकू रे, दो चारो गाई ।
दोलू रुए मोहते, धुणिओं खाई
खमली थोई, सीणाए चोतरू री मानलो पाई ।
खुमली दी बातों थोई ली होकूवे लाई,
जुझ देणो मारे राजा नोइणे खे लाई ।
खुमली खे उचले कोटी शा मुगलिया, गनोग शा सुदामा,
रजाणों शा धरता पजवाणा, चौरास शा सामा ।
नोहरे शा मागतू, सगड़ाह शा सघड़ई, सेंज शा बाजो,
शोउ शा खेना, धामला शा महाटा, भूटली मानल शा जाबों ।
देउठीं मुलो थोई, खुमली पाई,
पांची शो नोइयां देणे नोइणी भिजाई ।
खुमली दी रुणों मरोली गुणों,
ऐका चेई रोआ, पाई लोवे लोटे दो लूणों ।
टिका रोआ छुटी राजे रा इयाणा,
नोइणी होई रोवा भीतरा दोलू मोहते रा जाणा ।
मोहते लुए दोलूवे, कुशी कुशिए खाई,
मामला लुआ राजो दा दुजा लिए उगाई ।
होकू लागी सिगटे तोवे नोइणी री बाई,
हाडों आउणो ऐंकियो, नोइणी खे जाई ।
नोइयां देणे गांव रे मेरे सिते पोठाई,
दोलू देणी मोहते री, गुजों कोटाई ।
देव थोआ शिरगुल शाउना लाई,

जुधों देवा मोहते सात देणा जीताई ।
जीती जाउ भारती, सीसे मोने पाछु आउ,
खोंडे लिआउ, काने बकरा, देउठी दा आऊ ।
ऐथे गाई लागा बुलांदा मियां तेरा बारू,
वाईडा पाओ छेवडियों भन्डारों रा दारू ।
पोख रोओ नोइयां रो, घन्डोरी ठाहरी दो आई,
एक लोई दुजे खे रामा रूमीणी शाई ।
फौउजो चली होकू री कण्डारी री धारों,
कण्डारों शो मियां घुन्डोउरी खे हेरो ।
भात छुटो जीरी झीझणे रो झूटड़ी रो दूधो,
ठाई छूटी घुन्डोउरी री कोलीमों री सेरों ।
तेरी वे राउता खाई केमिए बुधों,
चली रुआ जुझों खे, चीते कोरो दूधों ।
जांदा लागा बोंदा, जामटे री बाटों,
आदी भेटो घाटी दो टुडे उलिया रो हाटो ।
मोनो दे राउतिआ घोडों ला घाटों,
लादे केयू ने हाटियों नोइणी री बातों ।
बातों जाणी नोइणी री जाई रोई खोटी,
नोइणी पाकी रोई भीतरी दोलू मोहते री रोटी ।
फुली कोरो फुलीटू, डालिटी दाई,
फौउजों रोई राउतो री जामटे आई ।
जामटे लोई देवी, मोती शिखो खे शाई,
अरजो थोई देवी खे हाथों जोड़ियों लाई ।
देवी थोई जामटे री गरणे लाई,
माता तुए देखिए, हरती ने लाई ।
अडखे नोइणी पाडिड़ा चेली,
जीता लिआउवा भारतो, तो देउवा छेली ।
जामटे री देविए शुणों ने घुणों,
लोटा ढाला पाणीरा बकरा ने घुणों ।
तादी मियां रोजपूती आई,
चौडाई जुते राउतिआ देवी दी लाई ।
से जे कोरे देविए, मुनो भाउले तेरे,
राजे सितो भारीतों जीती लियाउणों मेरे ।

फौउजो लागी होकू री शिया पुरी जाई,
शिया पुरी बाईं गाशी सातू लुए खाई।
जुठे निउठे सातू लुए बाईं उदे पाई,
बाईं एजी राणिरी, भुटीणी लाई।
घोड़ीं तुम्रों दोलूए मुनो दे घाटों,
उवी लगी फौउजो मियां री नोइणी री बाटों।
नोइणी थोई चुगानों दी चोकमी पाई,
चिटा थोम्रा झंडा सुदामे चौगानों गौडाई।
बातों मियां सितीबुला ला ज्वाला,
बीचों कौरणा चुगानों, राउतिया मोहाला।
होकू थोम्रा मियां मोहते खे काजु लाई,
काजु थोम्रा बातों सीता भोरभाई।
मानो ने दोलू मेरे मौनो रा जाणा,
राज हुम्रो चेईं राजे शो जु म्रासों इयाणा।
दोलू दियो मोहतू होकू खे काजी,
तेरे सीते झगड़े खे हा भाजिए भाजी।
दोतिया कोरणा मियां, मोहलों रा फेरा,
झोगडा देणा बोसाए जेशा जी चाउला तेरा।
म्राजी लोणी मियां, भण्डारों री रोटी,
बकरा दिते काटणो खे, सुतनो खे कोठी।
म्राई गिम्रा मियां, दोलू रे फेरो,
गेगो खाई मियां, जेरे कुन्डों रे फेरो।
खोटा मोहता दोलू, कोरना बेने धिजा,
राजे सीता जुझों, तां कोवे ने सीजा।
म्रागी लोई सासों दी, कालजे दे दागो,
म्राज की कोटली रातुटी, दुती खुली भागो।
रातो थोई रोइणा, बोड़ी ठाइए काटों,
राती बीयाणा मियां जुम्रों मोइलों री बाटो।
होकू रोवे सिगटे जिशी बरादुवारी दे जाई,
भेट राजे खे मुरो पाई, जयदेवा शाई।
पोड़ी गिम्रा होकूम्रा, बिचों दा गेरी,
भेटा पाई होकू मियां, पीठ दोलू फेरी।
होकू थीम्रों सिगटे उडो पुडो हेरो,

जाणी पाई होकू, मियां दोलू रे फेरी ।
तादी रोई होकू, रोजपूती आई,
खांडा लोआ चाकरो, गाहे हेराई ।
दोलू हेरे चाकरो, बुझोणी जोई लोई बुझाई,
मो शी जोई रोई चाकरो री होकू सींती फेराई ।
बुलो ने दोलू मेहतिया, नासुमझी, री बातो,
गाली देइला, काटी मारुवा तेरी जातो ।
तिनी तोवे चाकरे थोआ, घेरिणा लाई,
दोले थोई मोते खे, खाडे री पाई ।
दोलू होले मोहते रे बोडिये भागों,
घा तेरा होकूआ, खम्भे दा लागों ।
खांडो रोओ चुटी, भानजे सिगटे खे मोत थोई लाई,
भानीजए वाइडा जाईवे, सोवी खे रामा रुमणी मेरी शाई ।
खांडे री लागी गोइरी शाटो, मारो चाकरो लेरो,
बारा गुरजा दुआरी दा, होकू जियां दुणी दा शेरो ।
होकू थोआ खांडा, खेलणा लाई,
कोठे गाई थोई इट तेरे माथे दी लाई
कुक्डे छूटे लोहू रे, उवे ओसमानो खे जाई,
होकू थोआ चाकरे घेरों दा पाई ।
आइड़ी शा बाघ थोआ, पाछुणा लाई,
हेर मेरिया मियां, भागणी ने खाई ।
जीउंदे सांसे थोआ छेउड़ी देखाई,
भूई दा पोडा घोनिओं, सांसो उडाई ।

मियां होकूरावत

जन्म भूमि तथा दुर्गा माता तुझे शत-शत प्रणाम,
भूले बिसरे मुझे, याद दिला देना ।
बहुत सा विवरण पीछे छोड़ कर,
दो चार शब्द होकू के प्रस्तुत हैं ।
दोलू मेहता ने प्रजा पर अत्याचारों का कहर ढाया है,
निवारण हेतु, ग्राम-मुखिए मानल की बैठक में शामिल हुए ।
पंचायत में होकू मियां कहने लगा,
भाइयो हमने नाहन मे मेहता के विरुद्ध विद्रोह करना है ।
पंचायत में कोटी धिमान से मुगलिया, गनोग से सुदामा,
रजाणा से धरता, पजवाण चौरास से सामा ।
नोहरे से मगतू, सगडाह से सगदई, सैंज से बाजो,
शोउ से खेना, धामला से महटा, भूटली से जाबों शामिल हुए ।
मन्दिर के नीचे पंचायत का आयोजन हुआ,
पांच सौ नौजवानों को नाहन भेजने का निश्चय हुआ ।
पंचायत में बडी गर्मा गर्म बहस हुई,
एकता बनाये रखने के लिए 'लोटे लूण' वाली कसम दिलाई गई ।
राजा का युवराज, छोटी अवस्था है,
नाहन में दोलू मेहता का मनमाना शासन है ।
दोलू मेहता का शासन कसाई से कम नहीं,
राज्य का भूमिकर दोबारा एकत्रित किया जा रहा है ।
होकू और सीगटे को नाहन जाने की उत्कंठा थी,
एक बार नाहन अवश्य जाना है ।
गांव के युवकों को अगर मेरे साथ भेजो,
तो दोलू मेहता की मुछें मुंडवा कर रहूंगा ।
देव शिरगुल से सलाह मांगी गई,

ग्रौर नाहन के ग्रभियान की सफलता के लिए प्रार्थना की गयी ।
ग्रगर नाहन से लड़ाई जीत कर वापस ग्राऊं,
हे देव ! बड़े बकरे के साथ तेरे मन्दिर में ग्राउंगा ।
इस पर मियां बार-बार कहने लगा,
भण्डार से सुखाने को बारूद बाहर डालो ।
युवा सेना घन्डोरी के मन्दिर-प्रांगण में ग्राई,
एक दूसरे को ग्रभिवादन का ग्रादान प्रदान करने लगे ।
होकू की सेना कण्डारी की पर्वत चोटी से होकर निकली,
कण्डारी से मियां (होकू) घन्डोरी को हरसत भरी नजर से देखता है ।
जीरी झीझणी (लाल रंग के उत्तम चावल) व युवा भैंस का दूध छूट गया,
घन्डोरी की जन्म भूमि व कलम के उपजाऊ खेत बिछुड़ गए ।
रावत तेरी बुद्धि पर मोह माया, का पर्दा क्यों पड रहा है,
जा रहा युद्ध के लिए, व याद कर रहा है दूध को ।
जमटे की ग्रोर चलते-चलते
ग्राधे रास्ते में उसे टुडे उलिया का हाट मिला ।
मन ही मन होकू रावत सोचने लगा,
हाटिए नाहन के समाचार क्यों नहीं सुनाते ।
नाहन की बातें तो बड़ी खोटी हैं,
नाहन में तो दोलू मेहते की तूती बोल रही है ।
दाई के फूल खिल गए हैं,
होकू मियां सेना सहित जमटा ग्राम तक पहुंच गया ।
हाथ जोड़ कर देवी से ग्रर्ज करने लगा,
ग्रौर देवी से परामर्श की प्रार्थना की ।
जमटे की देवी की प्रार्थना करने लगा,
माता हार का मुंह न दिखवाना ।
इस ग्रोर नाउणी उस पार ग्राम चेली,
ग्रगर विजयी रहा तो बकरे की बलि चढ़ाउंगा ।
जमटे की देवी में कोई हलचल नहीं हुई,
लोटा पानी का गिराने पर भी उसने बकरा स्वीकार नहीं किया ।
मियां (होकू) को राजपूती ग्राई (खून खौल गया),
उसने जूते सहित देवी को लात मारी ।
देवी जो तेरे मन ग्राये करना,
राजा के विरुद्ध मैं ग्रवश्य युद्ध जीतूंगा ।

होकू की सेना शियापुर बाउड़ी के पास पहुंच गई,
शियापुर बाउड़ी के ऊपर सत्तू खाने लगी।
सुच्चे तथा जूठे सत्तू बाउड़ी के अन्दर डालने लगा,
रानी की बाउड़ी को जूठन से अपवित्र करने लगा।
जब होकू की सेना नाहन की ओर अग्रसर हुई,
तो दोलू उसे निपटने की योजना बनाने लगा।
नाहन चौगान में आकर सेना ठहर गई,
सुदामा ने चौगान में सफेद झंडा गाड़ दिया।
मियां के साथ ज्वाला विचार विमर्श करने लगा,
बीच चौगान में, हमने बन्दूकों से हर्ष नाद करना है।
होकू ने दोलू मेहता को सन्देश भिजवाया,
सन्देश वाहक से यह सन्देशा प्रेषित किया।
दोलू तेरी मनमानी नहीं चलेगी,
राजा की इच्छानुसार राज चाहिए चाहे वह भले ही छोटा है।
दोलू मेहता होकू को निमन्त्रण भेजता है,
मैं तुम्हारे साथ कतई लड़ना नही चाहता।
मियां तुम कल राजदरबार में आना,
जैसा तुम चाहो, तुम्हारी इच्छानुसार फैसला होगा।
मियां आज तुम सरकारी भोज स्वीकार करो,
काटने को बकरा दिया व रहने के लिए विश्राम गृह।
दोलू के फेर में मियां आ गया,
मियां तेरी बुद्धि पर पर्दा पड गया हैं व यह फेर के भंवर में उलझ गयी।
दोलू धोखेबाज है, उसका विश्वास करना भूल होगी,
राजा से झगड़ा शायद, तुम्हें रास नहीं आयेगा।
सांस में आग सी भड़क रही है और कालेजे में दर्द,
आज की रात अगर बीत गई, कल भाग्य-द्वार खुलेगा।
मियां ने रात बडी कठिनाई से बिताई,
रात बीतते ही, राज दरबार की ओर रवाना हुआ।
होकू और सिगटा राजदरबार में पहुंचे,
राजा को सोने की मोहरें भेंट की और जयदेव कहा।
मियां तू दोलू के बहकावे में आ गया,
होकू के अभिवादन के प्रत्युत्तर में दोलू पीठ फेरकर बैठ गया।
होकू व सिगटा इधर उधर देखने लगे,

उन्हें दोलू के फैलाए जाल की भनक पड़ गई।

तब होकू को राजपूती जोश आया,
तलवार को दरबारियों के ऊपर घूमने लगा।
दोलू मेहता ने दरबारियों की ओर इशारा किया,
दरबारी होकू के चारों ओर ऐसा इकट्ठे होने लगे
जैसे शहद के चारो ओर शहद की मक्खियां।

दोलू तू नासमझी की बात मत कर,
वरना मैं तेरा सिर काट कर रख दूंगा।
उन दरबारियों के घेरे का शिकंजा होकू के चारों ओर कसने लगा,
होकू ने दोलू मेहते पर तलवार का वार किया।
दोलू मेहता के बड़े भाग्य थे,
तलवार का प्रहार दोलू के बजाय खम्बे से टकराया।
तलवार टूट गयी, अपने भानजे सिगटा को शिक्षा देने लगा,
तू जान बचाकर भाग जा, सबको मेरा अन्तिम प्रणाम कहना।
होकू की तलवारों के प्रहारों से दरबारी चिल्लाने लगे,
होकू उनके बीच ऐसा गर्ज रहा था जैसे दून में शेर।
होकू की तलवार करतब दिखा रही थी,
कोठे पर से एक ईंट होकू के माथे पर जा टकराई।
लहू को धारें निकल कर ऊपर को फव्वारे की तरह जाने लगी,
दरबारियों ने होकू को पूरे घेरे में ले लिया।
बाघ के समान होकू का आखेट किया जा रहा है,
धन्य मियां, तू रण-क्षेत्र से नहीं भागा।
जब तक सांस रही, वीरता दिखाई,
जब सांस उड़ी तभी भूमि पर गिरा।

●

सिरमौर क्षेत्र

सिंगा वजीर

१८६६ ई० से पूर्व सिरमौर रियासत १२ बजीरियों (परगनों) में बंटी हुई थीं। प्रत्येक वजीरी का अधिकारी एक वजीर होता था जिसका कार्य कर एकत्रित करना तथा अपराधियों की सूची राजा को देना होता था। ये वजीर क्रूर, ऐश्वर्यपरस्त तथा भ्रष्टाचारी होते थे उनमें से गिरीपार के क्षेत्र लादी कांगड़ा का वजीर सिंगा था जिसके अत्याचारों व भ्रष्टाचार के खिलाफ इस क्षेत्र के २७ भोजों (ग्राम समूह) के मुखियों ने ग्राम टीटीयाणे में एक बैठक की और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा करने का निर्णय लिया जिसका श्रीगणेश ग्राम कोटी बौंच से हुआ जहां अत्याचारी बजीर को उचित सबक सिखाया गया। बैठक में जेल, मेहल और लादी कांगड़ा परगनों के ग्राम मुखिया शामिल हुए केवल कठवार का मुखिया नहीं आया जिसके स्थान पर पत्थर रख कर उसे अपमानित किया गया। यह हारुल (युद्ध गीत,) जनता की इच्छा की अत्याचार पर विजय है।

संग्रहण व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

सिंगा बोज़ीरा

बानी लोई सिंगाए शिरो दी पागो,
दौउरे खे चला बोज़ीरा, साइवो शा लागो ।
कानो पाग्रो सिंगा रोटी रो शिको,
दियोली लुधदे, बाड़े बकरे छींको ।
छींक बाचों किकरु-भाट, साचें से कोरे,
जे जाइला सिगीए, ग्राए ने बोटे घोरे ।
चुपा रो भाटिया, दिए ने सिंगा दा ताव,
फुकी देउवा, जाणे ने तू मेरा नाव ।
तेरी रोई भाटिया, ग्राखी झबरी जाई,
छीक ग्रोसो पूर्वो खे, हांड भूई न जाई ।
तिनी थोई सिगरोउवे खुमली पाटी,
उबा ग्रावला सिंगा बोजीर, उदा मारणा काटी ।
सिंगा चला बोजीरों, कीरी लबड़ी केरो,
शिगड़ाट लिग्रावो बकरा, बोजीरों रा बोरों ।
रास्तों रे ग्रोजोउ होले डोराड़ो,
घोर छोड़े सिगा खे, ग्रपी थावे उराड़ो ।
जांदा लागा बोदा, सिंगा कोटी खे जाई,
ग्राए मेरिया सिंगायां तुए थोवे धुनिणो खाई ।
फुली कोरी फुलटी डालटी दाई,
बेगारी रुए सिंगा क बौंचो खे ग्राई ।
फुली कोरी फुलटू, डाली फुलों री कोउ,
शुना घोर डेरे खे देणो, हरशु री बोंहू ।
नोरगू सियाणा, रोए ने रीला,
बकरे सिता चेईं बोजीरों खे ठीला ।
नोरगू लाग्रो बातुड़ी, घोड़ो मुनो दे घाटो,
एश्शा लाणा ठीला ग्राज़ो, देऊ गुलटी जाटों ।

ढाई वोइशां बोजीरा, शुट लोई तुमाखु री खाई,
खोटे रुए तेरे करमो, भीख रोई बाइरी जाई।
नोइयां रोम्रों सिगटोंउ, शीस घोरो दे जुली,
बेटा लुम्रा तेरा बोजीरा, बाउटी शा तुली।
बारिये थोवे तुए सिंगाश्रा वारिए माणशो भूली,
बाड़े जुगा एजा छेलटा, मुली देईदा बुली।
ढोली रोई सिंगा तेरे टाटी री केरो,
श्राखी भोरी श्राशुए, देश्रो ला लेरों।
श्राई बेने बोजीरो, इदे शी उब्री घाड़ी,
होलो का तेरा बोइलो, बेटा देणा मेरा छाड़ी।
धारों कोटी होली चिकनी माटी,
कोटी पाई सिगरोउवे, छोथड़ें री टाटी।
चुना लु लोश्रा छेटे रो सिंगा रे जाती उदा डाकी,
खाए सिंगीया चुनालुटा, ऐजी श्रोसो तेरी फाकी।
खोड़ी धारो चन्दपुरा, होला चिकना माटा,
ठारी बुइचो, सिंगारा, बकरा शा काटा।

●

सिंगा वज़ीर

सिंगा वजीर तैयार होने लगा, सिर पर पगड़ी बांधने लगा,
अपने वजीरी के दौरे पर राजा सा लगता था ।
सिंगा ने कंधे पर रोटी का शीका (थैला) उठाया,
किन्तु द्वार लांघते ही, बकरे की छींक ने झिझकाया ।
सांचे की गणना से, किकर भाट ने छींक की व्याख्या की,
अशुभ बताया छींक को, मृत्यु के संशय से उसे डराया ।
चुप रह भाट, सिंगा को क्रोधित न कर,
जो अगुंली उठेगी सिंगा पर, उसका सर्वस्व जला दूंगा ।
तेरी तो, भाट, आंखे कमजोर हो गई हैं,
यह छींक पूर्व की ओर से आई. यात्रा अशुभ नहीं होगी ।
सिगटोउ ने योजना बना रखी थी,
अगर सिंगा वजीर इधर आया तो उसे समाप्त करना है ।
सिंगा वजीर अकड़ कर चलता है ,
लम्बे सिगों वाला बकरा काटो, यह सिंगा का भोज है ।
रियासत के ओजोउ (राजपूत) बड़े ही डरपोक हैं,
सिंगा के लिए घर छोड़ कर स्वयं गुफाओं में चले गए ।
चलते-चलते सिंगा कोटी (गांव) में पहुंचा,
अच्छा हुआ तू आ गया, तूने हमारा खून चूसा है ।
दाई की टहनी पर फूल खिले हैं,
सिंगा के बेगारी बौच (गांव) में पहुंच गये ।
काहू की डाली पर फूल खिले हैं,
अकेला घर विश्राम के लिए चाहिए, साथ हरशू की बहू ।
हे बूढ़े नरगू तुम सुस्त मत रहो,
वजीर (सिंगा) के खाने हेतु बकरा व अन्य खाद्य सामग्री भी चाहिए ।
नरगू बातें करते करते उधेड़ बुन में पड़ जाता है,
आज तो सादा भोजन करें कल मन पसन्द का मांस परोसा जायेगा ।

दीवार के सहारे बैठ, वजीर ने तम्बाखू का कश का लगाया,
पर तेरे भाग्य फूट गए हैं, तू रास्ता भटक गया है ।
कोटी के युवक मकान के भीतर उमड़ पड़े,
तेरा बेटा बाजू से उठाकर तोल रहें हैं ।
सिगा तूने युगों-युगों से हमारा शोषण किया,
तेरा बेटा तो बकरे की तरह है, इसका मोल तो बता ।
सिगा के चहेरे पर हवाइयां उड़ने लगी,
आंख भर आई, उच्च स्वर से रोने लगा ।
सिगा तुझ पर इससे अधिक विपत्ति कभी नहीं आई,
मैं तुम्हारे हल का बैल बनूंगा, अगर तुम मेरे बेटे को छोड़ दो ।
लेकिन शत्रु पर दया का समय नहीं था,
सिगा के पुत्र की गर्दन धड़ से अलग कर दी गई ।
जबरदस्ती उसका मास, सिगा के मूंह में ठूसा गया,
ले इसका कलेजा, गिला न रहे कि मांस नहीं खिलाया ।
चन्दपुर की खड़ी धार (पहाड़ी) जहां की मिट्टी चिकनी है,
(वहां) सिगा को बकरे की तरह काटा ।

नोत राम नेगी

भारतीय तथा सिरमौर क्षेत्र की महत्वपूर्ण घटना जिसे इतिहासकारों ने नज़र अन्दाज़ किया है। यह घटना गुलाम कादिर रोहिता की सिरमौर की भूमि पर करारी हार हैं। दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम को अन्धा करने व भारत के बड़े भूभाग पर लूटमार करने वाले रोहिला का घमण्ड इस पावन धरती के लाल ने चूर-चूर कर दिया। सिरमौर के कटासन में जहां रोहिला की हार हुई, विजय की यादगार में कटासन देवी का मन्दिर बना दिया गया किन्तु उस वीर को भुला दिया जिसके सिर पर विजय-सेहरा बंधना चाहिए था, जबकि राजा व सभी राज कर्मचारी कुछ करने में असमर्थ थे। नोतराम नेगी स्वयं तो जमना नदी पार करते समय धोखे से मारा गया किन्तु शत्रु को सिरमौर की भूमि से बाहर कर दिया।

संग्रहण व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

नोत राम नेगी

दूणी लोई पांवटे री मुगीले खाई,
बाई उदे पाई लोई मोहिशी दे गाई ।
नागी तोरवार राजे मुजीरे पाई,
तिश्रा भी कुए चाकरो दियो मीयानो भोराई ।
बादे तिनी चाकरो दी धुत बेने श्राई,
देखी तोरवार थोई तिनिए टाटी नाई ।
तेदी बाणा भूपसिगा राणिए भाई,
मेरी जाणो काजिए मोलोते खे जाई ।
छोकरा नोती राम शुणा, वीरो रो शिरो,
सी नी सोको मुगलो ली लिरो ।
भूखा होइला नोगिश्रा, रोटी नोइणी खाए,
मोलोते शा छिटका देशो राती जाणो नोइणी श्राए ।
तेने भूपसिगे ढिल बेने पाई,
घोड़े दी लोई काठी चोड़ाई ।
नोइणी छिटका रोश्रा मोलोते खे जाई,
नेगी थेई नोत राम खे रामा रूमीणी शाई ।
तां थोश्रा नेगिश्रा शीघड़ा नोइणी बुलाई,
तेने नेगिए ढील वेने पाई, शिगा लागा जमने गाई जाई ।
नाव रे मेरे नावरिश्रा नाव देणी लाई,
इयों देणा घोड़िए जमना पाडा कोराई ।
जमना शा छुटका नोतराम राजे श्रागे जाई
भेट राजे वि मुरो पाई, जयदेव शाई ।
बुलो राजा साइबा मुदी का लागी राई,
किश्रो थोश्रा राई दा, मु नोइणी बुलाई ?

दुणी लोउ पाउंटे री मुगीले खाई,
बाई उदी पाई लोई मोइशी दे गाईं।

बातों लाग्रो राजा, नेगी ने शुणो,
नेगीणो मेरे नेगटू, घाचला कूणो।

केइखे ढोली नोगिग्रा तेरे टाटी री केरो,
नेगीणो खाले नेगटू भुंडारो रा सेरो।

जु काटी लियाइला मुगलो री शिरी,
कालसी देऊं तोसलो दी बैठी बोज़ीरी।

जे लियाइला नेगिग्रा मुगलो रा ठाना,
खेड़ो देऊ सीया रो, सुमराड़ी रा लाणा।

दुणी खेली पाउंटे, नेगिग्रा सूरमे री मारो,
चाटे लाए टाटी रे, लोऊ रे धारों।

एजा ग्राया मुगलिया नोतरामो रा शोटाका,
भूटी गिग्रा दुणो, एजा ग्राया तिंदे रा साटा।

फोउंजो थोई रोहिले रे भागणी खाई,
हेट मेरा नेगिग्रा हेट तेरी माई।

काटी लुए बोइरी जिग्रों दाचीए सागो,
बोइरी पोड़ा भितरी, जिग्रां बकरी माजे बोरागो।

नोत राम नेगी

पावंटे की दून घाटी में मुसलमान विनाश कर रहे हैं,
बावड़ियों में गाये व भैंसों को काट कर डाल रहे हैं।

राजा ने राज कर्मचारियों को तलवार उठाकर चुनौती स्वीकार के लिए कहा,
किन्तु सभी दरबारियों की गर्दनें शर्म से झुक गयी।

इसलिए रानी ने भूप सिंह को धर्म भाई बनाया,
उसे शीघ्र मलोते जाकर नोतराम को बुलाने भेजा।

नोतराम वीरता के लिए काफी प्रसिद्ध है,
वही दून घाटी की रक्षा कर सकता है।

अगर तू भूखा होगा तो भोजन नाहन आकर करना।
पर दिन रात एक करके शीघ्र नाहन पहुंचो।

भूपसिंह ने तनिक भी विलम्ब नहीं किया,
बिना देर किए घोड़े पर काठी चढ़ाई।

नाहन से चला मलोते जाकर रुका,
नोतराम को नमस्ते की और कहने लगा।

नोतराम तुम्हें शीघ्र नाहन बुलाया है,
नेगी ने बिलम्ब नहीं किया, घोड़े पर सवार होकर यमुना तट पहुंचा।

नाविक तुम शीघ्रता से नाव चलाओ,
व मुझे जल्दी से नदी पार करवा दो।

यमुना से सीधा चलकर नेगी नाहन पहुंचा,
राजा को मोहर भेंट की और जयदेव कहा।
महाराज! मुझे से क्या अपराध हुआ,
मुझे किस अपराध हेतु दरबार में उपस्थित होने को कहा गया ?

मुसलमान पांवटे की दून का विनाश कर रहे हैं,

बावड़ियों में गाये भैंसे डाल रहे हैं।

राजा बात कर रहा है किन्तु नेगी सोच रहा है,
मेरी पत्नी और बच्चों को कौन पालेगा।

नेगी तुझे निराश नहीं होना चाहिए,
तेरी नेगण और नेगटू सरकारी खर्च पर पलेंगे।

अगर तू मुसलमान सरदार का सिर काटेगा,
तुझे कालसी तहसील की वजीरी दूंगा।
अगर तू मुसलमान की टुकड़ी का मुखिया मारेगा,
तो तुझे सीया व सुमराड़ी की जागीरें दी जायेंगी।

पांवटे की दून में नेगी ने वीरता से युद्ध लड़ा,
सिर कट कर ढेर लग गये, खून की नदियां बहने लगीं।

मुसलमानों तुम्हें नोतराम नेगी की वीरता का पता नहीं,
जो तुमने दून को अपवित्र किया यह उसका बदला है।

रोहिले की सेना भागने लगी,
नेगी तू धन्य है तेरी माता धन्य है।

शत्रु को तूने गाजर मूली की तरह काटा,
शत्रु के बीच तू इस तरह घुसा जैसे बकरियों के बीच बाघ।

कौरव पाण्डव युद्ध

सिरमौरी पहाड़ी क्षेत्र में जलसों व त्यौहारों के समय में मनुष्य अपनी खुशियां मनाने के लिए ऐसे गीत अक्सर गाते हैं। क्षेत्रीय जलसों में सारे लोग इकट्ठे होकर अपने मनोरन्जन हेतु एक दूसरे से मिलकर नाचते गाते हैं। इस गीत के केवल दो ही पद्यांश है जिनको दो–दो बार नृत्य के समय गाया जाता है।

लाम्बीड़ा धोणुको घूटीड़ा कूमाणो,
हूणों दे मामा नारीणां पांडु कौउरू रा नाह्णो।

जिस समय महाभारत का युद्ध छिड़ा हुआ था ये पंक्तियां उस समय की याद दिलाती है। भगवान श्री कृष्ण को उग्रसेन महाराज कहते हैं कि हे नारायण कौरवों और पांडवों का युद्ध होने दो।

राजी रोउगे प्रजा कोरो आपणी तानो,
राम ओसो लोखणो एकी थली रा खाणो।

जब उग्रसेन श्री कृष्ण भगवान से इस इस प्रकार की बातें कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि अगर पाण्डव कुशलता पूर्वक युद्ध जीत लेते हैं तो प्रजा उनकी सारी बातें मान लेगी। जबकि कौरव और पांडव एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं जैसे कि राम और लक्षमण।

●

अंग्रेज साहब

रेणुका तहसील (सिरमौर) के अन्तिम कौने में नौहरा नामक गांव है वहां पर अंग्रेज़ बादशाही के समय में जब कोई बड़ा अधिकारी आता था तो उस समय पहाड़ी क्षेत्र के ये भोले-भाले लोग उनके स्वागत के लिए टूटी-फूटी भाषा में इन लोक गीतों का प्रयोग करके उनका स्वागत करते थे। यह उस समय का गीत है जब अंग्रेज साहब उनके गांव में प्रवेश कर रहा था।

थूड़ा रे जाणा थीया भुलाणे के दिन, रोई रूवा थूडा रे

आपने भुलाणा नाम के गांव में पहुंचना था पर अब दिन थोड़ा रह गया है।

भेली रे उंडी दे विजया, मेरी गुड़ो री भेली रे

विजय नाम के नौजवान से गुड़ की भेली मांगते हैं जिसे खाते-खाते कुछ रास्ता तय हो जाएगा।

जाणा थिया भुलाणे के, मेरे हाडी चा तेली रे

अंग्रेज के साथ जो उसका नौकर व तेली आ रहा था वह तेली कहीं पीछे रह गया। अंग्रेज कहता है कि उसने भुलाणा गांव को जाना था परन्तु उसका तेली गुम हो गया।

रेलूवा वाडोइयां लाई दे सूतो दा आरा रे

वह साहब फिर उसी गांव के रेलुवा नाम के बढ़ई को वही रहने को कहता है तथा बोलता है कि हे रेलु बढ़ई तुम अपने औजारों को तैयार रखो, क्योंकि कल हमारे साथ चलना होगा।

साहिबा बूलो अंग्रेजो मेरा तेली कूणीए मारा रे

अंग्रेज साहब कहता है—मेरा तेली का किसने कत्ल किया है ? मेरे तेली को कहीं मार दिया।

मेंहदी

यह गीत मेंहदीं नाम लड़की तथा उसके प्रेमी का है । हिमाचल प्रदेश के ज़िला सिरमौर के पहाड़ी क्षेत्र में त्यौहारों व विवाह इत्यादि में अपने मन को प्रसन्न करने के लिए पहाड़ी गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में प्रेम-रस की प्रधानता होती है।

मोहींदीए रो होरे खाड़ो रे गाड़े, तुएं चोके मारूके।

मेंहदी नाम की लड़की अपने प्रेमी से कहती है कि हरे घास का बोझ अत्याधिक भारी हो जाता है।

मोहींदीए रो बीवलो शे राडे, तेरी जाणो आरखिए।

मेंहदी जिस बियूल प्रकार के पेड़ में छेद डाला जाता है उसी प्रकार तेरी आंखों ने भी मुझ छेद डाला है।

मोहींदीए रो शुके काटलो दे छाड़े धुका तेरा जीयो दा।

मेंहदी का प्रेमी मेंहदी से कहता है--आपने मुझे सूखी नदी में छोड़ दिया है तथा आपके दिल में मेरे प्रति छल-कपट है।

मोहींदीए रे उदी बिन्दरा वूणो, उबी माता रेणका।

नीचे बीहड़ तथा अत्यधिक घना जंगल है और ऊपर माता रेणुका

मोहींदीए रो ता लागना गूणो म्हारे चूडी लोकड़े।

मेंहदी यदि तेरी भलाई हो जाती है तो बेशक तुम चाहे मेरा त्याग कर दो।

मोहींदीए रो बाजो गोइरा वाणा, बाजो जांदी बाजणो।

विशेष उत्सवों में विभिन्न बाजे तथा नगारे इत्यादि बजने से लड़के-लड़कियों का आपस में घनिष्ठ प्रेम हो जाता है।

मोहींदीए से कोरी मूनो रा जाणा, उमो देणा मोरीणी ।

मेंहदी का प्रेमी कहता है कि जो तेरे दिल में आए वो कर ले चाहे मुझे कितनी भी तकलीफ हो ।

मोहींदीए रो खाई कुकड़ी कागे,धान खाया चीडीए ।

मेंहदी की मक्की की फसल कौओं ने खा ली है और धान चिड़ियों ने।

मोहींदीए रो बोंचे आपणे भागे, तुए थापे मारणे ।

मेंहदी तूने तो मुझे मारने की सोच रखी थी परन्तु परमात्मा की कृपा से मैं बच गया हूं ।

मोहींदीए रों आई रे पारशी ताके, कान कोरी सूणवो ।

मेंहदी तेरे प्रेमी का सन्देश आया हुआ इसे कान कर सुन ले ।

मोहींदीए रे तेरे नाको दी तीली,खोरी सोजी बोणिया ।

मेंहदी तेरे नाक में तीली बहुत सजी हुई है ।

मोहींदीए रो बाते आदमी मिली,उमो तेरा आसरा ।

मेंहदी का प्रेमी मेंहही से प्रेम भरे शब्दों में कहता है—हे मन को अच्छी लगते वाली मेंहदी भले ही तू मुझे आधे रास्ते में मिली फिर भी मुझे तुम्हारा बहुत सहारा है तथा तुम्हारे प्रति अत्याधिक प्रम है ।

जगता

यह गीत किसी गांव के जगता नामक व्यक्ति जो कि खच्चरें लादने का काम करता है, उससे सम्बन्धित है। रास्ते में जाते समय उसे चोर मिलते हैं जिनसे वह अपनी जान बख्शने की प्रार्थना करता है। गीत इस प्रकार से हैं :—

लाईने डिंगीरो वीची नीता जोगता रे

खच्चर पालन करने वाला जगता नामक व्यक्ति जब रास्ते में से गुजर रहा था तो गांव से थोड़ी दूर आगे जाकर उसे चोर मिल जाते है और कहते हैं कि पत्थर में लाली लगानी बेकार है अर्थात तेरी जिन्दगी बेकार हो जाएगी क्योंकि इस समय तेरे पास बहुत पैसा है और हम तुम्हें मार देंगे।

देशी रु आव कुमारों साफा गोलो दा रों पींची नीता जोंगता रे

जिस तरह मैदानी क्षेत्रों से तूफान पहाड़ों की तरफ बढ़ता हुआ आता है उसी प्रकार देश में से आए हुए चोर उस नीता जगता नामक खच्चरवान व्यक्ति के गले में कपड़ा बांध देते हैं।

शिमला जाणी बुईजारो दी कीए टीपी, लोई ली रूड़ी नीता जोगता रे

हे जगता शिमला बाज़ार में रोड़ी की ढुलाई करनी है ।

नौ शौ देऊंगा रूपिया जै मेरी जिन्दगी,छूड़े नीता जोगता रे

नीता जोगता (खच्चरवान व्यक्ति) उन चोरों से कहता है यदि आप मुझे छोड़ दोगे तो मैं आपको नौ सौ रुपये दूंगा ।

नौ सौ देऊंगा रूपिया उकी खेचर री जूड़ी नीता जोगता रे ।

खच्चरवान चोरों से फिर प्रार्थना करता है कि अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें नौ सौ रुपयों के अतिरिक्त खच्चरों की एक जोड़ी भी दूंगा ।

संग्रहण व अनुवाद
बालक राम ज

●

चरणु

लोकगीत हिमाचल प्रदेश के भोले-भाले लोगों के लोक जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। यहां के लोक-गीतों में यहां की धरती, पहाड़, जंगल, नदी, नाले, खेत, खलियान गाते नज़र आते हैं। यहां के लोग शान्ति प्रिय हैं परन्तु इसके साथ ही जब कभी भी इनके शान्तिमय जीवन को ललकारा गया है, इन लोगों ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना चुनौती को स्वीकारा है। प्रस्तुत गीत शिमला ज़िला की रामपुर तहसील के सुंगरी क्षेत्र से सम्बधित है। इस क्षेत्र में लोग बाघ द्वारा दिन प्रतिदिन किये गये पशु तथा मानव संहार से काफी तंग थे। एक दिन बाघ ने चरणु नामक बहादुर व्यक्ति की भेड़ तथा मेमनों को अपना ग्रास बनाया जिस पर चरणु को अत्यन्त क्रोध आया और वह बदला लेने के लिए बाघ की खोज में निकल गया। बाघ तथा चरणु के मध्य घोर युद्ध हुआ और अन्त में चरणु ने मलयुद्ध में बाघ को मौत के घाट उतार दिया :—

मुलेमा लाईया न केरेमा लाए
मार बी आमा चरणु रो हेड़ुला गाए
भिजिआ चाणा माऊड़ीआ लऊटी घीआ
भूखुओ बेटो चरणुआ हेड़ी रो जीआ

दुधा-मदा खीरी खण्डा पाका रसोए
भीतरा आशा चरणुआ हाथड़ु धोए
आशिओ गो पंउचो डांम्फीआ बोठो
आणकले छाजरे ना पाणी रो लोटो
सुंगरी बागी खदराला साबा रा तांबू
दूधा आणा कढ़णा खे चरणु रा लाम्बू
आपु गो बेटा चरणुआ घरा खे आए
साबा सपाए देणा सुंगरी सभाए
देवा री धारा चरणु खे टयालिया लो कुणा
बोटी बराल्टीआ तंगा दे शूणा
बोटे हले चरणु रे बड़े कजाणा
चवला चाणा माशा रो न चरणु खे खाणा
भेरे खाए मोअले बांदरे जटाए
तेओ री तांई चरणु दे रोषा रे आए
भेरे खाए मोअले गाबू रे जोड़े
सेजा रोषा चरणुआ राफला शोड़े
ओरू दे मेरो दौस्ताना दारू रो पीपो
सिआ संगा लड़नो कमाई दो लिखो
आगुआ तंगा चरणुआ भरे बन्दूका
साथी चाला मईरामा परमासुखा
गाचिआ माले डांगरो चन्दरा झीका
काना गाशे राफला न सापणा सीका
घणा लागे जांगला दे नांदे बरूरा
साथी संगी भाईयो मेरा नेड़ा के दूरा
देवारी धारा चरणुआ देएड़ो नाओं
तू थो सूई सिऊणी रो खशणी रो हाओं
लड़िओ डेईला भिड़िओ नई का भांओ
छिम्बरू मेरो कुकरा न धर्मा रो भाए
सिआ री आशे खाबा दे मेरे दाईणो बाए
आपुगो बेटा चरणुआ घरा खे आए
सिआ रे देणे हिआ दे गोले चलाए

हम चरणु का गीत गाने जा रहे हैं
मां ने प्यार से.घी तथा लौटी (आटा घोलकर बनाई गई रोटी) बनाई
मेरे बेटे को भूख लगी है, लगे भी क्यों नहीं आखिर बच्चा ही है
बेटा तुम हाथ धोकर अन्दर आ जाओ
दूध तथा शहद युक्त खीर का स्वादिष्ट भोजन बना है
चरणु आते ही डाम्फी स्थान विशेष पर बैठ गया
उसे प्यार से ठण्डे पानी का लोटा दिया गया
सुंगरी, बागी तथा खदराला में अंग्रेज़ों ने अपने तम्बू लगा दिये
दूध काढ़ने के लिए चरणु के बड़े-बड़े बर्तन मंगवाये गये
चरणु स्वयं घर पर आ गया
साहब तथा सिपाहियों को सुंगरी भेज दिया
देवी के टीले पर से चरणु को आवाज किसने लगाई है
बराल वाली घरवाली ने यह आवाज़ अपने बरामदे में सुनी
चरणु की पत्नी बिल्कुल अनजान है
उसने चावल तथा माश मिलाकर चरणु को खाना बनाया
सलेटी रंग की भेड़ तथा भूरे रंग का मेमना खो गया
इसी बात पर चरणु को क्रोध आ गया
मोले रंग की भेड़ तथा तथा मेमनों की जोड़ी खो गई
इसी क्रोध में चरणु ने बन्दूक खेंच ली
उसने अपना दस्ताना तथा बारूद की पीपी मंगवाई
मेरे भाग्य में शेर के साथ लड़ना लिखा है
चरणु ने आगे वाले बरामदे में बन्दूक मरी
उसके साथ पईराम तथा परमसुख भी चले
कमर में बंधा फरसा चांद की भांति चमचमा रहा था
कन्धे पर रखी बन्दूक सांपिन सी लग रही थी
घने जंगल में धीमी- धीमी वर्षा होने लगी
हे मेरे साथिओ ! तुम पास हो या दूर
देवा की धार पर पहुंचते ही चरणु ने चुनौती दी

यदि तू शेरनी का बच्चा है तो मैं भी खशणी का पुत्र हूं
लड़ते-लड़ते मैं तुझे नदी तक ले जाऊंगा
हे छिम्ब्रू कुत्ते तुम मेरे धर्म के भाई हो
शेर के मुंह में मेरी बाजू आ गई है
अन्त में चरणु ने शेर की छाती में गोली दाग दी और
उसे मौत के घाट उतारकर घर पहुंच गया

संग्रहण व अनुवाद
ध्यान सिंह भागटा

मास्ती (महासती) कुज़ी

देश के अन्य भागों की भांति हिमाचल प्रदेश में भी सती प्रथा का प्रचलन रहा है। इसी परम्परा के अन्तर्गत शिमला जिला के जुब्बल क्षेत्र के 'ठाणा' नामक गांव में 'कुजी' नाम की महिला ने अपने पति के साथ जिन्दा जलकर पतिव्रता का परिचय दिया है। इस क्षेत्र में आज भी 'मास्ती कुजी' का नाम आदर सम्मान से लिया जाता है और प्रस्तुत लोक गीत भी अत्याधिक प्रचलित है :

ताला रीगे माच्छले न गणे शीणे
काला बारा अम्बिआ न पाशड़े दीणे
चुली री पठांए मेरे सौड़ छांओ
मीठो आहो ठणको मुं नान्दो शिआओ
छोंटिआ कुजिआ तू नेडड़े आए
कौंला मुन्दे हाथड़ुआ मशणों लाए
लाआ कुजे मशणो न लागा ले रुन्दे
औरे कमांए मेरे कियणे हुन्दे
जोटी एकी आदमी पजारली जाओ
देवा तेस कुला रा न उबे छराओ
ओतरी देओ कुला रो न गाड़ा लो रोशा
मेरा नांई अम्बि खे न दाई न दोशा
ओतरो देओ कुला रा न लागा लो रुन्दो
भाता रो चावला न अम्बे न हून्दो
देवा देआ कुला रा न आखरा चोड़े
भाटा करा माऊला न ओरकां लोड़े

जोटिग्रा एकी ग्रादमी भटेवड़ी जाग्रो
भाटा तेस शंकरा न ग्रोरु बदाग्रो
ग्राशा भाटा शंकरा न लाम्बिग्रा लाए
मातेग्रा ग्रम्बिग्रा तू बोला लो काए
खोला भाटा शंकरेग्रा चुड़कु सांचा
मरणा रा जीवणा रा ग्राखरा बांचा
एकी ग्राशा चुड़कुग्रा खड़िग्रा खड़ो
ग्राशा दूजा चुड़कुग्रा मास्ते मड़ो
बेटे गोए खण्डिग्रा रे खड़िग्रारए
भाटा तांऊ शंकरा रे पतरे दए
धरेमा देग्रा कुजिग्रा न दाईणा हाथा
जबे ग्रम्बे मरालो तो जलू ले साथा
छोंटिग्रा कुजिग्रा बू शूदे न छला
ग्रागी गाशे पाशड़े तू लाए न बला
छोंटिग्रा कुजिग्रा न्यारू ला तांऊ
जेबा मड़ा लांगा तेबा मानू न हांऊ
जलना नाई मरना खे कासी रो डरा
जिणो तेरा सूंचिग्रा लो तियणों करा
जौंग्रा पापी बोरी रे ग्राशे टियाले
दाया भाया गड़ा रा न खाग्रो बियाले
गड़ा दिणे नगरा दे फूके टियाले
डाकी, बाड़ी सोई ग्राणो जोखटी जाले
गड़ा जाणी नगरा दे हुए नजाणा
बोठी बियाली डूबा ग्रम्बि रा प्राणा
जोटी एकी ग्रादमी न मान्दला जाग्रो
डाकी बाड़ी सोई तुम्हा ग्रोरू बलाग्रो
डाकिया कशे मांऊग्रा नगारा रे जोटे
भीतरा करा खबरा न सचे के खोटे
सचे खोटे बाड़िग्रा न पूछि का तेरा
मड़ा साथी मास्ते न जलणे मेरा
कुणता ल्हारा शौरा मड़ाईका कोले
पारा भलाड़ी खे थे छाड़ने जोले
कोल्टु ग्राशा मागमते लाम्बिग्रा लाए
मातेग्रा ग्रम्बिग्रा न बोला ला काए

कोल्टुआ भागमते फूको न बोला
सौजा बोला सूरती का घरा रा ओला
कोल्टु देआ भागमते फूके टियाले
जलाले भला हुआ धियाईणा त्हारे
माची भलाड़ू आशा चूटा ली घड़ी
दारू रा आणा बुगचा न केवला री घड़ी
माची भलाड़ू आशा शरू रे छाण्डा
बादा ठणायका री भरवी पाण्डा
माची भलाड़ू पूजा खड़िआ रआ
भुआं साथी जींवदे तू कासरे दआ
हाक भी भूरो देआ लो न झड़ा नी घड़ी
खूंदा री खुन्दटी न ठाणा का जली
सौजा लेरा सुरती न जुगा रा ओला
ठाठो के चाइतो तू आमू का बोला
ठाठो न चाइतो हांऊ सुखा रे जलू
माची भलाड़ू रे न उजले करू
सौजो लेरा सूरती न जुगा री बाई
चाला भलाड़ी खे तू दूआ ले गाई
गाई मेरा बाश्टु रा हुआ न भागा
तेरे बोला बोटे न शांकिणा डागा
गाबी तेरा बाश्टू रा मुंएं का जेड़ा
अम्बि साथी जलू ले न पशा रो पेड़ो
देवरा बोलू रामचन्दा सूंची का तेरा
मड़ा साथे मास्ते न जलने मेरा
रेशमा कीमू खापा रा न गाड़ा ला रेजा
बोल बी मेरी भावजा तू बामा ले केजा
एजो न चोगो बामणों एजो रआ लो तांखे
चोगो सेजो बामू जिन्दे सूना रे माखे
जूगा गाशे बामवेगे चड़के राणे
ठाणा से भूरा ठड़ा न बाबी रो पाणे
जुगा गाशे टान्डुएगे चड़के कूजे
हले मेरी लौकी रे जला ले दूजे
नागा री लाए ढोली दे न कुजिआ लाता
हौली मेरी लौकी री जलिओ साथा

निम्रो मेरी जुगटू न थापला पारा
आण्डा पुजारली रा दिन्दा झलारा
मेरो निम्रो जुगटू कलोटी री धारा
डाढे धीशा घुणसो न बादे भलाड़ा
निम्रों मेरो जुगटु न खोड़ा री छांई
देखो मेरा माईचा न आशा की नांई
ओरू बोदो शरेश्रा थगे रा बापा
केछे-केछे लाई कूंगू कथरी रा छापा
एक बी छापो लाणो न नागा री ढोली
दूजो छापो लाणों बनाड़ा री खोली
आंगतु बाड़ी जेगला न खड़िआ ऊजा
कसके चाणी पलगे न कसखे जूगां
अम्बी खे चाणो पलगे न कूजी खे जूगा
इणो चाणो जुगटू न आफी लो ह्राण्डा
फेरा दिया करूं चोऊ घूरा दे घाण्डा
इणी धाणी बाड़िआ बड़ेटु खे तेरा
काठे लाए आगला खूबे हिया दे मेरा
कुजीरा लिआ जुगटु दे किम्बली काली
अम्बि री लिया पलगी दे मुशा बराली
डाल बी करा देवठी का ठोड़ी का सुए
गड़ा री बादी नेगणी का रामा-रामा हुए
जुगा गाशे टाण्डुएगे चढ़के राणे
ठाणा रे झूरा ठड़ा न वाबी रो पाणे
बिवले चाणे पलगे न सांगड़े बाटा।
डाकी रा ढोली रा न लागा ला साटा
सोलह लाए साणी आ कुजे खदारे
पांचा लाओ पाण्डुआ न अम्बे भडारे
ओड़े का दूस मासा डेएगा घरा
आग न कोई लांदो फिरन्गी रा डरा
जेती तुआ शेवरेआ घरा खी भागा
जेती हौला देवरा न लाइओ आगा
सास बी रींगो सरगा मास भोगा ले आगा
हाड़ा रां लागा जुड़कू न माटी रा भागा

हिन्दी अनुवाद

तालाब में मछली तथा आकाश में पपीहा घूमने लगा
इस प्रकार की अशुभ घड़ी में अम्बि बीमार हुआ
मुझे अत्यधिक ठण्ड लग रही है और बुखार भी आ रहा है
चुल्हे के निकट मुझे बिस्तर बिछा दो
प्रिय कुजी तुम मेरे निकट आ जाओ
अपने नर्म हाथों से मेरी मालिश करो
कुजी मालिश करते-करते रोने लगी
न जाने मेरे भाग्य में क्या लिखा है
दो आदमी पुजारली गांव जाओ तथा
अपने कुल-देवता से पूछ-ताछ करो
कुल-देवता गुस्से में आकर बोला
मेरी ओर से अम्बि को किसी प्रकार का दोष नहीं है
कुल देवता बोलते-बोलते रोने लगा
भात को चावलों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता
अर्थात् अम्बि का बचपाना असम्भव है
कुल-देवता ने स्पष्ट रूप से कह दिया वह कुछ नहीं कर सकता
तुम अन्य किसी पंडित आदि से उपाय करवाओ
एक जोड़ी आदमी पंडित के गांव भेजो
शंकर नाम के प्रसिद्ध पंडित को बुला लाओ
शंकर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ पहुंच गया
अम्बि से पूछा कि उसके योग्य क्या सेवा है
शंकर ने अपनी विद्या की पोथी खोल ली
वह जीवन तथा मृत्यु के सम्बन्ध में निर्णय करने लगा
एक प्रश्न के उत्तर में कुछ गड़बड़ नजर आई
दूसरा प्रश्न लगाने पर मौत तथा जिन्दा जलने का योग सामने आया
खण्डिया की बेटी कुजी यह सुनकर हैरान रह गई
हे शंकर तुम्हारी पोथी को आग लग जाए
कुजी ने अपने दायें हाथ से अम्बि को धर्म दिया
यदि तुम्हें कुछ हो गया तो मैं साथ जलूंगी
प्रिय कुजी तुम दिल रखने के लिए व्यर्थ छल न करो
जलती आग पर तुम अपना शरीर नहीं रख पाओगी
मैं तुम्हें परामर्श देता हूं कि तुम यह विचार छोड दो
यदि तुम मेरे मृत शरीर को लांघ लोगी तो फिर तुम्हें जलना ही पड़ेगा

वैसे जलने और मरने में किसी का डर नहीं है
तुम्हें जो उचित लगता है तुम वही करो
आस-पड़ोस के सभी लोगों को कहा गया कि जल्दी से रात्रि का भोजन कर ले
क्रूर यमराज का अम्बि को बुलावा आ गया है
पूरे गांव में खुली आवाज दी गई
बाजा बजाने वाले, बढ़ई तथा दर्जी को जोखटी (लकड़ी विशेष जिसमें तेल रोशनी के लिए जलाया जाता है) की रोशनी में बुला लाओ
सारे गांव में यह खबर फैल गई
रात्रि के प्रथम पहर में अम्बि की मृत्यु हो गई
दो आदमी जल्दी से मान्दल जाओ
डाकी, बढ़ई तथा दर्जी को बुलाकर ले आओ
मांऊ नामक डाकी ने नगारे की जोड़ी कस ली
अम्बि के घर से मालूम करो कि यह खबर सच्ची है या झूठी
कुजी बोली ! तुम सच्च झूठ क्या पूछ रहे हो
मैं अपने पति के साथ जिन्दा जल रही हूँ
हे ससुर जी ! आपके परिवार का कोली (सेवादार) कौन है
भोलाड़ (मायके) को सूचना भेजनी है
कोली का बेटा भागमते जल्दी-जल्दी आ गया
अम्बि माते की ओर से क्या आदेश हैं
भागमते तुम यह सूचना खुले आम मत देना
मेरे भाई सौजे तथा सूरती को अकेले में सूचना देना
कोल्टु भागमते ने खुले तौर से आवाज दी
हे भोलाड़ वालो तुम्हारे गांव की लड़की जिन्दा जल रही है
भोलाड़ वाले भारी संख्या में आये
वे अपने साथ बारूद तथा केवला लाये
भोलाड़ वाले ओलों की बौछार की तरह पहुंच गये
सभी ठाने वालों के मकान उनसे भर गये
भोलाड़ वाले पहुंचते ही हैरान रह गये
तुम मृत व्यक्ति के साथ किसे जला रहे हो
भूरे ने गुस्से में आकर कहा
हमारे गांव में कई वीर महिलाएं जल चुकी है
भाई सौजा तथा सुरती जुगटु (अर्थी) के निकट जा कर रोने लगे
तुम वास्तव में जल रही हो या मजाक कर रही हो
मैं मजाक नहीं अपितु खुश होकर जल रही हूं
अपने मायके वालों का नाम रोशन करूंगी

सोजा तथा सुरती जुगटु की बाजू के पास रोकर बोले
तुम भोलाड़ चलो वहां केवल गाय दोहने का काम करना
गाय तथा बछड़े पालना मेरे भाग्य में कहां
तुम्हारी पत्नी मुझे शंकनी तथा डायन कहेगी
मुझे तुम्हारी गाय तथा बछड़ो से कोई वास्ता नहीं
मैं अपने पति के साथ जलकर सती होना चाहती हूं
हे देवर रामचन्द ! तुम किस सोच में डूबे हो
मैं अपने पति के साथ सति होने जा रही हूं
रामचन्द ने रेशम और किमखाप के थान सामने रख लिए
मेरी भाभी तुम कौन सा कपड़ा पहनना चाहोगी
मैं यह चोगा नहीं पहनुंगी यह तुम्हारे लिए रहेगा
मैं सोने की मक्खी जड़ित चोगा पहनुंगी
कुजी जुगटु पर आसीं न हो गई
यह देख कर धारो की कुल-देवी और यहां तक की बावली का पानी भी व्याकुल हो उठा
जुगटु पर चढ़कर कुजी ने घोषणा की
यदि तुम में भी मुझ सा खून होगा तो अपने पति के साथ जल कर देखना
नाग के बड़े पत्थर पर पांव रखकर कुजी ने फिर कहा
यदि तुम भी मुझ जैसा नाम कमाना हो तो अपने पति के साथ जल कर मरना
मेरा जुगटु कलोटी धार पर ले चलो
जहां से पुजारली मन्दिर पर लगा स्वर्ण कलश चमकता हुआ नजर आता है
मेरा जुगटु कलोटी धार पर ले चलो जहां से
ढाडी, घुन्सा तथा भोलाड़ के गांव नजर आते हैं
मेरा जुगटु घर की छाया में ले चलो और देखो
मेरे मायके वाले (भोलाड़ वासी) आये हैं या नहीं
ससुर जी थगी के पिता जी (गांव का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति) को बुलाकर लाओ
आपके रीति-रिवाजानुसार कहां-कहां कूंगू तथा कस्तूरी के तिलक लगाये जाते हैं
एक छापा नाग के बड़े पत्थर पर लगाया जाना है
और दूसरा देवता-बनाड़ (कुल-देवता) के मन्दिर के प्रवेश द्वार पर
आंगतु तथा जेगल बाड़ी (बढ़ई) हैरान होकर पूछने लगे
किस के लिए पालकी बनाई जाए और किसके लिए जुगटु
अम्बि के लिए पालकी और कुजी के लिए जुगटु
ऐसा सुन्दर जुगटु बनाना है जो स्वयं चले
उसमें चारों ओर चोंरू तथा चारों किनारों पर सुन्दर घन्टियां लगाओ

हे बढ़ई तुम्हारे बेटे के साथ भी यही हो जो मेरे साथ हुआ है
तुमने इतनी सख्त अर्गला लगाई है कि मेरी छाती में दर्द हो रहा है
कुजी के जुगटु के चारों ओर काली चिवटियां तथा
अम्बि की पालकी के चारों ओर चूहे तथा बिल्लियां बनाई गईं
कुजी ने देवता के मन्दिर को नमस्कार तथा कुल देवी को प्रणाम किया
गांव की सभी भद्र महिलाओं को राम-राम कहा
राणी की भांति जुगटु पर कुजी सुशोभित हो रही थी
उसे देखकर ठाणे की कुल-देवी, और बावली का पानी भी व्याकुल हो उठा
पालकी चौड़ी बनी है किन्तु रास्ता संकरा था
ढाकी तथा ढोली की भीड़ लग गई
सोलह ने कुजी को भोजन परोसने का काम दिया
पांचो पाण्डवों ने अम्बी को अपने भण्डार का अधिकारी बनाया
सूर्य अस्त हो कर अपने घर चला गया किन्तु
कोई भी व्यक्ति अंग्रेजो के डर से आग नहीं लगा रहा था
कुजी ने कहा रिश्ते में जितने भी ससुर है घर चले जाओ
जितने देवर हैं वे सभी हमारी चिता में आग लगा दें
सांस स्वर्ग चला गया और मास अग्नि को अर्पित हो गया
हड्डियों का ढेर मिट्टी के भाग्य में आया

महासती कुजी

जुब्बल क्षेत्र में मांदल नाम एक ग्राम की घटना पर आधारित एक लोकगीत कुजी नाम की एक स्त्री के अपने पति की मृत्यु पर सती होने की गाथा है। उसका पति अम्बी भेड़ बकरियों की खरीद करने कुल्लू गया था। जब वह वापस आया तो अचानक बीमार हो गया और मर गया। कुजी उसके साथ सती हो गई। यह गीत बहुत पुराना है तथा खास-खास त्यौहारों जैसे बिशू (बैशाखी) जात्तर (एक पहाड़ी मेला) और देवताओं के जगराते में गाया जाता है।

बाठणीए कुजीए छोए ल छोए,
राशीऐ ढेऊ कुल्लु री कपड़े धोए।
कुल्लु री तांव राशीए छाड़ू नैं छाड़ू,
भोकतै मेरै माची रैं बाकरें खाड़ू।
तेरै देश्रौ माचे मोगे मोले,
राशी आणु कुल्लु दू सस्तै होले।
सोजो कौरे शांबलौं लोटै दो घिऊ,
हाथो किया डिंगटा रोटी रो शिको।
जौबे पुजा देउली खैं बाकटुऐ छिको,
छिकै ले मेरी छिकणीऐ देंदे का बौरौ।
राशीऐ ढेऊ कुल्लु खी आऊला घौरौ,
भांगौं ले कुजे देश्रौ दू ऐजा ही बौरो।
कौबै अम्बे आणौ खाड़ू बाकरे रे शशै,
दाई भाई बादे कौरी अम्बी रें आशो।
राष आणे कुल्लु दू मंहतो रैं रोहड़,
राष लाऐ चारणैं खी देवा री बागी।

अम्बी तेस महते मंडौ दी लागी,
राष आणे अम्बीऐ खौलै री बागी।
शेलै री आवो ठणको नादे शैऔ,
चुल्हे री पिठीऐ मेरो सौड़ौ छांव।
बाठणीऐ कुजीए तू नेडड़े आऐ,
कौंलै हाथड़ूऐ मालशौ लाऐ।
छांऐ ले सौड़ौ लागै ले रुंदे,
औऊरे कमाऐ मेरे किणे हौले।
तूऐ मेरे बेदणो कोइये नै जाणे,
बांई मेरी कुखी दे टुंबे कराणे।
एकी जोटे आदमी मांदलौ जाऔ,
पुछीये देऔ कुलो रै का बताऔ ?
औतरो देऔ कुलो रा ढ़ालौ ला औशो,
मेरा नै अम्बी खी दाऐ नै दोषौ।
देवा बनाड़ा अम्बी नै खाऐ,
चांबे रा देऊ फलीया देवठे छाऐं।
जबै कौरे अम्बी रो उत्तमो मोलौ,
चांबे री देऊ पाटीऐ पीतलो ढोलौ।
ओतरौ देव कूलौ रा लागौ ला रुंदा,
मातो रो चावलो अम्बे नै हौंदा।
एक जोटे आदमी बटेऊड़ी जाओ,
भाठ आणौ कुलो रा ओरु बुलाऔ।
भाठ पुजा कुलो रा धाऊली फेटै,
का हौले बोलदै महत्तै रै बेटै।
भाटै गाड़ो गौडी रै चुड़के सांचौ,
मरणे ओ जीऊणे रौ टेपड़ो बांचो।
एकी आओ भरी दो खौरीये खौरो,
दुजी आओ हौरी दो मास्ते मौरौ।
ठाणे री लाऐ ठौड़ी दे कुजीऐ लातै,
जौबै मौरौ ला महत्ता, मौरु ले साथी।

भोली ऐ छेउड़ीये जाणो नै भैश्रौ,
मोड़ तेरै मांचे जलने नै देश्रौ ।
मोड़ौ लाऊ मांची खी श्रांजो रा तौरौ,
जौलनै नाई मरणे खी कौसी रा ठौरौ ।
कुण तेरे गड़ीऐ रै गड़ाई तौ कोले,
मेरै छाड़ौ माची खी उड़दे जोड़े ।
कोलीयां बोलू गौड़ी रै फूको नै बोले,
भाई पूछे रामधनो घौरौ रै श्रोलै ।
कोलीऐ लाए गौड़ी रे फुके टयाले,
जौले लागे भोलाड श्रौ ध्याईणो तारे ।
भाई देश्रौ रामधन बौड़ी तरांगौ,
कुणजा सेजा महत्ता जू जिऊंदे जागौ ।
बाड़ी रे बड़ेटुश्रा लाम्बड़ी बाश्रो,
इणो चाणे जुगटु जू देश्रौ लौ ड़ेश्रौ ।
हांव था राजै रा बनाणे किया,
राम लिखू लखणो पौशौ दे सिया ।
तेरे लिखू जुगटु दो पौण श्रौ पाणे,
सीता लीखू देणे बै रामो रे राणे ।
दे नाई दाड़ीये पेड़ै री गाली,
तेरे लीखू जुगटु री दुर्गा काली ।
मुंड तीऐं श्रम्बी रो गैली दो कीयो,
जुगटु चालो कुजी रो बै नाचदो जेश्रो ।
नीश्रों मेरे जुगटु बै कीमू री छांई,
देखौ मेरे माचे श्राऐ की नांई !
माचे भोलाड़ू पूजै बूटौ ली छौड़ी,
दारू रै श्राणै थौतै केवलै री घौड़ी ।
थागौ मेरो जुगटु बै मौड़वी खी चालो,
खाईयों मेरै माची री ठालीऐ ठालो ।
भाऐ पूछो रामधौनौ जुगटु रै श्रौले,
टाटो मेरी बौहणीए मुखै भी बोलै ।
टाटो नाई किच्छी बै भाईया शौकी रे जौलू,
जुगटु तीयों कुजी रो बै लाई गाई टेको,
मास्ती श्राश्रो कुजी दो देवी रो तेजौ ।

जेती तूए शवरै घौरौ खी डेग्रौ,
मेरे देवरो तूऐ उकला लाग्रौ ।
सोलै री सावणीऐ मेरीये माऐ,
सोल्ला री सावणीऐ शांगले पाऐ ।
धुंऐ रै बाईशै सौरगै जाए,
सोहल लाऐ शावणीऐ कुजे खदैरे ।
पांचे ला पांडवै ग्रम्बे भण्डारे,
सांस डेवा सौर्गे मांस भोगौले ग्रागौ ।
हाडौ रै रुड़कू रौपे माटी रै भागौ ●

हिन्दी ग्रनुवाद

इस गीत का नायक ग्रम्बी ग्रपनी पत्नी से कहता है कि हे मेरी सुन्दरी तू मेरे कपड़ों को धो दे क्योंकि मैं भेड़ बकरियां खरीदने कुल्लू जाऊंगा। ग्रम्बी की पत्नी कुजी कहती कि मैं तुम्हें इतनी दूर नहीं जाने दूंगी मेरे मायके वालों के पास बहुत भेड़ें व बकरियां हैं—तुम वहीं से ले ग्राना। ग्रपनी पत्नी की बात सुनकर ग्रम्बी कहता है —

कि तेरे मायके वाले तो बहुत ही महंगे बेचते हैं। मैं तो खाड़ू (मेढे) व बकरे कुल्लू से ही लाऊंगा क्योंकि वहां पर ये बहुत सस्ते मिलते हैं। ग्रब तू जल्दी ही कोई ग्रच्छा सा खाना तैयार कर ग्रौर एक लोटा घी भी साथ के लिए भर दे। खाना लेकर वह हाथ में डंडा लिए जाने के लिए तैयार हो गया।

जैसे ही वह दहलीज पर ग्राया तो एक छेलू (बकरी का बच्चा) ने छींक मारी। ग्रम्बी की पत्नी कहने लगी यह ग्रपशगुन है मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी तो वह कहता है यह तो शुभ है। यह जरूर कोई वर देगा। मन ही मन ग्रम्बी की पत्नी ग्रपने कुल देवता से कहती है—हे कुल देवता मेरा पति सही सलामत घर वापिस ग्रा जाए। यही वर मैं तुम से मांगती हूं।

गद्दी ग्रम्बी के भाई बन्धु इन्तजार करते हैं ग्रौर कहते हैं वह कब ग्रायेगा ग्रौर बकरों को लायेगा। सब ग्रास लगाये बैठे हैं: एक दिन वह दिन भी ग्रा गया जब वह ग्रपनी भेड़ें व बकरियां रोहड़ू ले ग्राया ग्रौर चुगाने के लिए देवता की एक चरागाह में छोड़ दिए।

धीरे-धीरे उनको हांकता वह ग्रपने गांव की तरफ ले गया। जब वह ग्रपने खलिहान के पास पहुंचा तो उसे सरदर्द व ठंड के साथ कम्पन सी महसूस हुई।

उसे देखकर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई जब वह बिल्कुल पास गया तो अपनी पत्नी को आवाज लगाई और कहा कि चूल्हे के पास उसके लिए बिस्तर लगा दे क्योंकि उसे ठण्ड लग रही है।

जब उसकी पत्नी ने उसकी नाजुक हालत देखी तो जल्दी-जल्दी चूल्हे के पास बिस्तर बिछाया और रोने लगी। कहने लगी हे परमेश्वर मेरी किस्मत न जाने कैसी होगी—मेरे पति को ठीक कर दे। उसे रोता देख अम्बी कहता है मेरी सुन्दरी तू अपने नर्म नर्म हाथों से मालिश कर दे। तुम मेरी दर्द को क्या जानो मेरी बाईं पसली के नीचे सख्त दर्द हो रहा है। ज्यादा ठंड से उसे निमोनिया हो गया था। पत्नी घबराहट से कहती है कि एक जोड़ी आदमी को मांदल (गांव का नाम) को जाओ और देवता से अम्बी के बारे में पूछो। कुल का देवता उस चेले (गूर) में समाता है और कहता है कि मेरा कोई खोट व दोष नहीं है। कहते-कहते चेला ठंडे पसीने से भीग गया क्योंकि उसे पता चल चुका था कि अम्बी सिंह अब ठीक नहीं हो सकता। कुछ समय पश्चात उसकी पत्नी कुजी रोती बिलापती हुई देवता के स्थान पर आती है और कहती है—हे मेरे कुलदेव मेरे पति को अच्छा कर दे। मैं तेरे लिए सुन्दर मन्दिर, तांबे व पीतल के ढोल तथा नगारे बनाउंगी—तू मेरे पति को ठीक कर दे।

कुल देवता का चेला फिर रोता है और कहता है कि जिस प्रकार भात बन जाने पर पुनः चावल नहीं बन सकते उसी प्रकार अम्बी अब ठीक नहीं हो सकता। तुम चाहे कुछ भी करो। इस पर भी कुजी का मन नहीं माना और दो आदमी कुल के पुरोहित को बुलाने के लिए भेज दिए। जब कुल के पुरोहित ने बात सुनी तो दौड़ता हांफता हुआ अम्बी के घर आया। उसने भी अपनी जन्त्री व सांचा निकाला और अम्बी का जन्मटेवा देखा। फिर उदास हो कर कहने लगा कि जो होना है वह तो अटल लेकिन इसके साथ में इसकी पत्नी भी मर जाएगी और सारे जुब्बल में महासती कुजी के नाम से प्रसिद्धि पाएगी। जब उस पवित्रता की देवी ने यह बात सुनी तो उसने कुल देवता के मन्दिर के पास बने चबूतरे को पैर से ठोकर मार दी। (जब देवता पालकी में होता है वह ठौड़ी (पत्थर) के चबूतरे पर बैठता है उसके चारों ओर दुर्गा मां के लाल झण्डे गड़े होते हैं। लोग उसके दर्शन करते हैं) कुजी देवी गुस्से से थर्रा गई और कश्मोल नाम की झाड़ी जिसके एक इंच के बराबर लम्बे कांटे होते हैं, बैठने के लिए बिछा दी। व्रत धारण किए उन कांटों के चुभने से उनका शरीर लहू लुहान हो गया पर होनी तो अटल थी उसका पति मौत की आखरी सांसे ले रहा था। वह अपने प्राणों से भी प्रिय पत्नी को आवाजें लगाने लगा।

अपनी टूटती हुई सासों को इकत्रित करते हुए अपनी पत्नी से कहने लगा -हे मेरी भोली भाली देवी तू यह पागलपन कर रही है। मैं नहीं जानता था कि तू मुझ से इतना प्रेम करती है। तू अपनी इस सुन्दर देह को क्यों मुझ नाचीज के साथ जलाओगी ? अपनी हठ छोड़ दे अगर तू जलेगी भी तो तेरे मायके वाले तुझे जलने नहीं देंगे। मैं अपने राम से यही वर मांगता हूं कि तुझ जैसी पत्नी मुझे जन्म जन्मान्तर मिले। सती अनुसुइया जैसी वह पाक औरत अपने पति से बोली जिस प्रकार लक्ष्मण ने अग्नि रेखा सीता मां के लिए खींची थी उसी प्रकार मैं भी अपनी आंतों का पुल अपने मायके वालों के लिए लगाउंगी। मैं अपनी मर्जी से तेरे लिए मरुंगी। जब सब कुछ लुट रहा है तो मुझे जलने मरने का कोई डर नहीं, न ही मुझे कोई रोक सकता है। यह सब सुनते सुनते इसके पति के प्राण उड़ गए।

हर बड़े घराने के खिदमतगार हरिजन होते थे, जिसको कोली कहते हैं। एक तरह से वे नौकर होते थे। रोते रोते कुंजी उससे कहने लगी—दो आदमी मेरे मायके चले जाओ। तुम इस तरह से जाना जैसे हवा एक दिशा से दूसरी दिशा में पहुंच जाती है। हे हमारे घर के सेवाकारो तुम इस बात को सबमें मत फैला देना। मेरे भाई को घर के पिछवाड़े में बुला लेना तभी उसको यह बातें बताना।

जब वे हरिजन (कोली) भोलाड़ नाभ के उस गांव में पहुंचे तो अपने आप को रोक नहीं सके और फूट-फूट कर रो पड़े। सब लोग इकट्ठे हुए और उनसे पूछा कि तुम क्यों मांदल से आए हो और क्यों रो रहे हो ? तो वे रोते हुए कहने लगे—भोलाड़ वासियो तुम्हारी ध्याण (लडकी) कुंजी अपने पति के साथ सती हो रही है। जैसे ही उसके भाई ने यह सुना तो उसका हृदय मानों हाथ में आ गया और वह जोर-जोर से चिल्लाने व रोने लगा और कहने लगा मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगा। महत्ता के लिए मेरी बहन मर जाए मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। कौन है जो मेरी बहन को जीते जी जलाएगा ? इस बाली उम्र में ही अपनी सुन्दर देह को एक आदमी के लिए खत्म कर देगी ? मैं उसका और विवाह कराउंगा। यह कहते वह फूट-फूट कर रोने लगा और पागलों की तरह कहने लगा नहीं, मैं ऐसा नही होने दूंगा।

कुंजी बढ़ई से कहती है—हे बढ़ई तू मेरी पालकी इतनी सुन्दर बनाना जैसे उड़ता हुआ उड़न खटोला हो। हे सीता जैसी पवित्र देवी ! मैं तेरी जुगटु (लकड़ी) की पालकी में एक तरफ राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियां बनाउंगा। मैं तो राजा का बढ़ई हूं। उसका महल भी मेरे ही हाथों से बना है।

सीता और राम के साथ सारे जीव जन्तु, पृथ्वी, आकाश सब तेरी पालकी में खोद कर चिन्हित करुंगा। सावित्री रानी जैसी महान सती की भी मूर्ति बनाउंगा पर शर्त यह है कि कहीं तू इन महान आत्माओं के मुंह पर थप्पड़ न मार देना। मेरी कारीगिरी को भी शर्मिदा न होना पड़े। अगर तू अग्नि के शोलों से डर गई तो तुम्हारे मृत पति की नाक कट जायेगी। उस मौके पर तू जलने से मुन्ह मत कर देना। अभी तुझे सब लोग रोक रहे हैं। अब भी मौका है तू मान जा। पर वह न मानी और बढ़ई से कहने लगी तू मुझे गाली मत दे। मैं भोलाड़ वालों की कन्या हूं जुब्बल की रहने वाली हूं। मैं कभी ऐसा नही करुंगी। तू मेरी पालकी में मां दुर्गा और काली माता की भी मूर्तियां बनाना ताकि मुझे जन्म जन्मान्तर तक यही पति मिले।

जब पालकी बन गई तो सचमुच ऐसा लगता था जैसे भगवान ने अपना रथ भेज दिया हो। कुजी ने अपने पति का सिर अपनी गोदी में लिया और जब पालकी लोगों ने उठाई तो लगता था जैसे किसी देवी या देवता की पालकी नाचते हुए जा रही हो। अभी तक उसके मायके वाले नहीं आए थे। वह कहने लगी मुझे उठाने वालो मेरी पालकी कीमू की छांव में ले जाओ (कीमू एक पेड़ का नाम है)। तब तक मेरे मायके वाले भी आ जाएंगे।

जब उसके मायके वाले—भोलाड़ गांव के लोग आए तो ऐसा लगता था कि कोई सेना भगदड़ मचाती आ रही हो। उनके दौड़ने से खेतों की मेंढ़ें टूट गईं और उनके पास बारूद के थैले व देवदार के पेड़ का तेल था जो जलने के लिए मिनट नहीं लगाता ताकि उनकी बहन व बेटी कुजी की चीख पुकार उनके कानों में न सुनाई पड़ें।

जल्दी से मेरी पालकी उठाओ मेरे मायके वाले आ गए हैं। जिन बजुर्गों के आगे मेरा मेरा सर झुकता था आज वही लोग मुझे देवी की तरह मान कर मेरे आगे हाथ जोड़ रहे हैं। यह भार में अपने साथ नहीं ले जाना चाहती। जल्दी से मुझे श्मशान घाट पर पहुंचा दो। कुजी का भाई रोता कलापता बहन के पास आता है और कहता है कि हे मेरी प्रिय बहन तूने वह क्या किया? कहीं तेरे साथ जबरदस्ती तो नहीं की गई? तू मुझे बता दे मैं तुझे जलने नहीं दूंगा। हम तेरे बगैर कैसे दिन काटेंगे? इस पर कुजी कहती है—हे मेरे भाई मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही हूं। मेरी खुशी में तुम्हारी भी खुशी होनी चाहिए हे मेरे भाई तुम सब रो-रो कर मुझे विचलित मत करो। होनी तो अटल है, इसे कोई नहीं टाल सकता।

जब मास्ती (महासती) कुजी की पालकी चिता पर रखी गई तो उसके सुन्दर

चेहरे पर एक देवी सा तेज उतर आया और सबसे हाथ जोड़कर विदा लेती हुई अपने श्वसुर और जो गांव के श्वसुर लगते थे, से कहने लगी अब आप सब घर चले जाओ और अपने भाई व देवरों से कहने लगी तुम मेरी चिता को अग्नि लगाओ।

हाथ जोड़कर स्वर्ग की देवियों को नमस्कार किया और उनसे बोली देवी माता मुझे शक्ति दो और अपनी शक्ति रूपी जंजीर से मुझे अपने पास खींच लो। मैं आपकी सेवा करुंगी और उसने अपनी आंखें बन्द कर दीं। जब चिता में आग लगाई गई तो ऐसा लगता था धुंए का ऊपरी सिरा आकाश को छू रहा है। मानो उसकी आत्मा स्वर्ग को चली गई हो।

इस लोकगीत के अन्त में भोले ग्रामीण वासियों का विचार है कि कुजी देवी जो इतनी महान थी जरूर उसे दुर्गा व कालियों (सोलह शावनी) ने अपने पास काम को रखा और उसके पति को पांचों पाण्डवों ने अपना कोषाध्यक्ष (भण्डारी) बनाया है।

अन्त में उन महान आत्माओं की आत्मा स्वर्ग को गई। मांस का भक्षण अग्नि ने किया और हड्डियों का ढेर मिट्टी के हिस्से में आया ●

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

●

मांई और रूपु

जुब्बल व कोटखाई क्षेत्र में यह लोकगीत खास-खास पहाड़ी मेलों जैसे जागरा, बिशू (बैसाखी) के दिन गाया जाता है। यह गाथा जो गीतों में ढली है एक प्रेम कहानी है। इसमें मांई नाम की एक लड़की रूपु नाम के लड़के के साथ भाग जाती है क्योंकि इसकी सौतेली मां होती है। उस सुन्दरी का प्रेमी पति जब मर जाता है तो वह सती हो जाती हैं। अपने माथे के कलक को धो वह मास्ती (महासती) मांई के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पारवै चलालै दू देणे रुपुऐ षेड़ी
मांई चारो बाकरी चारै रूपआ भेड़ी।
माऐं जाणौं ले के बाशौ ले भेड़ी
छिछड़ै री छांइऐं रूपु सौऊलौ सिकौ।
मांई रो मुंदु जिणो हारषो जेओ निरुकौ
रूपुऐ फारशे पाऐ गोरू दे चौरणे तू नेह्ड़े आऐ।
मांई रे ओ रूपु रे होले बोले बताऐ
कोठी गाड़ौरी जातरौ कौरे रूपुआ आऐ।
तेरी जातरो मांईऐ मौऐं जाणी नैं जाणी
तेरी हौली सतड़ी मुखी छाड़े बदाणु।
डाठु धोऐ छोइऐ साबणे मुंदु जौमे दूधै
कोठी गाड़ो री जातरौ होली मौंगले बुधै।
डे जलेया कोलटुआ मेरी पड़ांजो
घिऊ देऊ ले गईड़ो ताखी गुड़ गड़ाजे।
डेवदा था डेवदा मांईए तओं रा डौरो
जाणदा नै परैणदा रूपु ठीडो रा घौरो।
पैरौ गौडे आरटे चुलटे भामटे फेड़

घोर हीलो रूपु रो सेजो जींदै डाफिऐ छेड़ू ।
डे गो कोलटुम्रा मांई री गड़ांजे
घिऊ देऊ धोइडो गुड़ गड़ाजे ।
मुंगले रै रूपुए ला दुरो दू शाऐ
मांई रो कोलटू केथौ कारूम्रो गो म्राए ।
ह्रांव छाड़ा मांईऐ तामुखी बदाणु
बापा बोलु मुंगला मते पुछु ला तांव
कोठी गाड़ौ री जातरौ किया डेवदां ह्रांव ।
बापै देणी मुंगले तेरै शांगली फौऐ
कोठी गाड़ौ री जातरौ रूपुम्रा नैरौ न कोऐ ।
बापु नैरौ मुंगला नौवै घोरौ री पांड़ो
म्राव ह्रेरे नै हुजतौ ठौगे नाई लोगु री रांडो ।
पुड़गौ रै नवीऐ चाते पौंद्रौ कोणे
बापे तैणे मुंगले गंठीए गौणे ।
कोठी गाड़ौ री जातरौ देणा रूपुऐ फेरा
बादी जाणौ ली धैणी चंई था बौटा मेरा ।
नाचदै खेलदै मेरे शांगे शलाणे
बोलो तूऐ धणी केम्रो सौ कोठी गाड़ौ री पाणे ।
रूपु ठींडौ रे चिशड़े कोईऐ नै जाणे
चादरू री छाबौं दे मांईये पानी रे लोटड़े म्राणे ।
म्राजकी रातीऐ रूपुम्रा ईंदा रोऐ
तेरे धोड़ै खी दाणा देऊ खेती रै जौए
म्रामा बोलु म्रमिया तेरे लाड़कु धिम्रो
म्राजकै पावुणे देंदे तु घादीऐं धीम्रो
लाड़कु तू छोटे खा भाई म्रापड़ै बापो ।
जेती म्राम्रौं लैं तांव मांगदै घिऊ गादीऐ नै टापौ ।
म्रमीया गे म्रमीया का लागदो तेरो ?
गेहूं बापु री खेचीए घिऊ जैड़ा रो मेरौ ।
बोठे रोऐ ला रूपुम्रा ठीडा मेरै बापू री ढांकी
जबै देईयो नै कौरौ ले तोबै म्राऊं ले म्राफी ।
बादी डेगी छनाड़ी ऊबी खोड़ू रै बौणै
मुखी सीटै नै म्रामैं रे बुझै बाथू रै डणै ।
रश्टा म्रांगशे देणे कोलटी रै हाथै
मांई लागे बाठणौ रूपु ठीडो रै हाथै
शिगे शिगे रूपुम्रा ठीडा नऐ टपाम्रो

आओ मेरै माचे भुंगौ भेबौ लै तांव।
आणे दे माची तेरै खाली नै छाड़ू
मोड़ौ देऊ माचो खी बाकरै खाड़ू।
धारौ लागी पुड़गो री खौड़ै क्याले
ऊबे कौरे रूपुआ ठींडा घुघुऐ घैनै।
घुघुऐ नै करदा ताव छेवड़े बुत्ते
आफी कई नैं हांडड़े तेरे का बागणे चुटे।
पुड़गौ रै माणछी तांव खादिऐ खाले
नदे आई बै हालवै ऊबै बौलै छालै
बादे तैणौ मुंगले कुछ भी नै बोलो
करे हेड़ो रूपुरी तैणे शादीं रो धांधो।
मांई हुई आणीयो बरषौ दुई
भाई री लागी बापू री माव री कसूंसी
ठीडा बोलू रूपुआ तेरी दाड़ी री बांदी
काल थिऐ पोरषे हाव माईयौ जांदे
रूपु तेस ठींडौ रै पेटौ दी लाणी
छाड़ौ तींओ मांई खी एकी बोदाणी
मांईऐ तीऐं कोले बैदूरौ दू शाओ
कोले मेरी गौड़ी रो कैंई जोगो आओ
बोलू ला बोलने जाईयौ नै डौरे
तामू आवो को बोद दो रूपु गो मौरे
मांऐ आऐ बाठणौ बै धारी ऐ धारौ
भाई तीओं बाठणो दे बाबतौ जे लागौ
रूपु ते ठींडौ रे पौजले हालौ
पौजली देणे हाली दे मांईये फालौ ●

हिन्दी अनुवाद

रूपु (नायक) चील और देवदार के जंगल में भेड़े चरा रहा था। नाले के दूसरी तरफ मांई नामक युवती भेड़े व डंगरों को चरा रही थी। मांई के अलौकिक सौंदर्य को देखकर इसने सीटी बजाई और जोर-जोर से कहने लगा हे सुन्दर नारी तू अपने मवेशियों को चरने दे और मेरे नजदीक आकर बात सुन। जब युवती नजदीक आई तो एक सजीले नौजवान को देखकर हैरान रह गई। दोनों का मिलन कामदेव ने करा दिया।

रूपु और मांई आपस में बातचीत करते थे और एक दूसरे से घुलमिल गए। बातों-बातों में मांई ने रूपु से कहा कि हे रूपवान क्या तू मेरे गांव में होने वाले मेले(जातरों)में आएगा। इस पर रूपु बोला मैं अवश्य आऊंगा अगर तू मुझे बुलाने के लिए किसी को भेजेगी तभी तेरे सच्चे प्यार को परखूंगा।

मांई मेले की तैयारी में लग गई। अपने डाठू को साबुन से व मुंह को दूध से धोने लगी। कोठीगाड़ नामक स्थान पर मंगल और बुध को मेला होगा तुम जरूर आ जाना। मांई अपने नौकर से कहने लगी मैं तुझे घी और गुड़ का हलवा दूंगी तू मेरा निमन्त्रण लेकर रूप सिंह के गांव चला जा।

उस पर कोली (हरिजन) कहने लगा मैं चला तो जाऊंगा पर उस रूपवान रूपु का घर मैं नहीं जानता। उसके मकान के आगे अखरोट, खुर्मानी, आड़ू और बादाम के पेड़ हैं, उसके बरामदे में बहुत बच्चे व औरतें होंगी वहीं जाना। वह मकान सब मकानों से बड़ा है। जब वह जाने लगा तो मांई ने उसे शुद्ध घी का हलवा खिलाया। गुड़ की भेली व घी भी दिया।

रूपु के पिता का नाम मंगल था। रूपु ने दूर से आते हुए उस हरिजन को देख लिया और मन ही मन खुश हो गया कि यह आदमी जरूर मुझे बुलाने आया है। हे रूप सिंह जी मैं आप को बुलाने आया हूं। हमारे गांव में कोठीगाड़ की जातर (मेला) हो रही है। कृपया आप जरूर आएं। मांई ने आपको बुलाया है।

रूपु बहुत खुश हुआ और अपने पिता से कहने लगा कि हे मेरे बापू आप मुझे मेले में जाने दें। मैं तभी जाऊंगा अगर आप आज्ञा देंगे। उसके पिता मुंगल ने कहा तू जा सकता है तुझे जाने को मैं नहीं रोकता—तू खुशी-खुशी जा।

बाप मंगल उसको शिक्षा देने लगा कि तू कोई भी शरारत न करना न ही किसी की बहू बेटी को हाथ लगाना। मेरे पास कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। उसके दोस्त भी जाने को तैयार हो गए। जब वे जाने लगे तो उसके बाप ने अंगुली से गिने—सब मिल मिलाकर पन्द्रह आदमी थे। सबको उसने यही शिक्षा दी।

जब रूपु और उसके साथी कोठीगाड़ नामक स्थान पहुंचे जहां मेला लगा था तो उन्होंने मन्दिर के चारों ओर नाचते हुए फेरा लगाया। जितनी भी वहां कुंवारी लड़कियां थी सबकी धड़कनों में रूपु का रूप धड़कने लगा और सोचने लगीं काश यही मेरा पति बनता। नाचते खेलते रूप सिंह को प्यास लगी वह उन लड़कियों को कहने लगा अब तो प्यास के मारे बुरा हाल है। तुम यह

बताओ कि यहां पर पानी कहां है मुझे पानी पीना है । वह सचमुच अति सुन्दर था । पर उसकी बात कोई नहीं जान सका वह तो मांई को अपने पास बुलाना चाहता था । तब कहीं जाकर मांई आई और चांदी के लोटे में वह रूपु के लिए अपनी चादर से ढक कर पानी ले आई ।

मांई अपने प्रेमी रूपु से कहने लगी—हे रूपु आज की रात तुम यहीं रहो । तेरे घोड़े के लिए हरा घास, चने और अपनी खेती के जौ दूंगी । उसके बाद वह अपनी सौतेली मां के पास गई और कहने लगी कि मां मैं तेरी लाड़ली हूं जो आज का मेहमान है उसे खूब दूध-घी खिलाना । मांई अपनी सौतेली मां से लाड़ जताने लगी । उसकी मां ने गुस्से से कहा —

कि तू लाडली होगी अपने बाप की और भाई की, मेरी कुछ नहीं, उन्हीं को खा । मैं कोई घी नहीं दे सकती । जितने भी तुझे मांगने आयेगे उनके लिए मैं कहां से अच्छा-अच्छा खाना लाऊं ?

उस पर मांई को भी गुस्सा आ गया और कहने लगी हे अम्मा तेरा क्या खर्च होगा ? अनाज तो मेरे बापू की खेती का है और घी मैंने अपने आप इकट्ठा किया है ।

फिर उसके मन में विद्रोह की भावना जाग उठी और अपने प्रेमी रूपु से कहने लगी कि हे सुन्दरता में अनुपम रूपु तू मेरे बापू के घर के बरामदे में लगे लकड़ी के बैंच पर बैठा रह । अगर मेरी शादी नहीं कराएंगे तो मैं तेरे साथ भाग जाऊंगी ।

उसकी सौतेली मां नहीं चाहती थी कि इतना रूपवान और अच्छे घर का लड़का मांई को मिले । फिर उसकी मां उसे चीड़ के पत्तों को लाने के लिए भेज देती है और साथ में बथुआ की रोटी बांध देती है ।

जब मांई जंगल में पहुंचती है तो उसे दूर से आता हुआ रूपु दिखाई देता है, जो उसकी तलाश में होता है । जब दोनों मिलते हैं तो जीवन भर साथ निभाने की कसमें खाते हैं । रूपु उसे वहीं से ले जाना चाहता है । मांई अपना रस्सा और दराटी गांव की एक हरिजन लड़की के पास देती है और खुद रूपु के साथ भाग जाती हैं और प्रेम विवाह कर लेती है ।

मांई अपने प्रेमी से कहती है कि हे रूपवान रूपु तू जल्दी-जल्दी चल मेरे मायके वाले आ गए तो तुझे मारेंगे । उस पर रूपु कहता है कि उनको आने दो उनके लिए मैं पूरा इन्तजाम करुंगा और उनको खाली नहीं रखूंगा । उन्हें शराब

पिलउंगा ग्रौर खाडू-बकरों का मांस खिलाउंगा।

कोटखाई के नजदीक पुड़ग नाम ग्राम की धार पर जब वे चढ़ने लगे तो मांई रूपु से कहती है कि अब मैं थक गई हूं मुझे पीठ में उठा ले। उस पर रूपु कहता है — मांई ऐसा मत कह सब लोग क्या कहेंगे? हम पर सब हसेंगे। खासकर पुड़ग गांव के नौजवान मुझ पर हंसेगे ग्रौर कहेंगे कि ग्रौरत को इसने पीठ पर बिठाया है। ये सब मेरा मजाक उठाएंगे। तेरी कौन सी टांग टूट गई है जो तू चल नहीं सकती। जल्दी-जल्दी चल नदी में पानी बढ़ रहा है। लहरों से भीगने लगेंगे इसलिए तू जल्दी-जल्दी चल।

जब वे घर पहुंचे तो उसके बाप मुंगल ने कुछ भी नहीं कहा ग्रौर शादी-फेरों का इन्तजाम किया। उसने उसके मायके वालों को बुलाकर माफी मांगी। उनको शराब पिलाई गई ग्रौर बकरे काटे गए।

जब मांई की शादी हुए दो साल बीत गए तो वह ग्रपने पति से कहने लगी — मुझे ग्रपने मां बाप व भाई की बहुत याद सताती है। मैं दो तीन दिन के लिए जाना चाहती हूं। उसकी ठोड़ी को पकड़ उसे प्यार से मनाने लगी कि मुझे जाने दो। उस पर रूपवान रूपु कहता है कि ग्राज ग्रौर कल के दिन तू वहीं रहना ग्रौर तीसरे दिन वापिस ग्रा जाना। तू बेशक चली जा।

मांई ग्रपने मायके जाती है। वहां उसे दो तीन के बजाय चार दिन लग गए। चौथे दिन जब वह वापिस ग्रा रही होती है तो उसे दूर से ग्राता हुग्रा रूपु का नौकर दिखाई देता है। जब वह पास ग्राता है तो उससे पूछती है —तू क्यों ग्राया है? क्या तुझे मेरे रूपु ने बुलाने के लिए भेजा है?

उस पर उसके गांव का वह हरिजन कहता है कि हे मांई ग्रब तो मुझे बोलना ही पड़ेगा। तुम ग्रपने मन को थाम लेना। तुम्हारा प्यारा पति ग्रब इस संसार में नहीं है। उन्हें पेट के दर्द ने मार डाला। यह सुन कर मांई पागल सी हो गई। एक धार (पहाड़ी) से दूसरी धार को पार करती हुई जब वह शमशान घाट पहुंची तो रूपु की लाश को चिता पर रख दिया गया था ग्रौर तब ग्राग की लपटें ग्राकाश को छू रही थी। उस प्रचंड ग्रग्नि में मांई ने छलांग लगा दी ग्रौर ग्रपने पति के साथ जल कर सती हो गई। ग्रपने माथे के कलंक को धो डाला।

संग्रहण व ग्रनुवाद,

कु० सुमित्रा ठाकुर

महासती लोता

महासती (मास्ती) लोता अपने पति भागचन्द के साथ सती हुई थी। भागचन्द जुब्बल के शील गांव का निवासी था और उसकी पत्नी लोता का मायका (पीहर) मंढोल, सनतालनी में था। लोता का पति भागचन्द, पटवारी था और पैमाइश के लिए किन्नौर गया था। वहीं से बीमार होकर घर आया और भरी जवानी में उसे मृत्यु ने अपने शिकंजे में ले लिया। उसकी पत्नी लोता उसके साथ सती हो गई। आज भी जागरा (देवता के जगराते), बीशू (बैशाखी), के मेलों आदि में इनकी पवित्रता के गीत गाए जाते हैं।

चचुआ कंटुआ बांधो दे बांधो
ऐबं मेरै करणो शादी रो धांधो।
कोठी दू देणो गाड़ीयौ सुनागणो बांधो
शौई कौरे बेटिया शादी रो धांधो।
कोठी दू देणो गाड़ीये किनीकाफो रो ढाठू
तिणो आणो बेगणौ तू जिणा आपू।
टाऊ हांडो चेऊड़ो नावरौ नाले
केईदे बाझे मिलदे मू चौजौ रे डाले।
एक बै ढेवे नेगटुआ छौंऊ चुहारे
तीनौ साथी मितरी डौबो नै म्हारे।
एक नै आणो नेगटुआ टोपुऐ आली
कामौ री मुंई मटुऐ देऔ गाली।
लौटे पौड़ा चुटियो चिवै री बाटौ
रोपा रूंबी खिमटै रा देवी रैं हाटो।

पावणा नाई बोलना आया हावं वित्तै
शाव तो मौए बणजौ लागो ओ चितै
एक नै देई बापूआ झूठा भरोसा
पाकड़े छाड़ा बापूए करासू रा सोथा
सोथा करासू रा देईयौ पाछू
शीलौ मेरै ठारु रो गांवटू आछो
बीतरै आए नेगटुआ खाए लो खाणौ
घियौ देऊ बदरी रे कन्या दानो
कन्या तेरे निन्दा नाई पापो रा पिण्डा
बीशो गाई चालशो आगले देदां
बीतरै आए नेगटुआ हाथड़ू धोए
दूधो घिऊ मो रै पाके रसोए
भागौ रे काकड़े जुडी फसांदे
होए औदें छोटे चोरी बै जांदे
तौगें लाऐ आगुए छौले बशैशे
तोले लाई तोलै री मुगड़ी भाषे
मुखै नै लाए नेगटुआ इतरे कागौ
मोड़ मेरै मांचे सनागणौ भागौ
कांगणो देऊ माची सुनागणो तांव
शीलै मेरे ठारु रो घरै ले नांव
काले पाखे दगला देऊ सौदै खो तांव
देओ खी चाणू देवहे गौणे तांव
लाए गोवा जौपियो घरौ खी आए
तांव घाड़ू बोददै घरो रै दाए
पारौ आओ सतानली दू गाडरौ मेशो
कूटो पिशौ बापूआ ओसो भी तेरै
कुटै री मेरै मानशी पिशै रै खांदे
आणे दे मतानलू घिऊ सिड़कु खांदे
लोतै रो ढैलो गाडरौ शिलौ री सेरी
मुए पापी जो रे जिऊदे तेरे
लोतै हुई आणीयो बरशो दुई
घुघो मौ घिऊ री मौरुबी कुई
लोते हुई आणीयो बरशौ चारो
पाथा करो पितलू बांगो उघारो

उगड़ी ऋती दे बासो पलाशौ
काली कनावरी दे ढौलै पैामशौ
एबी नै कौरे नेगटुआ घौरौ रे आशो
नेगटु आऐ भाग चौंदौ घौरो रे या्दौ
कुल्लु रै दे भिष्टा घरौ री छूटी
मां री लागी बापू री लोतै री कसूंसी
घोड़ा पूजा सांई सौ पाछुई बागी
लोतै तिऔ बाठणी दे बावलौ लागे
कौंटू रो आऔ नेगटू बानीए मुंडै
सिरै लागे सिरतौ जांदे शयाणे
चुली काई लोतया मेरो सौड़ौ छांव
बाठणीए छेवड़ीये तादू छुटेगा हांव
छाएं ले सौडौ लागै ले रुंदे
औऊरे कमाए मेरे किणे होंदे
लोतै री धाड़ो गैली दो नेगीऐ मुंड़ौ
लागौ ली खाणी तू जैंबै ले रुए
इणो नै बोले तू सौ जन्मो रा साथे
जाऔ लो नेगटु तौ जौलू ले साथे
फिमटी चाले लाड़दे जोखती जाले
औरु देऔ शवरीयो स्दूकौ रे ताले
तारे बेटो नेगटु एबै गो जाए
बापूए कौंटु देणी लाम्बी तरागो
पापी पूचे जौरें हांव जिऊदा जागो
जुगटु चालो लोतै रो देऔ डैऔ
सोहल लीखी सावणी बै बादे देऔ ●

हिन्दी अनुवाद

इस लोकगीत का नायक अपने चाचा कंठु से कहता है हे, मेरे चाचा मुझे कोई सोने की चीज दे दे अब मैं जवान हो गया हूं। मैंने अपनी शादी का इन्तज़ाम करना है। उसका चाचा यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और अपने सन्दूक से सोने के कंगन निकाले और कहा — हे मेरे बेटे तूने तो मेरे मन की बात कही है तू बेशक अपनी शादी का इन्तज़ाम कर सकता है। भाग चन्द (नायक) के पिता ने अपने सन्दूक से किनीकाफ नाम का

कपड़ा (सिर पर बांधने वाला डाठू, पहाड़ी औरतों का पहरावा) निकाल कर दिया (जिस पर सोने चांदी का मुकम्मल काम होता है) और कहा जितना सुन्दर तू है उसी प्रकार तेरी नेगण (नेगी की औरत) भी सुन्दर होनी चाहिए तभी तेरी सुन्दरता में चार चांद लगेंगे। वह चार पांच गांव घूमकर आ गया पर उसे कहीं भी सुन्दर डाली नजर नहीं आई। गांव हाऊ, चेवड़ी, नावर पर उसे कोई भी लड़की पसन्द नहीं आई।

जब घर पर वापिस आया और तब उसके बापू ने कहा कि बेटा एक बार फिर कोशिश कर। जब वह जाने को फिर से तैयार हुआ तो उसके पिता कहने लगे कि चुहारा (जो छोटी सी रियासत थी जिसे अब रोहड़ू भी कहते हैं) कि कोई भी लड़की नहीं लाना क्योंकि वे बड़ी जुबान तराश होती है टोपियाँ पहनती है इनके साथ किया हुआ रिश्ता कभी सफल नहीं होता। उसके बाद वह जुब्बल के एक गांव चिवा के रास्ते होता हुआ हाटेश्वरी माता के मन्दिर के पास पहुंचा। थक कर विश्राम करने बैठ गया। जो नेगी के साथ उसका हरिजन नौकर (कोली) था उसने अंगुली के इशारे से एक लड़की को दिखाया जो कि खीमटा खानदान की थी। वह अपने गांव की सहेलियों के साथ धान की रोपाई कर रही थी। वह उन सबसे सुन्दर दिखाई दे रही थी -जैसे तारों में चन्द्रमा। वह (नौकर) अपने मालिक से बोला हे मालिक वह देखिए सबसे बीच में जो खड़ी है वह आपके लिये ठीक बैठेगी। इसकी और आपकी जोड़ी सोने पर सुहागा जैसी बन पड़ेगी।

वह देखो जिसने नाक में सोने का कोका और कानों में सोने की बालियां पहनी हुई है। उसके बाद वह एक खेत से दूसरे खेत में आया और खेत की मेढ़ पर बैठ गया। क्या वह जिसने छोटे छोटे फूलों वाला कुर्ता और काला वास्कट पहना हुआ है? सच्च यह तो बहुत ही सुन्दर है! अब किस तरह इसके साथ बात करेगे ?

नौकर बातों का बड़ा माहिर था उसने ना जाने क्या क्या कहा और बीच खेत में खड़ी लोता को खेत की दूसरी तरफ बुला लिया जहां पर भाग चन्द नेगी बैठा था। वह हैरान हो कर उस सुन्दर गबरू जवान को देख रही थी जिसके सलौने मूंह पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूंदे मोती के समान चमक रही थी।

मेरे गांव का नाम शील है क्या तू मेरे गांव में चलकर घर की शोभा बन सकती है? हे सुन्दर लड़की! क्या यह बात मैं तुझसे पूछ सकता हूं? लोता की आंखे शर्म और गुस्से से लाल हो गई और कहने लगी मैं तुझे यहां खेत

खलिहान में क्या बोल सकती हूं मेरा घर सतानली गांव में है तुम वहां आ जाना तभी बात होगी।

गांव की औरतें और बच्चे आपस में फुसफुसाने लगे। धीरे धीरे बातें करने लगे कि लोता के साथ यह सुन्दर परदेसी लड़का कौन है जो इससे बातें कर रहा है? वह घर जाती है और अपने बापू से कहती है कि पिता जी आप बाहर जाइए और देखिये कोई मेहमान आया है। पता नहीं यह आपसे क्या कहना चाहता है? जरा सुनिये तो सही!

भागचन्द नेगी कहता है कि मैं कोई मेहमान नहीं हूं ना ही मेरी कोई बुरी नीयत है। मैं तो अपने लिए रिश्ता खोजने आया था। खोजते खोजते मैं जब इधर आया तो मैंने इस लड़की को देखा जो मेरे मन को भा गई। फिर लड़की अपने बाप से कहती है कि इस आदमी का झूठी तसल्ली मत देना इसको साफ साफ कह दे कि मैंने करासा के गांव में इसकी बात की हुई है। उन्होंने मंगनी भी कर दी है।

तुम इसकी मंगनी की सब चीजें वापस कर दो मेरा शील गांव बहुत ही अच्छा है। लोता का पिता कहने लगा कि हे नेगियों के लड़के तू अपने हाथ धोकर खाना खाने अन्दर आ जा फिर कोई भी बात बाद में हो जाएगी। मैं अपनी लड़की का कन्यादान कर दूंगा।

मैं तेरी कन्या को चाहता हूं। तेरे दहेज में दी हुईचीजें लूंगा। तो मैं पाप का भागी बनूंगा। मैं तो उल्टी तेरी मदद करुंगा जहां तू बीस रुपये लगायेगा मैं तुझे चालीस दूंगा। एक तो मां बाप अपने मांस का पिण्ड देते है ऊपर से अपना सब कुछ दे दें। मैं अपने लिए पाप नहीं कमाना चाहता। मुझे तू बस लड़की ही दे देना।

लोता का बाप बातों को टालता है और कहता है कि तू अन्दर तो आ जा इस गरीबखाने में दूध घी और शहद की ही रसोई पकी है। पहले तू हमारे घर का रूखा सूखा खाना खा ले फिर देखी जाएगी। उस पर नेगी कहता है कि आप तो टाल मटोल कर रहे है जैसे ककड़ी की बेल में ककड़ी नहीं घुस सकती वैसे ही घर की कन्या भी छिपकर नहीं रह सकती। वह आते जाते को दिखाई पड़ जाती है।

घर में लकड़ी के बरामदे में भागचन्द नेगी लोता से कहता है जो तू कहेगी मैं तुझे दूंगा। तोले तोले की बालियां तेरे सुन्दर कानों के लिए बनाउंगा तुझे सोने चांदी से भर दूंगा। तू एक बार हां कह दे। लोता गुस्से से कहती है कि हे नेगी

लड़के तू मेरे कान मत खा। मेरे मायके वाले बहुत खराब हैं वे तुझे टालने के लिऐ बहुत कुछ मांगेगे तुम कहां से दोगे?

नेगी कहने लगा तुझे मैं अभी कांगन और सुनागन (सोने के बड़े-बड़े कंगन) तेरे पीहर वालों को दूंगा। सोने से जड़ित (दगला) चोला तेरे सुन्दर बदन के लिये दूंगा और तुम्हारे कुल देवता का भी मन्दिर बनाऊंगा तथा तुझे गहनों से भरपूर कर दूंगा। इस पर लोता कहने लगी मुझे तेरे गहनों की भूख नहीं है पर मेरे पीहर वाले नहीं मानेगें।

किसी तरह लोता के बापू को शादी के लिए राजी कर दिया और भागचन्द (नायक) खुशी खुशी अपने घर पर चला गया। जब वह अपने घर पर पहुंचा तो अपने बाप से कहने लगा कि मैं अपनी शादी पक्की कर आया हूं क्या शादी का पूरा इन्तजाम है? मैं बहुत बड़ी धाम दूंगा। आटा चावल कितने है आप के पास? इस पर भागचन्द के पिता ने जवाब दिया बेटे अनाज के भण्डार हैं तू किसी बात का फिक्र न कर। मेरे घर में सब कुछ है।

जब लोता के यहां बरात पहुंची तो ऐसा लगता जैसे पूरी सैना चल रही हो। ढोल-नगारों, शहनाइयों की गूंज से आकाश गूंज उठा जब शादी का हो हल्ला खत्म हुआ तो लोता अपने पति भागचन्द से कहने लगी कि जब मैं मर जाऊंगी तब तो मुझे यमदूत ले जायेंगे पर जीते जी तुझसे मुझे कोई अलग नहीं कर सकता। मेरा जीना व मरना तेरे ही लिए है।

दिन पर दिन बीतते गए। लोता की शादी हुए दो साल हो गए थे। सचमुच वह लक्ष्मीरूप थी। जबसे वह उस घर में आई थी तो दूध, घी की कमी नहीं रही थीं और शहद से कुएं भर गए थे। उनके घर से लोग अनाज व पैसे उधार ले जाते थे। उसके आने से किसी भी चीज की कमी नहीं रही थी।

वैशाख का महीना था। पक्षी चहचहा रहे थे। भागचन्द को घर की याद सता रही थी। वह किन्नौर मे पैमाइश के काम लगा हुआ था और उसे घर जाने की छुट्टी नहीं मिल रही थी। कुछ दिन बाद उसने अपने अफसर से छुट्टी मांगी कि उसे अपने मां बाप की व प्राणों से भी प्यारी पत्नी की याद आ रही है। पर उसे छुटी नहीं मिली।

वह किन्नौर में ही बीमार हो गया। उसके अफसर ने उसको एक घोड़ा दिया साथ में एक आदमी भी उसके साथ भेज दिया। जब उसका घोड़ा घर के नजदीक पहुंचा तो वह बुखार से तप रहा था। दर्द के मारे सिर फटा जा रहा था। माथे को मफलर से बंधा देख उसकी पत्नी लोता पागल हो उठी कि यह क्या हो गया? वह अपने पति की तरफ भागी।

हे मेरी सुन्दर पत्नी ! अब तेरा मेरा साथ छूट रहा है । जरा जल्दी मेरे लिए चूल्हे के पास बिस्तर लागा दे क्योंकि मुझे बहुत ठंड लगी है । यह सुन कर लोता रोती हुई कहने लगी—हे मेरे भगवान मैंने ऐसा कौनसा पाप किया है जिसकी तू मुझे ये सजा दे रहा है? मेरे पति को अच्छा करदे बदले में मेरी जान ले ले । प्रभु तू क्यों मुझ मासूम की जिन्दगी बर्बाद कर रहा है ? लोता के पति ने अपना सिर उसकी गोदी में रख दिया और बुखार से हुई बोझिल हुई पलकों को उठा उसके आंसुओं से भरे सलौने मुंह को देखकर कहने लगा—तुझे मेरी कसम अगर तू रोए । मेरे मन को और दुःखी मत बना । हे मेरे प्राणों से भी प्यारे ऐसा मत कह । तू तो मेरे जन्म-जन्म का साथी है। जब तू मर जाएगा तो मैं भी तेरे साथ मर जाऊंगी ।

अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि उसकी गोद में भागचन्द के प्राण निकल गए । फिर लोता ने चुपचाप उसका सर नीचे रखा और अपने श्वसुर से कहने लगी आपका बेटा यह दुनिया छोड़ चुका है । बाप ने जैसे ही सुना जोर जोर से रोने लगा और कहने लगा पापी यमदूत ने मुझे जीते जी मार डाला मैं कहां जाऊ क्या करुं ? लोता ने चाबियां ली और अफ़ीम खाने चल पड़ी ।

जब लोता की पालकी शमशान घाट को जाने लगी तो लगता था जैसे किसी देवी का रथ उड़ रहा है । उसमें सारे देवी देवताओं को चिन्हित किया गया था । अपने पतिव्रता होने का प्रमाण देकर भोली भाली ग्रामीण बाला स्वंग का दरवाजा खोल गई और मास्ती (महासती)लोता के नाम से अपनी लोक गाथा अमर कर गई। आज भी हर बच्चा व बूढ़ा यह लोकगीत गुनगुनाता सुनाई देता है ●

अनुवाद व संग्रहण
कु० सुमित्रा ठाकुर

शिमला क्षेत्र

मियां दाऊद और महासती नरजी

मियां दाऊद और उनकी पत्नी नरजी का लोकगीत रोहड़ू और जुब्बल क्षेत्रों में अधिकतर मेलों और त्यौहारों में गाया जाता है। एक पहाड़ी गांव की सीधी सादी यह राजपूत कन्या अपने छः महीने की बच्ची को छोड़, अपने पति के साथ सती हो गई थी। और अपना नाम मास्ती के रूप में प्रसिद्ध कर गई (मास्ती का अर्थ महासती है)। इसलिए इन देवियों की कुर्बानी को लोकगीतों में ढाल दिया गया और ये लोकगीत न जाने किस काल से गाए जाते हैं। आज भी इनके गीत बड़ी श्रद्धा से गाए जा रहे हैं। अपने पति के प्रति उनका अगाध प्रेम पवित्रता का प्रमाण देता है।

मुला मलाऐ औले केरे मलाऐ
भारथ आमे नरजी हेड़ू लै गाऐ
जौ पाके चौऊकी बागी लौए पाणे राती
हाथे किऐ नरजीए शणकांदे दाचे
बेठू देणे बसणो जौ लऊंदै लाऐ
आपू गोऐ नरजे लाड़े घौरौ खी आऐ
चूपै चूपै छेड़ू ओ तूऐ कांग भी नै लाऔ
पारौ केथौ शुणीयो मिये दाउदौ रो नांव
उटी देड़ी नरजीऐ सेरे दी फाली
हाथै आई मोलुईयो जौ गेहूं री डाली
चोड़ीयौ नै नरजीए गेहूं री डाली
गौड़ो री छेवड़ी देऔ भाई री गाली

लाड़ी तीऐ नरजीए तबड़े पौ जाणो
बाघ जिणो बानीये खोली आंगण आणे
नैरे ला था दाऊदा मियां नैरे जा राऐ
किदी म्हारे करणो नाई बण सुंगरौ रो मासौ
मौकते थे पौइतौ म्हारे मौकते थे छासो
समभौ ले नरजीए बोले बताए
बोले बताए पाऊ मौड़ै खै तेरै
छ: महीनै रे बेटकी रे पांईदे नै मेरै
छ: महीनै री बेटकी रे कौरोयौ नै भौरे
नाना बूड़ू दाचौ धीऊ शाकरै कौरे
छ: महीने री वेटकी रा कौरीपो नै धाका
दादा बूड़ू धाचौ धनी देवरो काका
कुण तेरे गौड़ी दा गड़ाईतो कोले
छाड़ो मेरी बरासली खी उढ़दे जोड़ै
कोलीया गड़ाईत फूको नै बोले
भाई पूछे खडकू नवै धौरे रे ओलै
भाई तैणै खोड़कुए दूरौ दू शाओ
बेठू मेरी बौहणी कैई जोगो आओ
बोंलू ला बोलणौ जाईयौ नै ठौरे
लाड़े टांडूए जौलदे मियां दाऊदौ गा मौरे
भाए मानौ ला खौडकू मुकीयै हीऔ
एट देवा मातीया का दाऊदौ दो कीयो
सुगंरी रो सुगंटु गौ सौऊंको फीरे
मीयां हेड़ा दाऊदौ दुई बीलै चीरे
एक लाए कराड़ीये लागे लोहू रे फीशौ
दूजौ लाए कराड़ांए लाटो तांकड़ा धीशौ
गौड़ी रै लाए गड़ाईतै फूके टयाले
जौले गोए बरासतुओ घ्याणो तारे
धनीया बोलू देवरा सू ची का तेरे
मौड़ै ओ मास्ती रै कौरे सकेरै
बाड़ी रै बड़ेहुआ तू सौ राजे री कीया
तीणो त्याणो जुगटु चाणे सते सीया
गौड़ो री छेवड़ीयो मेरीयो माओ
एक चौरु पाणी रो मुखै नाईणे खी लाओ

गौड़ो री छेवड़ीयो कौरो सकेरै
रुंदे कैई ने नरजीये सुची का तेरै
रुंदे ने भूरदे डौलदे नै आशु
री छेवड़ीयो हांव मास्ते ओसू
ख्वुरा बोलौ तांव बऊऐ जलने नै देऊ
धौने मेरे लोफड़ा ताव तेसखी फरैंऊ
एक बोलने बोलीयो दुजे वोलीयो ऐती
धने दौंदा देवरौ भाई खौड़कू जेती
बादे चाले बरासलू मावला माठू
गिने देऊ भानजी खौ दशयो ढाठू
चुगौ मेरी जुगटु पौउड़ें चालो
मांचे आऐ नरी रै शौरु रे जे छालो
भाऐ पूछौ खौड़कू जुगटु रै ओलै
टाटौ मेरी बदणीए मुईखै बौलै
टाटो तेरौ भाईया कुछ शौ की रे जौलू
जुगौ गाओ नरजे बाडौ शाकरौ गुड़ौ
पोरु निओ इओ बेटकी खौरे पौड़े रुड़ौ
शाशू तूऐ शौवरै घरौ खी जाओ
धनीया बोलू देवरा तूऐ उकला लाओ
आगी री लागी लऊकै शांगलौ पाओ
सोलह बोलू शावणीयौ तूए मेरीयौ माओ
सांस डेवा सैरगै मांस भोगौ ले आगौ
हाड्डी रै रुड़कु रौऐ माटी रै भागो ●

हिन्दी अनुवाद

मेले में आए हुए लोग अब इकट्ठे होकर नाचते गाते हैं और देवी नरजी का भारथ (कहानी) गाते हैं।। जौ की खेती पक गई थी और नरजी अपने नौकरों को साथ ले हाथ में घुंघरुओं वाली दराटी ले जौ काटने खेत में गई। नौकरों को खेत दिखाकर उनको काम देकर खुद घर की ओर चल पड़ी। नौकर जौ काटने लग पड़े। जब वह वापिस आ रही थी तो उसे कहीं से धीमी आवाजें सुनाई पड़ी और फिर वह नौकरों से कहने लगी तुम जरा चुप हो जाओ मुझे अपने पति दाऊद का नाम सुनाई पड़ रहा है कोई शायद उन्हें पुकार रहा है।

नरजी घबराई हुई एक खेत से दूसरे खेत में छलांगे लगाती हुई घर की तरफ भागी कहीं हाथ में जौ की और कहीं गेहूं की डालियां उखाड़ कर आ गई। गांव की औरतें यह सब देख रही थी और उसे गालियां देने लगी कि गेहूं और जौ के खेतों के बीचों बीच जा रही है और अनाज खराब कर रही है।

नरजी जब घर पहुंची तो उसे मालूम हुआ कि शेर जैसे बलवान उसके पति को बाघ की तरह बांध कर लोग घर लाए गांव के लोगों ने उसके जख्मी शरीर को आंगन में रख दिया। रोते रोते नरजी कहने लगी कि मैं तुझे इतना रोक रही थी कि हमने जंगली सूअर का मांस क्या करना है हम रूखी सुखी ही खा लेंगे। हमारे घर में घी दूध लस्सी दालें सब कुछ तो था। फिर भी तुम नहीं माने। मियां दाऊद अपनी पत्नी की ओर देखता और हाथ बढ़ाता है तो नरजी कहती है मैं अपना वायदा नहीं भूली। जीना भी तुझ संग था मरूंगी भी तेरे ही सग। मियां अपनी छोटी बेटी की तरफ देखता है। नरजी उसकी बात को समझ गई और कहने लगी कि हमारी नन्ही बच्ची को उसके दादा दादी और नाना नानी दूध घी शक्कर से पालेगें।

तुम छ: महीने की बेटी को छोड़ने का गम न करो अपनी आत्मा पर बोझ मत ले जाओ इसका चाचा धनी राम इसे अपनी बेटी की तरह देखेगा। मैं इससे वचन लेती हूं। नरजी वहां बैठी गांव वालों से कहने लगी कि अब आप मेरे मां बाप के घर गांव बरासली को दो आदमी भेजो और उन्हें पता दो कि उनकी लड़की सती हो रही है।

जब उनके गांव के दो हरिजन जाने लगे तो उनसे कहने लगी कि तुम शोर न मचाना चुपके से मेरे भाई को नए बने हुऐ घर के पास बुलाना तभी उसे सब बात कहना। नरजी के भाई ने उन्हें दूर से आते हुऐ देख लिया और कहने लगा कि मेरी बहन के काम करने वाले क्यों आऐ हैं और उनसे पूछने लगा कि तुम क्यों आये हो। उस पर एक ने कहा कि अब बोलना ही पड़ेगा पर आप डर मत जाना अपने आप पर काबू रखना। आपकी बहन नरजी ने सती होने की ठानी है क्योंकि उनका पति अब इस संसार में नहीं रहा।

भाई खड़कू अपनी छाती पीट लेता है और कहता है कि मियां दाऊद को क्या हो गया था। हे भगवान तूने यह क्या कर दिया!

उस पर नौकर कहने लगा कि मियां दाऊद सुअर का शिकार खेलने गये थे आचानक उन्होंने एक आदमी की परछाई देखी और थोड़ी ही देर में एक सूअर उन पर झपट पड़ा पर मियां दाऊद ने उसे कुलहाड़ी से मारा उतने में एक सूरनी आई।

जैसे ही वह उसे मारने दौड़े तो उन्हें एक सफेदपोश आदमी दिखाई दिया और मियां दाऊद ने सोचा कि यह जरुर कोई देव है और उनका अन्त हुआ।

सारे गांव वाले इकट्ठे हो गए उनसे कोली (हरिजन) ने कहा कि हे बरासली गांव के लोगो तुम्हारी महान लड़की नरजी अपने पति के साथ मास्ती(महासती) हो रही है आप सब धन्य हैं।

दूसरी तरफ — नरजी अपने देवर से कहती है कि अब सोचो मत शव यात्रा की तैयारी में लग जाओ और मेरे लिए भी सुन्दर पालकी बनाओ।

उसके बाद वह बढ़ई के पास जाती है कि तू तो राजा के महलों को बनाने वाला है मेरी पालकी को अति सुन्दर बनाना, लगे जैसे कोई बारात जा रही हो। हां देवी मैं वैसा ही बनाऊंगा। उसमें सारे देवी-देवताओं और राम की पत्नी सीता देवी की मूर्तियां भी बनाऊंगा।

उसके बाद वह गांव की औरतों से कहती है हे मेरे गांव की मां और बहनों अब मुझे नहलाओ मेरा पूरा श्रृंगार करो।

गांव की औरतें कहती हैं कि तुझे क्या हो गया है तू तो रो भी नहीं रही है। क्या पागल हो गई है जो तुझे रोना भी नहीं आता हमारा तो कलेजा फटा जा रहा है। उस पर नरजी हंस करकहती है मैं न रोऊंगी, और न मुझे कोई गम है। हे मेरे गांवकी औरतो! मैं तो अपने पति संग जल जाऊंगी। उसके साथ सती हो जाऊंगी। फिर रोना धोना क्या।

नरजी का ससुर नरजी से कहने लगा कि –हे मेरे घर की शोभा, मेरी बहू मैं तुझे जलने नहीं दूंगा। तेरी शादी मैं अपने छोटे बेटे धनी राम से करांऊगा।

हे मेरे पिता समान ससुर जी एक बार तो आप ने बोल दिया भगवान के लिए अब ऐसा अपशब्द मुंह से न निकालना क्योंकि देवर धनी राम मुझे अपने भाई खड़कू के समान है ऐसा पाप मैं सोच भी नहीं सकती।

उसके पीहर वाले बरासली गांव के और उसके मामा साठू राम भी आ गए। जिस तरह से ओले आते हैं उसी तरह बहुत तादाद में। उसके पीहर वाले आए, मामा साठू पूरा श्रृंगार का समान और मसरुदरया नामक कपड़े का ढाठू लाया। हे मेरे गांव बदशाल के लोगो अब मेरी पालकी उठाओ। मेरे मायके वाले और मामा भी आ गए हैं। छोटा भाई खड़कू जोर-जोर से रोने लगा और पालकी के पास आया और कहने लगा कि बहन तुम क्यों सती हो रही? तुम्हें किस बात की मुश्किल है जरा अपनी छोटी बच्ची का भी तो सोचो। जाने वाला तो चला गया। हे मेरे भाई! मत रो मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही हूं तुम सब मेरी बच्ची का ख्याल रखना।

नरजी अपनी नन्ही बेटी को खूब प्यार करती है और शक्कर उसके मुंह में देती है और अपनी सास को कहती है कि अब इसे यहां से ले जाओ क्योंकि तेज धूप मेरी यह नन्ही बच्ची नहीं सह पा रही है, इसलिए इसे घर ले जाओ। अपनी ममता का गला घोंट कर वह वहां से चल दी। पालकी शमशान की तरफ चल पड़ी। जितने भी गांव के श्वसुर और सास हैं वे घर चले जाओ मैं आपको अपना आखरी नमस्कार कहती हूं। हे मेरे भाई समान देवर तुम चिता को आग लगाओ। नरजी आंखे मूंद सोलह रूपी काली माता व दुर्गा माता की प्रार्थना करने लगी कि हे मां मुझे शक्ति दो। आग की लपटें आकाश को छूने लगी एक देवी ने अपने आप को पति के साथ सती कर दिया अपना नाम महासती नरजी के रूप में अमर कर गई।

आत्मा तो स्वर्ग में चली गई और मांस को अग्नि ने अपना भोजन बनाया और हड्डियां माटी के हिस्से में रह गई।

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

कुल्लू क्षेत्र

घेशू लोंभिया

यह गीत एक दुखद घटना पर आधारित है। कुल्लू के कुछ लोग पुरुष, स्त्री—चंबा में जंगलात के ठेकेदार के साथ काम पर गए थे। उन में घेशू और उनकी पत्नी भी थी। सुन्दर नाम का एक युवक घेशू की पत्नी पर आशिक हो गया। वह घेशू को शराब पीने के बहाने गांव में ले गया और वहां उसे मार दिया। परन्तु घेशू की पत्नी उस के हाथ न आई। वह किसी तरह वहां से भाग कर घर पहुंची। उसी ने पति के दुःख में यह गाना गाया जो लोकगीत बना :-

घेशू लोभीया, जान धीनी जौऊआ रे खूड़ा
लोभा रा न्हौठा थी बोणा कोमा बे , घौरे आपणा छूड़ा
झूरी लोभ रौह् सौदा बे, माण्हू री काया रा धूड़ा
देशा छौड़िया प्रदेशा बे जाणा, कुणी रा खोडुआ बूरा
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, घौरा छुटी बुढलू मामा
घौर छुट्ट त्राई भूईंरा, होर छुट्ट बूढलू मामा
होछे छुटे बालक मेरे, बाबू छुट्ट मारदा हाका
कुणी रा खोडुआ पापी सुंदरा, देईरा नी थी कोसी बे धाका
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, होथा रे कांगणू देनू
देऊआ बे देनू बौकरू, देवी बे सनागणू देनू
मारदा मौत ड़े पापी सुंदरा, लोका रे देशे
कुण धाचला आमा बापू बे कुण जाला तिन्हारी गेशे

हे घेशू प्रेमी, जान दी (तूने) जौ के खुड़ में (घास और पशु रखने के कमरे में) खुशी
का गया था तू जंगल के काम, घर में तेरे काफी था(कमी न थी)।
प्रेम- प्यार जीवित रहा है हमेशा के लिये मनुष्य के शरीर की धूलि बन गई
देश छोड़ प्रदेश गया, किस का बुरा(काम) खड़ा हो गया
मारना मत हे पापी सुंदर, घर में छूट (रह) गई बूढ़ी मां
घर छूट गया तीन मंज़िल का, और छूटा बूढ़ा मामा
छोटे छूट गये बालक मेरे, बाप रह गया मारता आवाजें
किस का पाप खड़ा हुआ (कारण बना), दिया नहीं था किसी को धक्का (भी)
मारना मत हे पापी सुंदर, हाथ के कंगन दे दूं
देवता को दूंगा बकरा, देवी को सोने का कंगन दूं
मारना मत हे पापी सुंदर, लोगों के देश में
कौन पालेगा मां बाप को, कौन जाएगा उन की देख भाल के लिए □

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

फूला देई ब्राह्मणीए

भोंतर में मेला लगा था। लोग पी कर मस्त थे। विश्राम गृह में मंत्री महोदय पधारे थे। तभी एक सरकारी अधिकारी को बाहर अपनी पुरानी प्रेमिका फूला देवी के दर्शन हुए। लड़की 'राउगी नाला' गाँव की विवाहित स्त्री थी। उसकी गोद में एक वर्ष का बच्चा था। अधिकारी ने फूला देवी को बच्चे समेत जीप में डाला और जीप दौड़ा कर उसे ले भागा। साथ कुछ और मुस्टंडे हो लिए। अभी जीप बहुत दूर न गई थी कि एक खड्ड में गिर गई। सभी सुरक्षित थे। केवल फूला देवी दुर्घटना का शिकार हुई।

फुला देई बाह्मणीए, ठांडे कमरे
ठारा पीई बोतला, ठांडे कमरे
ढेके रे बोले तू सूती नींदरे
आपू रौही सुतिया, छोली खाई बांदरे
सोंझा ढीसी थी लोगड़े, दोथी शांदरे
जात्र लागी थी भूइरा, बाबू चंदरे
राउगी नाले री बाह्मणीय, पाई जीपा आंदरे
तू बी बेठी थी बाह्मणीए, जीपा आंदरे
सड़का शोटिया बाह्मणीए, जीपा नाल जोंदरे
आपू पूजी तू नाला न, शोहरू झीफा ज़ोंदरे
लाश पूजी तेरी बाह्मणीए, ठाणा हांदरे
सोढ़ खाई थी बाबूए, नेगी लोम्बरे

हिन्दी अनुवाद

फुला देई मेरी ब्राह्मणीए, ठण्डे कमरे में,
अठारह पी ली थी बोतलें(शराब की) ठण्डे कमरे में
खेत के किनारे सोई तू गहरी नींद में
आप तो सोई रही, मक्की खाई बंदरों ने ।
शाम को मारा था तुझे डण्डे से प्रात: लकड़ी विशेष से
मेला लगा था भूंतर में, बाबू चंदरे ने
राउगी नाले की ब्राह्मणी डाल दी जीप के भीतर
तू भी बैठी थी ब्राह्मणी जीप के अन्दर
सड़क छोड़ के हे ब्राह्मणी, जीप गिरी नाले मे
खुद तो तू नाले में पहुंची, लड़का झाड़ी में फंस गया
लाश पहुंची तेरी थाने के अन्दर,
रिश्वत खाई बाबू ने, जैलदार और लम्बरदार ने ।

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

भियाणीए

भियाणी नाम का एक लोक गीत बहुत प्राचीन समय से चला आ रहा है। असल घटना क्या रही होगी अब यह मालूम नहीं है परन्तु घटना बड़ी दुखद रही होगी यह गीत के शब्दों से स्पष्ट है। गीत की करुणा भरी शब्दावली देखने योग्य है।

हांइये भियाणीए, कोने कीए काहणी शूणी
याणी बाली बे हुई मौता, चीड़ी डाला री रूणी
छाती लागा भौलका, मना री बूझुणी कूणी
नाला धारा भौगटे नेंदीए, जोते री बागरे पूणी
झुमणु भौरिया केरू हुंडणा, नाई थी रांवड़ी जाणी
जेबे लागी तेरी सोठणीं, छाती लाई कुटणी घाणी
खीर गगा रा जायरू, नीना ब्यासा रा पाणी
फूला सेही थी होलकी, गोला थी विन्हीया लाणी
याद लागी एंदी झुरकू, कुणी बुद्धिए रहाणी
हौछू नीभे बौहया, हेरिदी हौछिए काणी
तू न्हौठी मौरिया, याद सा बिसरी आणी
हाड़ शुके पिडे रे, लोहू रा निरशा पाणी
कुणी बुझणा सेंइसा मेरा, गोला लागा हेरिदा पाणी
भियाणी सियाणुई, गीत रौही याणी री याणी □

हिन्दी अनुवाद

अरी भियाणी, कानों में यह क्या कथनी सुन ली
नौजवान की मौत हुई, चिड़िया शाखा पर रो दी है
छाती लगी है जलने, मन की (बात) समझेगा कौन
नाले धारों में तड़फते रहे, जोत की वायु ने तरसा दिया
परदा डालकर किया था चलना, नहीं था अच्छी तरह पहचाना
जब लगी थी तेरी याद, छाती पर लगे कूटने धान
खीर गंगा का चश्मा, नीला ब्यास का पानी
फूल की तरह थी हल्की, गले में (हार की तरह) पिरो कर लगा दूं
याद लगी है आने झपक कर, किस बुद्धि से भुला दूं
आंसू बह कर खत्म हुए, देखते हुए भी अन्धे हो गये हैं
तू गई है मर, याद नहीं भूलने में आ रही
हड्डियां सूख गयीं शरीर की, लहू का (बन गया) साफ पानी
कौन समझे संशय मेरा, गले में पानी नज़र आ रहा है
भियाणी (की याद) बूढ़ी हो गयी, गीत रहा अभी जवान का जवान●

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

चिड़ूआ

यह प्रणय गीत है। प्रायः स्त्रियां और पुरुष साथ साथ गाते हैं। गाते हुए स्त्रियां चिड़ूआ (हे पक्षी) का सम्बोधन करती है और पुरुष चिड़ीए (हे चिड़िया) कह कर गाते हैं।

पु० छौड़ी देणी गराहुंजी चिड़ीए, चौल उथड़ी धारा
चौल उथड़ी धारा चिड़ीए, चौल उथड़ी धारा
स्त्री मन लागला दूहीरा चिड़ूआ, चौल उथड़ी धारा
चौल उथड़ी धारा चिड़ूआ, चौल उथड़ी धारा

देश नी रौहू जीणे-वे चिड़ीए, बोणा रौहणा खारा
ज़ोता ज़ोता न हुंडणा चिड़ूआ, बाल्हा हुंडणा फारा
वाल्हा हुंडणा फारा चिड़ूआ
छोड़ी देणा ए साथरा चिड़ीए, भियाणू निकता तारा
नाई छुटदा साथरा चिड़ूआ, सोंग सदका म्हारा
सोंग सदका म्हारा चिड़ूआ
पाखले आटो पाहुणे चिड़ीए घौर भौरुआ सारा
घौर भौरुआ पाहुणे चिड़ूआ, कौखे जांइडू म्हारा
कौखे जांइडू म्हारा चिड़ूआ
ज़ोंघे हुंडणा शोभलो चिड़ीए, देश भालना सारा
चिड़ू उड़ू मेरा धाउड़े लोभा न, सारा मुल्क निहारा
सारा मुल्ख निहारा चिड़ूआ
लोभा-शोभा-वे साउग चिड़ीए, नाला तोपली धारा
छेके मिलड़े मने रे चिड़ूआ, गौला शोभिला हारा
गौले शोभिली हारा चिड़ूआ
को न्होठा दूरा देशा बै चिड़ूआ, पाणी ओकती आला
कौकड़ी मेरी लड़फड़ाउई, कालज़े लाई छाला
कालज़े लाई छाला चिड़ूआ
देऊआ रा सा मोहरु चिड़ीए, तेरा मूंहड़ू काला
कौधी बोणना ए तौ बी चिड़ीए, मेरे गोला री माला
मेरे गोला री माला चिड़ीए
तेरी मेरी ए जोड़ी की लोभीया, घुंडी-मुड़ी रा ढाला
तेरे एई लोभा रा चिड़ीए, बिणी सुरे मताला
बिणी सुरे मताला चिड़ीए
चिड़ू रा लेणा जलम लोभीया, दुही रौहण डाला
रौई तोसा रे डाला चिड़ूआ, रौई तौसा रे डाला।

हिन्दी अनुवाद

पु० छोड़ देनी ग्राम-वादी हे चिड़िया, चल ऊंचे पर्वत पर
चल ऊंचे पर्वत पर चिड़िया, चल ऊंचे पर्वत पर
स्त्री मन लगेगा दोनों का हे पक्षी, चल ऊंचे पर्वत पर
चल ऊचे पर्वत पर पक्षी, चल ऊंचे पर्वत पर

देश नहीं रहा जीने के (काबिल) हे चिड़िया, वन में रहना अच्छा है
पर्वत पर्वत पर चलेंगे पक्षी, मैदान का चलना अधिक (कठिन) होता है
मैदान का चलना
छोड़ देना यह विस्तर चिड़िया, भोर का निकला है तारा
नहीं छूटता विस्तर पक्षी, संग हमेशा का है हमारा
संग हमेशा का
अजनबी आये महमान चिड़िया, घर भर गया सारा
घर भर गया महमान से पक्षी, कहां है प्रियतम हमारा
कहां है जांईडू (एक पक्षी है जो प्रियतम का प्रतीक है)
पैर से चलना अच्छा है चिड़िया, देश देखना है सारा
पक्षी उड़ा मेरे अधूरे प्रेम में, सारा देश अंधेरा (हो गया है)
सारा देश अंधेरा
प्यार और शोभा के लिये साथ (जरूरी है) चिड़िया, नाले ढूंढेगी धार में
शीघ्र मिल अरे मन के पक्षी, गले में सजेगी हार
गले में सजेगी
कहां गया दूर देश को पक्षी, पानी ज़हर वाला (है वहां)
हृदय मेरा तड़फ रहा है, कलेजा मार रहा छलांगे
कलेजा मार रहा है छलांगे
देवता की मूर्ति सा है चिड़िया, तेरा मुख श्याम (काला)
कब बनेगी तू भी चिड़िया मेरे गले की माला
मेरे गले की माला
तेरी मेरी यह जोड़ी प्रिय, सिर से पैर तक बराबर है
तेरे इस प्रेम में चिड़िया (मैं) बिना शराब के मतवाला हूं
बिना शराब
पक्षी का लेंगे (हम) जन्म प्रिय, दोनों रहेंगे शाखा पर रई और तोंस (वृक्ष विशेष) की शाखा पर,
रई, तोंस की शाखा पर●

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

ओबूआ.........औज़ रुहणी म्हारे

यह श्रम गीत है। जेठ–आषाढ़ में जब खेतों में धान रोपे जाते हैं तो घुटनों तक खेतों में पानी होता है। धान की पौध एक छोटी क्यारी से उखाड़ कर बड़े–बड़े खेतों में पुन: रोपी जाती है। रोपने के श्रम-प्रधान काम की थकावट को गीत गा-गा कर दूर किया जाता हैं। ओबू और ओबी किसी पुराने जमाने में प्रेमी प्रेमिका हुए हैं, जिनका प्यार इसी परिवेश में पनपा था और अब उनके प्यार की याद लोकगीत में ताज़ा है। धान रोपने के कार्य को 'रूहणी' कहते हैं। रुहणो खेत के एक किनारे से आरम्भ होती है और दूसरे किनारे गाने के साथ समाप्त होती है।

स्त्रियां—हांड़े ओबूआ
पुरुष—ओबे हो
स्त्रियां - छेता लागी औज रुहणी म्हारे
पुरुष—रुहणी म्हारे, रुहणी म्हारे
स्त्रियां - हाईं ए ओबीए
पुरुष—ओबे हो
स्त्री– तू बी लोड़ी आई म्हारे जुआरे
म्हारे जुआरे, म्हारे जुआरे
हांड़े ओबूआ .....औबे हो
ल्हानी ता लागी हौछी रे शारे
नाईं जाणदा हौछी रे शारे
हाईं ऐ ओबीए......ओबे हो
सोंझा लोड़ी आई पाहुणी म्हारे

शोभली झूरी, पाहुणी म्हारे
हांड़े ग्रोबूश्रा .....ग्रोबे हो
ग्रौज़ लोभी भालदे डूबे दिहाड़े
ज़ेठा-शाढ़ा रे, लोगे दिहाड़े
हाईएं ग्रोबीए ग्रोबे हो
इन्हा छेता पौज़ले, गौरी चुहारे
खीसे भौरी ग्राणी, गौरी चुहारे
हांड़े ग्रोबूश्रा .... ग्रोबे हो
मेली लोड़ी तू होरी तुग्रारे
ग्रौज के बिछड़, होरी तुग्रारे
हाईए ग्रोबीए .. ग्रोबे हो
छेता निभी एबे, रूहणी सारे
छेता रे पूजे, दूजे कनारे
स्त्री. पु- हांडे ग्रोबूग्रा हाईंए ग्रोबीए
घौरा पुजणा, कुणी नुहारे
पुजणा होला, कुणी नुहारे

हिन्दी अनुवाद

स्त्री ग्ररे ग्रोबू
पु०—ग्रोबे हो
स्त्री—खेतों में लगी ग्राज रुहणी (धान रोपाई) हमारे
पु० – रुहणी हमारे, रुहणी हमारे
स्त्री—ग्ररी ग्रोबी
पु०—ग्रोबे हो
स्त्री तू भी ग्रा जाना, हमारे जुग्रारे (सांझे काम पर। हमारे जुग्रारे (सहायता के लिए बुलाए लोगों द्वारा काम)
ग्ररे ग्रोबू......ग्रोबे हो
नाजुक ग्रांखों के इशारे लगे हैं
(तू) नहीं जानता, ग्रांखों के इशारे
ग्ररी ग्राबी.. ...ग्रोबे हो
शाम को चाहिए ग्राई, महमान हमारे
सुन्दर प्रेमिका, महमान हमारे
ग्ररे ग्रोबू......ग्रोबे हो

प्रेमी को देखते आज, डूब गए दिन
जेठ-आषाढ़ के लम्बे दिन (बीत गए)
अरी ओबी..... ओबे हो
इन खेतो में उपजेंगे, गरी और छुहारे
जेब में भर के लाना, गरी और छुहारे
अरे ओबू......ओबे हो।
मिल लेना तुम, अगले इतवार को
आज के बिछुड़ कर, अगले इतवार को
अरी ओबी......ओबे हो
खेतों में समाप्त हुई अब, रूहणी सारे (खेतों में)
खेतों के पहुंचे, दूसरे किनारे पर
स्त्री० पु०- अरे ओबू......अरी ओबी
घर पहुंचेगे, किस शकल में
पहुंचना होगा, किस शकल में ●

संग्रहण व अनुवाद
श्यामा ठाकुर

कुल्लू क्षेत्र

हेसरू बोला......हे सार

यह गीत बड़े बड़े लट्ठों, शहतीरों, पत्थरों को घसीटते हुए गाया जाता है। शहतीर में लम्बे रस्से बांधे जाते हैं। रस्सों के दोनों ओर लोग खड़े होते हैं। एक आदमी गीत के टप्पे बोलता है, शेष सभी केवल 'हे सार' कहते हैं और उसके साथ रस्सा खींचते हैं। टप्पे बोलने वाला व्यक्ति बड़ा चतुर, कुशल, योग्य कवि और गायक होना चाहिए, क्योंकि वह गीत में मनोरंजकता लाता है। एक पंक्ति को कई खण्डों में बांटता है, हर खण्ड को अनेक बार बोलता है, हर बार लोग 'हे सार' कहते हैं और शहतीर को खींचते हैं। हर खण्ड के शब्द के बाद यह आकांक्षा रहती है कि वह क्या बोलने वाला है, जैसे—तेरे खेतों में ......हे सार, तेरे खेतों में...हे सार, आज की रात ... हे सार, आज की रात...हे सार, हम मिलेंगे...हे सार, हम मिलेंगे .. हे सार, निपट अकेले... हे सार"। कई बार वह अश्लील भी बोलता है, परन्तु अवसर को देखकर। 'हे सार' का कोई अर्थ नहीं है। सम्भवत: यह शब्द आरम्भ में 'हे ईश्वर' था। बाद में 'हे सार' बना। लोग भारी काम करते हुए ईश्वर से उस की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते थे।

हेमरू बोला......हे सार
रौई रा दार......हे सार
जोर नीं लांदा .. हे सार
देऊआ री कार......हे सार
बुटड़ी पांधे......हे सार
बेठा घुंघता......हे सार
पाह्णी ढौकिया......हे सार

मसै उकता . .. हे सार
रौई रा भांढा, घशीटणा पोऊ, बारं-बार ......हे सार
तू थोकू ता, डिगणे दे, हाऊं तैयार ......हे सार
ज़ोर खोंज़ा ड़े, लांगणी पोई, उथड़ी धार ......हे सार
तगड़े बोणा, भोनी नी लोड़ी, आपणी ठार . ...हे सार
बेशदे मौता, छोकरे यारो, कोम कमोणा
रात-दिहाड़ ... हेसरू यारा, हे सार
छिड़ी फुकिया, भौसा री ढेरी, पिंडे फुकिया
औगी री छार .. हेसरू बोला, हे सार
केलू री बूटी, एथ की उठी, एकी घशीटदे
शौऊ हज़ार .. ...हेसरू बोला, हे सार
शाढ़ू भाई, एह पभ्भाई, डौरदे मौता
न्हौठी दिहाड़ ... हेसरू बोला, हे सार
बोडे-बोडे रे, तोंतणा ढिलुए, ढेलीदे लागे
छोकरे यार हेसरू यारा, हे सार
हैसी करिंडा, लौढ़ खाऊ मिडा, भांदल सूर
काउणी खार...... हेसरू बोला, हे सार
रज पीई ड़े, तेरे धौरा-न, सूरा री शुंघा,
एकी रे लागे, हरिदे चार
हेसरू यारा, हे सार।

हिन्दी अनुवाद

हेसरू बोला......हे सार
रई (वृक्ष विशेष) की शहतीर है......हे सार
जोर नहीं लगाते (तुम) ...हे सार
देवते की द्रोही है (जोर लगाओ) ......हे सार
वृक्ष पर......हे सार
बैठा कबूतर..... हे सार
शाखा पकड़ कर......हे सार
मुश्किल से चढ़ा... हे सार
रई का खम्बा है, घसीटना पड़ेगा, बार-बार ...हे सार
तू थक गया तो, रहने दे, मैं तैयार हूं ......हे सार
जोर निकालो, पार करनी पड़ेगी, ऊंची धार......हे सार

तगड़े बनो, तोड़ मत देना, अपनी ठार (घुटने से नीचे का भाग) ......हे सार
बैठो मत, अरे छोकरो, काम कमाओ
रात दिन ...हेसरू यार, हे सार
लकड़ी जला कर, भस्म की ढेरी, शरीर जला कर
आग की क्षार......हेसरू बोलो, हे सार
दियार का वृक्ष,यह क्या हुआ,एक को घसीटने हैं सौ हजार ..हेसरू बोलो..हे सार
हे शाढ़ू भाई, अभी पहुंचा दी, डरो मत
बीत गया दिन......हेसरू बोलो, हे सार
बड़ों- बड़ों के यतन ढीले पड़ गए, मुकाबला हो रहा है
(अब) छोकरों का......हेसरू यारा हे सार
हेसी (जो ढोल बजाता है) कारिंदा, भेड़ा खाया मेढ़ा,
(पूरा) घड़ा सुरा का (पी लिया), कंगनी (चावल) का (पूरा) भार
(खा लिया) हेसरू बोलो हे सार
काफी पी ली तेरे घर में, सुरा की घूंटें
एक के लगे हैं दिखने चार......हेसरू यारो, हे सार। ●

संग्रहण व अनुवाद
डा० बलदेव कुमार

हां लाम्बू लोहरा

पिछले गीत 'हेसरू बोला हे सार' में आदमी जल्दी ही थक जाते हैं। कारण यह है कि 'हे सार' शब्द शीघ्र-शीघ्र आता है और लोगों को शहतीर जल्दी-जल्दी खींचना पड़ता है। पिछले गीत की पंक्तियों में जहां-जहां अर्ध-विराम है वहीं 'हे सार' शब्द कहा जाएगा और खींचा जाएगा। लिखते हुए स्थान को कम करने के लिए ऐसा नहीं दिखाया है परन्तु थकने पर बैठ कर आराम नहीं कर सकते। यह सारे दिन का काम होता है और अन्धेरा होने से पहले काम पूरा करना जरूरी है। अत: थकान दूर करने या सुस्ताने के लिए गीत बदल दिया जाता है। तब 'हां लाम्बू लोहरा' गीत गाते हैं। इसमें जब दो व्यक्ति एक पंक्ति बोलते हैं तो शेष लोग पूरी पंक्ति दोहराते हैं, और पद के अन्त में शहतीर आदि खींचते हैं। 'लाम्बू लोहरा' शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं है। परन्तु इसे 'लटकाना', 'लमकाना' 'देर करना' आदि अर्थों में जाना जाता है। दीर्घ-सूत्री के भाव में यह शब्द लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होता है। खींचने में सुविधा के लिए दो व्यक्ति निर्देशन-संकेत भी देते हैं।

दो व्यक्ति—हां लाम्बू लोहरा
सभी—हां लाम्बू लोहरा
दो व्यक्ति—बूटी पोई गोहरा
सभी बूटी पोई गोहरा

चेका हुआ दोहरा, चेका हुआ दोहरा
सीधा केरा मोहरा, सीधा केरा मोहरा
रौशा केरा कोहरा, रौशा केरा कोहरा
मांढा पोऊ चाहड़ा, मांढा पोऊ चाहड़ा
खोंजा ड़े कराड़ा, खोंजा ड़े कराहड़ा
घौरा रौहू चनाहड़ा, घौरा रौहू बनाहड़ा

बेठा सा बनाहड़ा, बेठा सा बनाहड़ा
बौता पोऊ टोहरा, बौता पोऊ टोहरा
देऊ फिरू समोहरा, देऊ फिरू समोहरा
बड़ीऐ भ़लौहरा, बड़ीऐ भ़लौहरा
दिहाड़ी दपौहरा, दिहाड़ी दपौहरा
केण्डी खोंजी टौहरा, केण्डी खोंज़ी टौहरा
कुणी पाणा पौहरा, कुणी पाणा पौहरा
जांके जेल्हे सौहरा, जांके जेल्हे सौहरा
तकड़े यार गौहरा, तकड़े यार गौहरा
चौका ड़े फलौहरा, चौका ड़े फलौहरा
देऊआ रा फलौहरा, देऊआ रा फलौहरा।

हिन्दी अनुवाद

दो व्यक्ति—हां लाम्बू लोहर
सभी—हां लाम्बू लोहरा
दो व्यक्ति—वृक्ष पड़ा रास्ते में
सभी—वृक्ष पड़ा रास्ते में
कमर हो गई दोहरी
सीधा करो मोहरा (शहतीर का अग्र भाग)
रस्से को करो इकहरा,
शहतीर पड़ गया चट्टान पर
निकालो अरे कुल्हाड़ा
घर में रह गया बढ़ई
बैठा है बुनतर
रास्ते में पड़ गया गढ़ा
देवता अनुकूल हो गया
बड़ी हो आकांक्षा है
दिन दोपहरे
कैसी निकाली ठाठ
कौन करे पहरा
सुस्त लोग शहर में (रहते हैं)
तगड़े लोग गांव में
उठाओ अरे ध्वजा
देवता की ध्वजा।

संग्रहण व अनुवाद
डा० बलदेव कुमार

घूघती (घुग्घी)

यह भी श्रम गीत हैं। परन्तु वास्तव में यह श्रम नृत्य-गीत है। इस में गाते भी हैं और नाचते भी। ढोल, नगारा, शहनाई बज रही होली है। दो व्यक्ति घूघती के बोल कहते हैं। शेष सभी लोग दो बार घू . घ.. ती, घू...घ ...ती कहते जाते हैं, और दोनों बार रस्सा खींचते हैं। अर्थात् दो बार एक साथ 'घुघती' शब्द के साथ रस्सा खींचते हैं। सभी खींचने वाले दो भागों में बंट जाते हैं, अर्थात् 1,3,5,7,9 आदि एक टोली और 2,4,6,8,10 आदि दूसरी टोली। जब बोल बोलने वाले दो व्यक्ति बाजे के साथ गीत के टप्पे गाते हैं तो एक बार पहली टोली के सभी लोग हाथ से रस्सा छोड़ देते हैं। हवा में दोनों हाथ नाचते हुए फैलाते हैं और नाचते हुए अपने आप एक चक्कर मार कर 'घुघती' शब्द के पहुँचने तक रस्सा पकड़ते हैं और शेष सबके साथ उसे खींचते हैं। दो बार साथ-साथ 'घुघती' शब्द सहित। दूसरे पद बोलने पर दूसरी टोली ठीक वैसा ही नाचती हैं।'घु घती' का अर्थ घुग्घी पक्षी है। यह पक्षी चहचहाते हुए शरीर को हिलाती है जैसे नाच रही हो।

दो व्यक्ति –घू भाइयो घूघती
सभी —घूघती, घूघती
दो व्यक्ति – घूघती न्हौठी मांडी सराजा
सभी—घूघती, घूघती
दो व्यक्ति – तौखा न आणू सकेतड़ बाजा
सभी घूघती घूघती
घू भाईयो घूघती
तौखा-न आणू सकेतड़ बाजा
तेबे भीरी सो चुड़चड़ांदी
उडिया न्हौठी बाजा बजांदी
घूघती घूघती

सो पुहती पिती र काज़ा
सुरा थी पिंदा तौखा रा राज़ा
घूघती घूघती
घूघती बेठी चाकटी पिंदी
छिड़ी मूले ता चाकटी सिंघी
घूघती घूघती
भाइड़ भौरे घूघू पाज़ा
तौखा-न श्राणू लाहुली बाज़ा
घूघती घूघती
घू भाईयो घूघती
तौखा-न श्राणू लाहुली बाज़ा
घूघती घूघती
शुणा ड़े यारो घूघती घूरा
घौरा पुहती मारदी ठौरा
घूघती घूघती
चौरा थी लागा शोइरी साज़ा
खांदे पिंदे बाज़ा-गाज़ा
घूघती घूघती
रोटी बौड़ै चाकटी सूरा
साज़ा थी ए की व्याह थी पूरा
घूघती घूघती
सौरा शराब मौज़ा बोड़ी
पटिकदे नौचदे चेकड़ीं चोड़ी
घूघती घूघती
ढलकी केरदे बोंडदे जूबा
भेड़ मुनी न काटदे रूभा
घूघती घूघती
नौचदे कोई ढिसिदे होरा
गुश्रांदे बोहू ता खांदे थोड़ा
घूघती घूघती
पाहुणे भौरी मिल्दे गौला
लालड़ी लागी ग्राम्रां रे खोला
घूघती घूघती

घू भाईयो घूघती
गेहूं री धाणा चूगती
घूघती घूघती
घुघती-बे हुई जूगती
सो खोड़े रे पाण्हे ऊकती
घूघती घूघती
चूटी पाण्हटी सो खुड़कदी
घुघती हुई सो फुरकदी
घू भाईयो घूघती

हिन्दी अनुवाद

दो व्यक्ति - घू भाइयो घुघती
सभी—घूघती, धूघती
दो व्यक्ति —घुग्घी गई मण्डी सिराज
सभी—घूघती, घूघती
दो व्यक्ति —वहां से लाया सकेतड़ (सुकेत का बाजा)
सभी—घूघती घूघती
घू भाइयो घूघती
वहां से लाया सुकेतड़ बाजा
तब फिर वह चहचहाती
उठ कर गई बाजा बजाती हुई
घूघती घूघती
वह पहुंची स्पिति के काजा (राज़धानी) में
देशी शराब पी रहा था वहां का राजा
घूघती घूघती
घुग्घी बैठ गई चाकटी (चावल की शराब) पीने
(वहां) लकड़ी मूल्य पर और चाकटी मुफ्त थी
घूघती घूघती
धर्म भाई बनाए कबूतर (और) बाज
वहां से लाया लाहुली बाजा
घूघती घूघती
घू भाइयो घूघती
वहां से लाया लाहुली बाजा
घूघती घूघती

सुनो अरे यारो घूघती घूरा (ध्वनि)
घर में पहुंची मारती हुई दौड़
घूघती घूघती
घर में था लगा सैरी सक्रांत (आश्विन के पहले दिन का त्यौहार)
खा रहे थे, पी रहे थे, बाजा-गाजा (बजा रहे थे)
घूघती घूघती
रोटियां, बड़े (खाने के) चाकटी, सूर (मंडुआ की देशी शराब)
त्यौहार था यह या कि विवाह था पूरा
घूघती घूघती
सौरा (देशी शराब) शराब (सब कुछ) मौज (थी) बड़ी
उछलते, नाचते कमर तोड़ (रहे थे)
घूघती घूघती
प्रणाम करते, बांट रहे थे दूब (उस त्यौहार की विशेष नीति)
भेड़ों की ऊन कटाई (के अवसर) पर काटे जा रहे थे मेढे
घूघती घूघती
नाच रहे थे कोई, लड़ रहे थे दूसरे
खो रहे थे अधिक खा रहे थे कम
घूघती घूघती
महमान बहुत मिल रहे थे गले
लालड़ी (एक नृत्य गीत) लगी थी गांव के खलिहान में
घूघती घूघती
घू भाइयो घूघती
गेहूं के धाणा (भूने हुए दाने) चुग रही थी
घूघती घूघती
घुग्घी को हुई बड़ी मौज
वह अखरोट के टहने पर चढ़ गई
घूघती घूघती
टूट गई टहनी वह, कड़क करती हुई
घुग्घी के हुए प्राण पखेरू
घू भाइयो घूघती ●

श्रम प्रधान गीत

कुल्लू क्षेत्र

झीऊंचलीए

यह भी नृत्य श्रम गीत है। यह घूगती से अधिक विलम्बित ताल का गाना है। नाचते हुए मुख्य अन्तर यह है कि जहां घूघती घूघती स्वर कहते हुए रस्सा एक बार खींचा जाता है, वहां इस गीत में झीऊंचलीए-झीऊंचलीए दो बार बोल बोले जाते हैं तथा रस्सा भी दो बार खींचा जाता है। एक बार ज़ोर धीरे से लगाया जाता है, मानो दूसरी बार ज़ोर लगाने की तैयारी का संकेत है। दूसरी बार पूरी शक्ति से रस्सा खींचा जाता है। यह गीत प्रायः ऐसे रास्ते से अधिक गाया जाता है जहां ऊपर को खींचा जाना हो अर्थात् जहां रास्ता समतल और ढलानदार न हो बल्कि चढ़ाई वाला मार्ग हो, जहां भार को खींचने के लिए अधिक बल अपेक्षित होता है।

दो व्यक्ति—झीऊंचलीए झीऊंचलीए
सभी — झीऊंचलीए झीऊंचलीए
दो० — चौले उठिया कुलू बे जाणा
सभी — झीऊंचलीए झीऊंचलीए

कुलू जाया की नोऊंचा खाणा, झीऊं० ...
कुलू जाया घिऊ-खिचड़ू खाणा, झीऊं० ...
घीऊ-खिचड़ू नी गोला-न जाणा, झीऊं० ...
गोला तेरे मूं ता घुंघरू लाणा, झीऊं.० ..
कुलू देशा सा पौट्टू रा बाणा, झीऊं० ...
गोला घुंघरू पौट्टू भी लाणा, झीऊ० ...
डेंगा थिपू जोंघा बूटड़ू लाणा, झीऊं० ...
थिपू पौट्टू की पलवा पाणा, झीऊं० ...
कुलू जाया मूं शाहुरा लाणा, झीऊं० ...
तेरे शाहुरे की सेलरा लाणा, झीऊ० ...

एज़े दूईए घौर बसाणा, भीऊं०...
नुग्रां घोर चूटा फूटा पराणा, भीऊं०...
तेरी तेइएं चूटा फूटा सजाणा, भीऊं०...
घौरा नाईएं पूछ्ू सियाणा, भीऊं०...
कोने शुणू नाई लेखा-न पाणा, भीऊं०...
मशेरना नाईं कदी सियाणा, भीऊं०...
याणा नाईंए लोमा-न लाणा, भीऊं० ..
एज़े मांदी ग्रासा हौथ मलाणा, भीऊं०...
जुगा ज़ानी-बे सोंग बणाणा भीऊंचलीए भीउंचलीए ●

हिन्दी अनुवाद

दो व्यक्तिभी — ऊंचलीए भीऊंचलीए (एक पक्षी का नाम)
सभी — भीऊंचलीए भीऊंचलीए
दो० — चल उठ कर कुल्लू को जाएं
सभी — भीऊंचलीए भीऊंचलीए
कुल्लू जाकर क्या नया खाना है
कुल्लू जाकर घी खिचड़ी खाना है
घी खिचड़ी नहीं गले में जाएगी
गले में तेरे मैं तो घुंघरू-माला पहनाऊंगा
कुल्लू देश में पट्टू का रिवाज़ है
गले में घुंघरू (ग्रौर) पट्टू भी पहनाएंगे
टेढ़ा थिपू (सिर का रूमाल) पैर में बूट लगाएंगे
थिपू (ग्रौर) पट्टू क्या कुछ कर सकेंगे
कुल्लू जाकर मैं ससुराल बनाऊंगी
तेरे ससुराल में क्या सेलरा (चिपकने वाला बिरोज़ा) लगेगा
ग्रा दोनों घर बसा लें
नया घर टूटा फूटा पुराना
तेरे लिए टूटा फूटा सजाएंगे
घर में नहीं पूछा सियाना (बुजुर्ग)
कान में सुना नहीं लेखे में लाया जाए
गुस्सा नहीं कभी सियाने (को) दिलाना
छोटे को नहीं लोभ (मोह) में लगाना
ग्रा मिलिए हम हाथ मिलाएं
युग (ग्रौर) जीवन के लिए संघ बनाएं
भीऊंचलीए भीऊंचलीए ●

संग्रहण व ग्रनुवाद
श्यामा ठाकुर

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

डोला राम

यह गीत जिला मण्डी के करसोग क्षेत्र के लुहरी गांव का है। लुहरी को सड़क बन रही थी भुंभण नाम के ढांक की कटाई हो रही थी तो उसमें सुरंग लगाने वालों में मुख्य डोला राम था— ज्यों ही वह सुरंग लगाने लगा पत्थर उसके सिर के ऊपर गिर पड़े और उसकी मौत हो गई। डोलाराम बहुत नम्र स्वभाव का मेहनती आदमी था। उसकी अचानक मौत से सारे गांव के लोग बहुत ज्यादा दु:खी हुए। लोगों ने उसकी हृदय विदारक मौत के ऊपर गीत बना दिया और उसके अच्छे कार्यों को याद कर उसके गीत को गाने लगे। गीत की पंक्तियां हैं :-

भुंभणा रे ढेका दे, लागे टैंडला कटाए
डोलेरामा बलास्टमैंना, लागे टैंडला कटाए
जोड़े छुटे तेरी बालके आरा, दुये छुटे मेहरबान भाये
डोलेरामा बलास्टमैंना, दुये छुटे मेहरबान भाये
एक बजे री गडी दे आया, दूधा रा गलासा
डोलेरामा बलास्टमैंना, दूधा रा गलासा
दुई बजे री जीपा दे आये, डोलेरामा री लाशा
डोलेरामा बलास्टमैंना, डोलेरामा री लाशा
धारा गैसा रा पीपलु सूका, डूगे नाला रा सूआ
डोलेरामा बलास्टमैंना, डूगे नाला रा सूआ
डोलेरामा री मौत आई, कीजे गजब हुआ
डोलेरामा बलास्टमैंना, कीजे गजब हुआ

लुहरी स्टोरा रे लागे, साते किस्म शाणे
डोलेरामा बलास्टमैंना, साते किस्म शाणे
नीरता का पुलसा आई, निरमंडा का ठाणे
डोलेरामा बलास्टमैंना, नीरमंडा का ठाणे ●

हिन्दी अनुवाद

लुहरी गांव को जब सड़क निकल रही थी तो झुंझण नाम के ढांक पर डोलेराम बलास्टमैन सुरंग लगा रहा था। सुरंग लगाते-लगाते उसके सिर पर पत्थर गिर पड़े और वह मर गया। डोलेराम रास्ते की कटाई करते हुए मर गया और अपने पीछे दो बच्चे और दो भाई छोड़ गया
एक बजे की गाड़ी में डोलेराम को पीने के लिए दूध का गिलास आया
जब तक डोलेराम को पीने के लिए दूध आया तब तक डोलेराम मर चुका था
उसकी लाश को दो बजे की गाड़ी में उसके घर ले आए
उसकी मौत के पहले ही अपशगुन हो गए। धार का पीपल सूख गया तथा डूंगे नाले का पानी भी सूख गया
डोलेराम की मौत की खबर सारे गांव में आग की तरह फैल गई।
यह क्या गजब हो गया कि डोलेराम मर गया
लुहरी के स्टोर में सात किस्म के ताले लगे थे जहां सुरग लगाने की बत्तियां तथा सड़क निकालने वाला अन्य सामान रखा था
डोलाराम की अकस्मात मौत को सुनकर नीरत से पुलिस आ गई तथा निरमंड से थाना आ गया ●

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

नैणु लाड़ीये खशटीये

यह गीत जिला मंडी के करसोग क्षेत्र के लुहरी गांव है। इसकी घटना इस प्रकार है कि नैणु नाम की औरत जमींदार हिमेराम की पत्नीं थी। वह हर रोज गांव की अन्य औरतों के साथ घास लाने जंगल जाती थी। एक दिन भी वह अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर घास लाने गई। अन्य औरतों की अपेक्षा जल्दी-जल्दी घास काटने लगी। घास काटते-काटते वह पहाड़ी के नीचे बहते हुए दरिया में गिरी और मर गई। उस गांव के लोग नैणु की मौत से बहुत दुःखी हुए। नैणु की मौत की घटना इस प्रकार से गाई जाती है :—

नैणु लाड़ी रा मरना हुआ, डूबी मंजी दरयाये
नैणु लाड़ीये खशटीये, डूबी मंजी दरयाये
माठे-माठे तेरे शोरे छुटे, दुई छुटी लाऊदी गाये
नैणु लाड़ीये खशटीये, दुई छुटी लाऊदी गाये
होर घरेरी लो घरा ले आई, नैणु लाड़ी घरा न आई
नैणु लाड़ीये खशटीये, नैणु लाड़ी घरा न आई
बाहर निकले गो हिमेरामा, लाये न नैणु ले हाका
नैणु लाड़ाये खशटीये, लाये न नैणु ले हाका
होरे घरे रीये भींभणा लुणा, नैणुये लुणा गे काशा
नैणु लाड़ीये खशटीये, नैणुए लूणा गे काशा
भर जवानीये मरना हुआ, किया जिन्दगी रा नाशा
नैणु लाड़ीये खशटीये, किया जिन्दगी रा नाशा ●

हिन्दी अनुवाद

ठाकुर (खश) जाति की औरत नैणु घास काटते-काटते पहाड़ी से गिरकर दरिया में डूब गई और मर गई। उसके छोटे-छोटे बच्चे तथा दो दूध देने वाली गायें रह गईं।

जो औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थीं वह वापिस घर को आ गई लेकिन नैणु घर नहीं आई

नैणु का घरवाला हिमेराम अपने घर से बाहर आया और नैणु को आवाज़ें देने लगा।

जो औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थीं उन्होने भींछणा घास काटा लेकिन नैणु ने जल्दी-जल्दी में काश (घास विशेष) काटा।

नैणु जवान थी, उसने घास काटते-काटते अपनी जिन्दगी खत्म कर दी ●

संग्रहण व अनुवाद
हेमप्रभा शर्मा

मण्डी क्षेत्र

दिले राम

दिलेराम कोई अज्ञात चिरप्रचलित नायक किसी प्रेम पाश के लिये अकारण दोषी ठहराया गया। ज्ञात होने पर दिलेराम को निर्दोष समझा गया। यौवनावस्था में उस पर अकारण संशय व्यक्त किया जाता है। दिलेराम सुन्दर व्यक्ति था। जिसके सम्पर्क में आया, उसके रूप को निहारता सा रह गया। उसके लिये स्मृति वश प्रणयोदगारों का नायिकाओं का उपालम्भ इस प्रेम गीत में पूर्णतया झलकता है।

बाह्यि चढ़ेआ दिलेरामा,
अमां खट्टेया कमाया मापेआं रे लाया
तेरी सोह बह्यिा चढेआ दलेरामा
मुइआ तेरी सोह बह्यिा लाया दिलेरामा
तेरी सोह नौ सौ बाकमा तेरी, बह्यिा लाया दिलेरामा
हाथा दब्बू रे छत्री, जाती रा तू खत्री
पन्था रा तू खत्री, ओ गलाबा रे फूला ओ
सतवाजा रे गट्टा नील बागा रेआ गट्टा
होरनी जोबन सींजिया लोभी लोकें लुट्टेआ
हाथा दब्बू रे दाणा ओ, मण्डी नी रैह्णा
गुलाबा रे फुल्ला नील बाग रेआ गट्टा
हाथा दब्बू रे परना ओ छुरी लाई के मरना
तेरी सोह छुरी लाई के मरना

हाथा दब्बू रे दाणा, जाति रा तू राणा
तेरी सो जाती रा तू राणा
तेरी सोह नौं सौ बाकमां तेरी बद्दिया चढेआं दिलेरामा
जान्दा जान्दा दब्बू चली ओ गया तेरी सोह
म्हारे मनां बसूरा पाई ओ गया नी रेला चढ़ दब्बूआ
जान्दा जान्दा चली ओ गया
सीरा रे सलूए लेन्दा ओ गया
म्हारी नणदा कनैं रमजा मारी ओ गया
कि रेला चढ़ दब्बुआ
कि नौ सौ बाकमा तेरी, रेला चढ़ दब्बुआ
म्हारे माथे बिन्दुए लैन्दा ओ गया
म्हारे मना बसोरा पान्दा ओ गया
मां खट्टेया कमाया तेरी सोह बद्दिया लाया दिलेरामा
मां तेरी सोह, लेखे लायां शहरा रिए द्रौमतिए

हिन्दी अनुवाद

दिलेरामा अपमानित हुआ
कमाई मां-बाप को दी
दिलेराम कलंकित हुआ
दिलेराम अपमानित हुआ
विस्तृत परिचय था अतः अपमान मिला
हाथ में छाता जाति का क्षत्रिय
क्षत्रिय-पथ फूल सी जवानी
नील बाग का नीलपुष्प सा
चिर सांचित, यौवन का लोभ में अनेकों ने लाभ लिया
इस प्रकार मण्डी नहीं रहना है—वह निराश रहा
वह गुलाब और नीलकमल-सा पुरुष है
रूमाल हाथ में देखते (हृदय में) छुरी लगती है
छुरी लगा के प्राण त्याग दें !
हाथ में दाना लिये राजपूत जाति का है
सचमुच राणा जातिय है
विस्तृत परिचय, वंश कलंकित हुआ
आखिर इस स्थान को त्याग दिया

हमारे मन को भरमा गया, रेलगाड़ी में बैठ चला गया
जाता-जाता चला गया
सिर का सलुआ (दुपट्टा) ले गया
हमारी ननद को उपालम्भ दे गया
घर में झगड़ा डाल गया
रेल पर बैठा, चला गया
कई परिचित—छोड़े चला गया
माथे की बिंदिया की शान था वह
हमारे मन का विश्वास और आस था वह
कमा करके मां-बाप को दिया, लोभी लोगों ने यौवन लूटा
फिर बदनामी दिलाराम को मिली
द्रुमती नायिका को सम्बोधित करके संकेत किया है

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

झारू मिंया तथा गगनों

दिलेराम की भान्ति इसमें नायक नायिका का वास्तविक गाथात्मक परिचय तो नहीं किन्तु प्रणय-प्रसंग द्वारा झारू का गगनू नामक औरत के सौन्दर्य पर रीझ कर पथभ्रष्ट होने का परिचय मिलता है। सामाजिक परम्पराओं की कुछ चिन्ता न कर झारू ने सिद्ध कर दिया इश्क न पूछे जात अथवा रूप का आकर्षण, प्रेमी को संसार की सर्वोच्च सम्पदा है।

अम्मा भी समाझादी, बापू भी समझादा
झारू ओ मियां छडी देणा चमरिया रा साथ
खुहा पर सट्टे आ जनेओ, झारूमियां
पकड़आ गगनू चमरिया रा हाथ
भाई तेरा समझान्दा, भाभो समझान्दी
छड्डी देणा गगनू चमारी रा साथ
भाई भाभी लान्दे ठोकरां आसां
पहणियां देयां तिल्लेदार
गगनू धान कूटे, भात बणाया
ऊपरा ते रखेआ कट्टू रा मांस,

झारू हुश्रा हुरण श्रसल चमार
भाई भतीजे डयोढ़ी बैठे
झारू बैठा नजरी लै बाहर
सासु देंदी लिखेग्रां कागदां
तेरा मुन्दड़ा होया बड्डा जवान
झारू मियां बोलदा, मेरा मुद्दा
बियांह्यां भाई मेरे जो
हाऊं बणी गया श्रसल चमार
किसी भी पीणा तेरे हाथे दा पाणी
किस भी पीणा तेरे नरेलु तमाखू
किस भी बिह्याणी तेरी नार
श्रम्मा पीणा मेरे हाथे दा पाणी
बापू पीणा मेरे नरेलु तमाखू
मेरे भाइए ब्ह्याहणी मेरी नार
श्रम्मा मेरिए हांऊ हुश्रा श्रसल चमार
सब सब बैठे श्रन्दर
झारू मियां डयोढी ले बाहर
छड्डी दे गगनू रा साथ
श्रम्मा भी समझांदे, बापू भी समझान्दे
छड्डो देणां गगनू रा साथ

हिन्दी श्रनुवाद

मां भी, बाप भी समझाते हैं
झारू मियां, चमारी का संग छोड़
कूयें पर जनेऊ फैंका
झारू मियां गगनू के साथ पकड़ा गया
तेरे भाई श्रौर भाभी समझाएं
गगनू का संग छोड़
भाई भाभी ठोकरे लगाएं
—तिल्लेदार जूती बनाना
गगनू धान कूट कर भात बनाती है
कट्टे का मांस भी रख दिया
झारू पूरा मोची बन गया

भाई भतीजे भीतर बैठे
भारू नजरों से भी दूर
पहली मंगेतर की मां पत्र डाले
कहे तुम्हारा वर बड़ा हो गया
भारू कहता है कि
भाई को ही ब्याह दो
मैं तो प्रेम-वश मोची बन गया
तुम्हारे हाथ पानी कौन पीएगा ?
हुक्का तमाखू कौन पीएगा ?
तुम्हारी मंगेतर कौन व्याहेगा ?
अम्मा पानी पीयेगी
पिता तमाखू पीयेगा
भाई मंगेतर बनेगा
मां मैं पूर्ण मोची बन गया
सब अन्दर हैं
भारू कमरे के बाहिर है
गगनू का साथ छोड़
मां बाप कहते हैं—
गगनू चमारी को छोड़ दो ●

संग्रहण व अनुवाद
डॉ० कांशी राम आत्रेय

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

तेरी धिया जो हुआ बनवास

इस लोकगीत का भावार्थ यह है कि देवरानी गोबर से घर की लिपाई कर रही थी। उसकी जेठानी जिसके हाथ मिट्टी की चपणी (अर्थात पांव साफ करने के लिए मिट्टी की ठीकरी) थी। वह फिसल कर गिर गई और चपणी टूट गई। जिससे नाराज हो कर उसकी सास ने उसे बनवास दे दिया। उसने गगन में उड़ने वाली परियों को सम्बोधित करके अपने मायके और ननीहाल वालों को संदेश भिजवाया। अपनी बेटी की इस भूल पर वह सोने चांदी की नाना प्रकार की वस्तुएं देने को तैयार हुए पर सास न मानी। अंत में सास कहती है कि मुझे दौलत नहीं अपनी बहू ही चाहिए। मैं तो इसकी परीक्षा ले रही थी।

दराणिये लिपया ओबरा
जेठाणीया जो गई घसराठ
तेसा चपणी रा हुआ चकनाचूर
कि बहुआ जो दित्ता बनवास।
सूरगा जो जांदिये सूरगाणिओ
मेरे बापू जो देणा सन्देहा कि तुध आई जाणा
तेरी धिया जो हुआ बनवास।
लै, ले कुड़माणिये सुइना चान्दी
मेरी धिया जो दे घर बार।
कुड़मा मेरे केथी पाणा सुइना चांदी ?

लै ले कुड़मा सुइना चांदी
मेरी चपणी कनै सौ काम ।
सूरगा जो जांदिए सुरगणिये
मेरे चाचा जो देणा संदेहा कि चाचा जी आई जाणा
तेरी भतीजी जो हुआ बनवास ।
लै-ले कुड़मणिये, गाइयां भैंसां
मेरी धिया जो दे घर बार ।
मेरे केथी पाणी गाईयां भैंसां
मेरी चपणी कनैं सौ काम ।
सूरगा जो जांदिये सूरगणिये
मेरे मामा जो देणा सन्देहा कि मामा जी आई जाणा
तेरी भाणजी जो हुआ बनवास ।
मामे ता घड़ी चपणी मामीये फेरेया चाक,
लै ले कुड़मणिये अपणी चपणी
हिक जुकणी मुंड फूकणी—
मेरी भाणजी जो दे घर बार ।
लै ले कुड़मा चपणी ओ चपणी
मेरे केथी पाणी चापणी, हिक जुकणी
मूंजो तेसा बहुआ के सौ काम

हिन्दी अनुवाद

देवर की पत्नी ने निचले कमरे को लीपा,
जेठानी उस गोबर के लेपन में फिसल गई
उसके हाथ में पांव साफ करने की मिट्टी की चपणी थी
वह टूट कर चूर-चूर हो गई
इस पर सास ने बहू को बनवास दे दिया ।
बहू ने आकाश की ओर उड़ती हुई परियों से कहा
कि स्वर्ग में जाने वाली परियो ! जाकर मेरे
पिता को यह संदेश दे देना कि तेरी बेटी को
उसकी सास ने बनवास दे दिया है ।
बेटी के बाप ने आकर बेटी की सास से कहा
कि जितना सोना चांदी इस चपणी के
बदले में लेना है ले लो । मेरी बेटी को घर में बसने दे ।

कुड़मा (लड़की के पिता) मैं सोना, चांदी क्या करुंगी ?
मैं तो अपनी चपणी से सौ काम लेती थी।
बहू फिर उन स्वर्ग में उड़ती परियों से अपने
चाचा को संदेश भेजती है कि चाचा जी
आ जाना। तेरी भतीजी को बनवास हो गया है।
चाचा ने आकर लड़की की सास से कहा
कि इस चपणी के बदले गाय-भैंसें ले लो
और मेरी बेटी को घर बसने दो।
उसको भी सास ने यही उत्तर दिया
- मैं गाय भैंस लेकर क्या करुंगी ?
मेरी चपणी से सौ काम निकलते थे।
हे स्वर्ग में जाने वाली परियो
मेरे मामा को यह संदेश दे देना
कि मामा जी आ जाना। तेरी भानजी को बनवान दे दिया है।
मामे ने मिट्टी की चपणी घड़ी, मामी ने उस पर चाक
फेरकर उसे पकाया। दोनों ने चपणी तैयार
करके लड़की की सास को दी और कहा—
ले अपनी छाती पीटने और सिर फूंकने के
लिए अपनी चपणी । हमारी भानजी
को घर में बसने दे।
सास ने उस चपणी को लौटाते हुए कहा
कि हे नाती (कुड़म) छाती पीटने के लिए यह चपणी
क्या करनी है और इस चापणी से क्या लेना है ?
मुझे तो अपनी बहू प्यारी है जिससे मुझे सौ काम पड़ेंगे

संग्रहण व अनुवाद
कृष्ण कुमार नूतन

मोहणा

बिलासपुर के लोकगीतों में मोहणा का अपना ही स्थान है। इस गीत को गाते गाते अब भी लोग प्रायः रो जाते है। घटना इस प्रकार है कि बिलासपुर के राजा विजय चन्द के पास मोहन का भाई नौकर था। ये लोग मोर सिंगी गांव के रहने वाले थे। किसी कारण अपने गांव में झगड़ा हो जाने पर मोहन के भाइयों ने अपने पड़ोसी की हत्या कर दी। भाइयों ने सीधे सादे मोहन को कहा – तुम यह मान जाओ तुमने ही खून किया है। हम राजा से प्रार्थना करके तुम्हें छुड़वा देंगे। किन्तु यदि हम कहते है कि हमने खून किया तो फिर हमें छुड़वाने वाला कोई नहीं होगा। भोला भाला मोहन भाइयों की बातों में आ गया। कसूर का स्वीकार करना ही था कि कानून ने उसे अपनी लपेट में जकड़ लिया। मोहन को फांसी हुई। लोग एक निरपराध को फांसी पर लटकते हुए देख कर रो पड़े।

आया मरना ओ मोहणा आया मरना
तेरे भाईयां रीया कित्तिया आया मरना।
रोया करदी ओ मोहणा रोया करदी
तेरी बालक बलेसरु रोया करदी।
खाई लै फुलकु ओ मोहणा खाई लै फुलकु
अपणी अम्मा रेआं हत्था रा खाई लै फुलकु।
मैं नी खाणा ओ लोको मैं नी खाणा

मेरी घड़ी पल मरने री मैं नी खाणा ।
किनी रैह्णा वो मोहणा, किनी रैह्णा
तेरे रंगलुए बंगलुए किनी रैह्णा ?
भाईयें रैह्णा वो लोको, भाईयें रैह्णा,
मेरे रंगलुए बंगलुए भाईयें रैह्णा ।
गड्डे थम्बड़े मोहणा, गड्डे थम्बड़े
बेड़िया रे रेतड़ा च गड्डे थम्बड़े ।
चढ़ी जा तख्ते ओ मोहणा, चढ़ी जा तख्ते
दम दम दित्तिया चढ़ी जा तख्ते ।
बारा बजी गए ओ मोहणा, बारा बजी गए,
इस राजे रीया घड़िया बारा बजी गए

हिन्दी अनुवाद

हे मोहन ! तुझे अब तेरे भाइयों की करनी के कारण मरना पड़ रहा है। मोहन तेरी छोटी उम्र की पत्नी बलेसरु, तेरे फांसी पर लटकने के दुःख से दुखित हो कर रो रही है। लोग कह रहे हैं मोहन ! अपनी मां के पकाए हुए फुलके खा लो। मोहन का उत्तर है हे लोगो मुझे मरने को अब थोड़ा समय शेष रह गया है अत: मैं इन फुलकों को नहीं खाऊंगा। लोग प्रश्न करते हैं—मोहन तेरे रंगीन मकानों में कौन रहेगा ? मोहन उत्तर देता है मेरे मरने के बाद मेरे भाई मेरे रंगीन मकानों में रहेंगे। मोहन बेड़ी घाट के रेत में फांसी के लिए खम्बे गाड़ दिये गए हैं तुम दुःखी न हो और शीघ्र ही इन तख्तों पर चढ़ जाओ। मोहन राजा की घड़ी ने बारह बजा दिये ●

फरंगु

फरंगु बिलासपुर के गीतों में एक बहुत पुराना मार्मिक गीत है। फरंगु शब्द हिन्दी के फिरंगी शब्द से लिया गया है। फिरंगी शब्द फिरे हुए अथवा बदले हुए रंग का अर्थात अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। अंग्रेज़ों ने पहाड़ों की शान्ति को भंग कर दिया।

बहुत से राजाओं के राज्य हड़प लिये बहुत से राज्य जीत लिये गए। उन्होंने निःसन्देह कई सुधार भी किये जिन्हें उस समय के लोगों ने पसन्द नहीं किया बल्कि अपने पारम्पारिक जीवन में हस्तक्षेप समझा। यह गीत उसी कथा को प्रदर्शित करता है।

इस वे फरंगुये कैहर कमाया,
शिमले दी सड़क सपाटूये मलाई
देश दोहाइयां दे रहे लोको
डाडड़ा राज फरंगुये दा।
इस वे फरंगुये कैहर कमाया
महलां दी इट चबारे नूं लाई
देश दोहाइयां...
इसा वो सस्सु कैहर कमाया
खाणे रीया वेला नूं चरखा ढलाया
देश दोहाइयां...
इसा वो सौकणी कैहर कमाया
सौणे रीया वेला नूं गो धूम मचाया
देश दोहाइयां...

हिन्दी अनुवाद

इन फिरंगियों ने बहुत मुसीबत डाल दी। शिमला की सड़क को सपाटू से मिला दिया। इस से अब हमारी शान्ति भंग हो जाएगी। तभी सारे देश के लोग ऊंचे स्वर से कह रहे हैं कि इन फिरंगियो का राज बहुत ही सख्त है। इन फिरंगियों ने बहुत मुसीबत डाल दी राजाओं के महलों को गिरा कर उनके महलों की ईंटों को अपने चौबारे में लगा दिया।

(यह गीत यद्यपि तत्कालीन राजनैतिक दु.ख को प्रकट करता है फिर भी सास बहू तथा सौत के पारस्परिक तनाव एवम् कलह जोकि प्रतिदिन की क्रिया के अभिन्न अंग थे, भी इस में प्रकट हुए बिना न रह सके)
इस सास ने बहुत ही मुसीबत डाल दी
जो खाना खाने के समय चरखा बिछा दिया है।
भूख के समय भला चरखा कौन काते ?
इस सौत ने बहुत मुश्किल डाल दी
जो सोने के समय लड़ाई झगड़ा करती है।

भूली जायां दिलड़ुआ

प्राचीन लोक-कवि की कलम तो सशक्त रही ही किन्तु इस क्षेत्र में आधुनिक बिलासपुर के लोकगीतों का कवि भी पीछे नहीं रहा है। उसने भी अपने जीवन की कसक को बहुत गम्भीरता से अनुभव करके अपने शब्दों में हमारे सम्मुख रखा है। गोबिन्दसागर ने बिलासपुर के जीवन को बहुत ही प्रभावित किया है। इसने यद्यपि नया जीवन दिया है फिर भी पुराने नगर, घर बार तथा हंसने खेलने के स्थानों को हड़प करके लोगों को अनाथ सा बना दिया। अपनी पुरानी सम्पदा के खोने के दुःख को व्यक्त करता हुआ आधुनिक लोकगीतों का कवि फूट पड़ा है।

भूली जायां दिलड़ुआ हो, टूटी रेआ फुलड़ुआ हो
हो मेरे दिलड़ुआ हो ..
घर सह पुराणे जित्थी हस्सेया रोया तू
हस्सी रोई कनैं जित्थी बडा होया तू
भूली जायां दिलड़ुआ हो, मेरे दिलड़ुआ हो...
गलियां च पाणी जित्थी खेला पाईयां तैं
बड़ ते पुराणी जित्थी पींगा पाईयां तैं
भूली जायां...
सांडू रे मदाना झीला रा पाणी,
असां सह नलवाड़ी हुण किथी लाणी
दस्सी देआं दिलड़ुआ हो...
सब कुछ दीता खातिर देशा रे
बदले च पाए करजे उमरा रे
भूली जायां...
डूबी गये घर बार आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवीं दुनियां बसाणी

म्हारे बजुर्गां री रखियां नसारिणयां
म्हारे ही साह्मणे बणियां कहणियां,
बणियां कहारिणयां, भूली जायां ..
ग्वाड़ सवाड़ू मुके मुकेया खूहा रा पाणी
भाखड़े रा डैम चड़ेआ, आई गया पाणी
चक मेरी जिन्दे, नवीं दुनिया बसाणी
भूली जायां
जिन्हां जिन्हां गलियां च बापुये फराये
अम्मा री गोदा च सैर करी आये
सैर करी आये, भूली जायां
उन्हारे प्यारा री गल्ला याद कियां औणी
डूबी गइयां गलियां आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवीं दुनियां बसाणी
भूली जायां
सांडू री नलवाड़ी, रंगनाथा रे मेले
मुकी गए हुण बेड़ी घाटा रे फेरे
बेड़ी घाटा रे फेरे, भूली जायां...
ल्हेड़ा रे बागा री लीची कित्ति खाणी
डूबी गए बाग आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवीं दुनियां बसाणी
भूली जायां दिलड़ुआ हो, टूटी रेया फलड़ुआ हो

हिन्दी अनुवाद

हे टूटे हुए फूल के समान मेरे दिल उन पुराने घरों को जहां तुम हंसे थे, रोये थे और हंस रो कर बड़े हुए थे अब भूल जाओ।
जिन गलियों में तुम खेला करते थे, अब वहां पानी आ गया है।
जिस बट-वृक्ष के नीचे तुमने झूले डाले थे, अब वह जलमग्न हो गया है।
हे टूटे हुए दिल! तुम उन सब बातों को भूल जाओ।
सांडू मैदान में अब गोविन्द सागर का पानी आ गया है।
हे टूटे हुए दिल! बताओ वह नलवाड़ी का मेला जो सांडू मैदान में हुआ करता था अब उसे कहां लगायें ?
हमने अपना सब कुछ देश की खातिर न्योछावर कर दिया इसके बदले हमें नये मकान बनाने के लिए उमर भर के लिए ऋणी होना पड़ा है।

हे दिल इन सब गमों को भूल जाओ। हमारे घर बार गोविन्द सागर का पानी आने पर डूब गए हैं। हे प्रिय! चलो अब नई दुनियां बसायें।
हमारे पूर्वजों की सारी निशानियां हमारे ही सम्मुख केवल कहानियां बन कर शेष रह गई हैं।
हमारे आंगन और आस पास के छोटे छोटे बगीचे समाप्त हो गए कुएं का शीतल जल भी समाप्त हो गया।
भाखड़ा बांध से अब पानी ही पानी हो गया है। हे प्रिय! चलो अब नई दुनियां का निर्माण करें। जिन गलियों में बापू ने हाथ पकड़ कर फिराया था, मां ने गोदी में सैर करवाई थी, उनके प्यार की बातें अब कैसे याद आयेंगी?
पानी के आने से वे सारी गलियां तो अब डूब गई हैं। इसलिए हे प्रिय! चलो अब नई दुनियां का निर्माण करें। सांडू के मैदान में लगने वाले नलवाड़ी, रंगनाथ के मेले, बेड़ी घाट का आनन्ददायक सायंकालीन भ्रमण आदि सभी बातें तो अब समाप्त हो गई हैं। ल्हेड़ के बाग की स्वादिष्ट अलांची अब कहां खायें? पानी के आने से अब कुछ समाप्त हो गया। हे प्रिय! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें।
इस लोकगीत में जहां अतीत के खो जाने पर वेदना प्रकट की गई है वहां नव निर्माण के लिए कटिबद्ध होना भी दर्शाया गया है।

ऊपरलिखित बिलासपुर के इन लोकगीतों ने मानव वेदना का सूक्ष्म चित्रण किया है। चाहे मानव मृत्यु पर शोक हो ससुराल में बहू की तड़पन हो, पत्नी से बिछुड़ने का दुःख हो, विवाहित युवती की अपने मां बाप से मिलने की चाह हो, राजनैतिक उथल पुथल पर क्षोभ हो, अपने शहर का खो जाना हो, सभी हृदय विदारक परिस्थितियों को इन लोकगीतों ने सहज ढंग से चिरंजीव कर दिया है। ●

संग्रहण व अनुवाद
डॉ. पद्मनाभ गौतम

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

धोबण पाणिये जो गेई-ए

यह घटना प्रधान गीत राजा और धोबन के प्रेम सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। धोबन के सौंदर्य को देखकर राजा मोहित हो गया और महलों में ले आया किन्तु रानी ने साजिश करके धोबन को जहर देकर मार दिया। राजा के धोबन के प्रति कोमल भाव इस गीत में झलकते हैं। बाद में धोबन की बहती हुई लाश धोबी को नदी में मिलती है।

काला घग्घरा सिला के, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिये जो गेई-ए, तेरी-सोह्
हो धोबण पाणिये जो गेई-ए
धोऽबणी घड़ा रक्खेया, हाय रक्खेया
हो राजा रखदियां-श्रां गड़बी मैं, तेरी-सोह्
हो राजा रखदियां श्रां गड़बी मैं, तेरी-सोह्
काला घग्घरा सिला के, हाय सिला के
हो धोबण पाणिये-जो गेई-ए, तेरी सोह्
हो धोबण पाणिये-जो गेई-ए।
धोबणी घड़ा भरेया, श्रो भरेया
हो राजैं भरी लेई-ए गड़बी, तेरी सोह्
हो राजैं भरी लेई-ए गड़बी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबण पाणिये जो गई-ए, तेरी सोह्

हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए ।
धोबणी घड़ा चुक्केया, हाय चुक्केया
हो राजै बीणी तैं पकड़ी, तेरी सोह्
हो राजै बीणी तैं पकड़ी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके,
हो धोबरण, पाणिये जो गेई-ए, तेरी सोह्
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए ।
छड़-दे राजेया बीणी, हाय बीणी
हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह्
हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए ।
खबर करो मैंह्ल राणियो, हाय राणियो
वे राजैं धोबरण ल्योंदी, तेरी सोह
वे राजैं धोबरण ल्योंदी, तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरण पाणिये जो गई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए ।
ल्याण लगा तां ल्याण दे. हाय ल्याण दे
हो मैं-तां बसण-नीं दैंणी, तेरी सो
हो मैं-तां बसण-नीं दैंणी, तेरी सो
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबरण पाणिये जो गई-ए ।
पैंह्ली पिंड्डी बणाई, हाय बणाई
ओ बिच सक्कर मिलाया, मैं तेरी सोह्
ओ बिच सक्कर मिलाया, मैं तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह्
हो धोबरण पाणिये जो गेई-ए ।
दूजी पिंड्डी बणाई, हाय बणाई
ओ बिच जैह्र मलाया, मैं तेरी सोह
ओ बिच जैह्र मलाया

काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए ।
नां मेरी धोबरा जो दब्बेयो, हाय दब्बेयो
हो धोबरा मैली-बी-नां होए, मै तेरी सोह॒
हो धोबरा मैंली-बी-नां होए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
धोबरा पाणिये-जो-गेई-ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा पाणिये जो गेई ए ।
नां मेरी धोबरा जो फूक्केयो, हाय फूक्केयो
हो धोबरा काली-बी नां होए, मैं तेरी सोह॒
हो घोबरा काली बी नां होए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए ।
सोयने दा पिंजरा बणाया, हाय बणाया
हो किसी नदियां रुढ़ाई, मैं तेरी सोह॒
हो किसी नदिया रुढ़ाई
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरा पाणिये जो गई- ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा वाणिये जो गेई-ए ।
धोबी कपड़ेयां धोए, हाय धोए
हो किसी-दी-नार रुढ़दी आई ए, मैं तेरी सोह॒
हो किसी-दी-नार रुढ़दी आई-ए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए ।
धोबियैं पिंजरा सैह॒ फड़ेया, फड़ेया
हो धोबरा कड्डी-बो न्हलाई-ए, मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा कड्डी-बो न्हलाई-ए
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए मैं तेरी सोह॒
हो धोबरा पाणिये जो गेई-ए ।
धोबियै पिंजरा सैह॒ खोल्लया, हाय खोल्लया
एह॒ बच्चेयां दी माई-ए, मैं तेरी सोह॒

एह् बच्चेया दी माई-ए ।
काला घग्घरा सिला के, हाय सिलाके
धोबण पाणियें जो गेई-ए, मैं तेरी सोह
धोबण पाणिये जो गेई ए ।।

हिन्दी अनुवाद

हाय ! काला घाघरा सिलाकर बन ठन कर धोबन पानी भरने गई है तेरी सौगंध धोबन पानी भरने गई है । धोबन ने घड़ा रख दिया, हाय रख दिया हो राजा ने लोटा रख दिया मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं राजा ने लोटा रख दिया, मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं कि धोबन पानी भरने गई है । धोबन ने घड़ा भर लिया, हां भर लिया राजा ने लोटा भर लिया मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं राजा ने लोटा भर लिया तेरी सौगंध है, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । ज्यों ही धोबन ने घड़ा उठाया कि राजा ने उसे कलाई से पकड़ लिया, मैं सौगंध खाकर कहती हूं राजा ने उसे कलाई से पकड़ लिया, काला घाग्घरा सिलाकर बनठन कर धोबन पानी भरने गई है । धोबन ने कहा अरे राजा मेरी कलाई छोड़ दे, हाय मेरी कलाई छोड़ दे तेरी सौगंध है मैं नीच जाति की हूं, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई । अरे राजा के महल में खबर दो कि राजा अपने महल में धोबन ले आया है काला घाघरा सिलाकर, बनठन कर धोबन पानी भरने गई है । महल में रानी कहने लगी अगर राजा धोबन को महलों में ले ही आया है तो ले आने दो मैं भी उसे यहां बसने नहीं दूगीं । रानी ने पेड़ा बनाया। पहला पेड़ा बनाकर उस में शक्कर मिलाई तेरी सौगंध है, उस में शक्कर मिला दी, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । दूसरा पेड़ा बनाकर उस में विष मिला दिया तेरी सौगंध है उस में विष मिला दिया, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । राजा कहता है—अरे ! मेरी धोबन को छूना मत, हां छूना मत तेरी सौगंध है मेरी धोबन मैली न हो जाए, हां मेरी धोबन कहीं मैली न हो जाए काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । मेरी धोबन को जलाना मत हां जलाना मत कहीं मेरी धोबन काली न हो जाए, तेरी सौगंध यह कहीं काली न हो जाए, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । राजा ने सोने का पिंजरा बनवाया, हाय बनवाया धोबन को किसी नदी में प्रवाहित कर दिया तेरी सौगंध धोबन को प्रवाहित कर दिया, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है । धोबी कपड़े धो रहा था कि उसे लगी किसी की नारी बहती हुई

आ रही है, तेरी सौगंध किसी को घरवाली बहती हुई आ रही है, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई हैं। धोबी ने वह पिंजरा पकड़ा हाय ! पकड़ा उसने उसमें से धोबन को निकाला और फिर नहलाया तेरी सौगंध है उसने उसे नहलाया, काला घाघरा सिलाकर बन ठनकर धोबन पानी भरने गई। तेरी सौगंध धोबन पानी भरने गई है। धोबी ने पिंजरा खोला, हाय खोला। हाय ! यह तो उसके बच्चों की माता, अर्थात् यह तो धोबी की ही पत्नी है, काला घाघरा सिलाके धोबन पानी भरने को गई है ●

काले म्हीने दियां न्हेरियां रात्तीं

यह गीत उस समय की याद दिलाता है जबकि भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। इस विशेष ऐतिहासिक घटना का सम्बंध अब भारत के लोक जीवन के साथ अन्योन्याश्रित ढंग से सम्बद्ध है। जब भी किसी घर में बालक उत्पन्न होता है तो इस कृष्ण जन्म की घटना को याद करके बालक-जन्म को हर्ष मानकर उस पर कृष्ण के गुणों को आरोपित किया जाता है।

काले महीने दियां न्हेरियां रात्तीं, जरमेया स्याम मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया स्याम मुरारी।
पुच्छी लै मेरेयां संगीयां-साथियां, जान बचाई घरैं आया
छिक्केयां तोड़ी, भाण्डे जी भन्ने, बिन्नुआं-ए दित्ती रुढ़ाई
काले महीने दियां न्हेरिया रात्तीं, जरमेया स्याम मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया स्याम मुरारी।
पुच्छी लै मेरेयां संगीयां साथियां, जान बचाई घरैं आया
जां जम्मेयां जां दीवक बलेया, चौंही-चक हो रेह्‌इयां लोंई
काले महीने दियां न्हेरियां रात्तीं, जरमेया स्याम मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया स्याम मुरारी।

पुच्छी लै मेरेयां संगीयां साथियां, जान बचाई घरैं आया
बांह मरोड़ी मेरी मटकी तोड़ी, बिनुआं तां दित्ता रुढ़ाई
पुच्छी लै मेरेयां संगीया साथियां, जान बचाई घरैं आया
काले महीने दियां न्हेरियां रात्ती, जरमेया कृष्ण मुरारी
सेह्‌इया जरमेया स्याम मुरारी।
न्होत्ता रे धोता पाट पलेटेया, कुच्छड़ लेया ए दाइया
पंज रुपेइये मैं दाइया जो देसां, पुत्तर प्यारा माइया
जां जम्मेयां जां दीवक बलेया, चौउं चक होई रेह्‌इयां लोंई
काले महीने दियां न्हेरियां रात्ती, जरमेया कृष्णा मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया कृष्ण मुरारी।
घोल पताशा मैं गुड़सत्त देंदी, सोयने दी लावां कटोरी
चन्नण कट्टी मैं भगूणा घड़ावां रेशमी लावां डोरा
जां जम्मेयां जां दीपक बलेयां, चौहीं चक होई रह्‌इयां लोंई
काले महीने दिग्ग न्हेरियां रात्तीं, जरमेया कृष्ण मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया कृष्ण मुरारी।
औंदे तां जांदे वसुदेव भुटादें, भुट्टेयां देन खलाइयां
औंदी तां जांदी भाई देवकी खलांदी भूट्टेयां देन खलाइयां
जां जम्मेया जां दीवक बलेया, होई रेह्‌इयां चौंहीचक लोंई
पुच्छी लै मेरे सग्गीयां साथिया, जान बचाई घरे आया।

हिन्दी अनुवाद

अरी सखियो! भाद्रपद माह के कृष्णपक्ष में कृष्ण मुरारी का जन्म हुआ। कृष्ण कहता है, तू मेरे सगी साथियों को पूछ ले आज मैं बड़ी बुरी तरह प्राण बचाकर घर लौटा हूं। गोपियां उसकी मां से शिकायत करती हैं कि इस कृष्ण कन्हैया ने छींके तोड़ दिये हमारी मटकियाँ फोड़ दीं और हमारे सिर के बिन्ने नदी में बहा दिये। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में अरी सखियो! मेरे घर श्याम मुरारी ने जन्म लिया। कृष्ण मां से कहता है अरी मैया! भले ही तू मेरे साथियों—मित्रों से सुनिश्चिय कर ले। आज मैं बड़ी कठिनाई से अपने प्राणों को बचा कर घर लौटा हूं।

जब मेरा श्याम जन्मा तो घर में जैसे दीपक जल उठा और उस श्याम रूपी कुलदीपक से मेरा घर जगमगा उठा। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! श्याम मुरारी ने मेरे घर में जन्म लिया है। कृष्ण कहता है—अरे मैया तू भले ही मेरे संगी साथियों से पूछ कर निश्चय कर ले कि आज तो मैं

बड़ी मुश्किल से प्राण बचा कर घर लौटा हूं।

इधर गोपियां शिकायत करती हैं—अरे श्याम की मैया इस तेरे श्याम ने हमारी बाह मरोड़ दी, हमारी मटकियां तोड़ दी और सिर के बिन्नों को नदी में प्रवाहित कर दिया है। उधर कृष्ण उत्तर देता है—मैया! तू मेरे मित्रों से पूछ कर निश्चय कर ले कि मैं तो आज बड़ी मुश्किल से अपने प्राणों की रक्षा करके घर लौटा हूं। भाद्रपद के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! कन्हैया ने मेरे घर जन्म लिया है।

नहलाया धुलाया और वस्त्र में लपेट दिया। दाई ने बड़े चाव से उस नवजात शिशु को अपनी गोदी में ले लिया। पांच रुपये दाई को उसका मोल देकर/उसका लाग देकर यह प्यारा बेटा माता को मिला है। जब इस कन्हैये ने जन्म लिया तो यह दीपक की तरह अपने प्रकाश से मेरे घर को जगमगाने लगा भाद्रपद मास में अरी सखियो! मेरे घर में कृष्ण का अवतार हुआ।

मैं अपने इस सुन्दर बेटे को सोने की कटोरी में बताशा घोल कर 'गुड़ सत' (घड़ोत्त—पहला भोजन) देती हूं। मैं इसके लिए चन्दन का झूला बनवाकर उस झूले को रेशमी रस्सियों से बाधूंगी। जब इसने जन्म लिया था तो यह दीपक की भांति जलकर मेरे घर की चारों कूटों को देदीप्यमान करने लगा था। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! कृष्ण ने मेरे घर में अवतार ले लिया।

अब घर में आते जाते पिता वासुदेव बच्चे को झुलाते हैं। वैसे खिलाने वाली स्त्रियां कृष्ण के झूले को झुलाती ही रहती हैं। घर के काम में व्यस्त आती जाती हुई माता देवकी भी इस शिशु को खिलाती है। वैसे खेलाने वाली स्त्रियां कृष्ण के झूले को झुलाती ही रहती हैं। जब ही इस कन्हैये ने जन्म लिया तब ऐसा प्रतीत हुआ था कि मेरे घर में दीपक जल उठा है। इस शिशु रूपी दीपक के उद्‌भट प्रकाश से मेरे घर का कोना-कोना जगमगा उठा था। कृष्ण कहते है—मया! तू भले ही तू मेरे संगी-साथियों को पूछ ले। आज तो बस मैं बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाकर घर लौटा हूं। ●

चुक्केया जी घड़ा

यह गीत कंडी क्षेत्र और पंजल क्षेत्र की मनोभूमि को झलकाता है। कंडी क्षेत्र में शिकार खेलने आए राणा जाति के लोगों ने कंडी की नार को कहा कि वे उसके मायके की ओर के हैं और उनका कंडी के साथ 'साख' (सम्बन्ध) है। उन्होंने बताया कि उनका धन-दौलत चुरा लिया गया है और वे बेघर बेजार हो गए हैं। यहां तक कि उनके घोड़े आदि भी छिन गए हैं। अपना भाई जानकर कंडी की उस नारी ने अपने गले का नौलखिया हार भाइयों को दे दिया और अपने सास ससुर से सौगंध खाकर झूठ बोल दिया कि उसका नौलखिया हार कूएं में गिर गया है। यह गीत ढोलरू के रूप में भी गाया जाता है। बहिन-भाइयों के चरम स्नेह का प्रतीक।

सामान्य परिचय: चुक्केया घड़ा कंड्ढड़ी पाणीये जो चली जाणी नांऽ
चुक्केया घड़ा कंड्ढी पाणीये जो चली जाणी नांऽ
भरेया-जी घड़ा कड्ढड़िये मिणी पर घरेया
हेड़ा-जां खेलदे आए कोई पांजले पंजराणे नांऽ

भाई : पांणी-जां भरैंदिये नारे घुट पाणिये-दा प्यायां नांऽ
बहिन : पाणी-जां प्यांगी मैं भाई, जाति दे कुःण होंदे नांऽ
भाई : आसां-नांऽ हुन्दे भैणे मियें पांजले, पजराणे नांऽ, पांजले पंजराणे नांऽ
कंड्ढिये दे साखले चार चार भाई नां।
बहिन : अग्गें-नां होए तुसां मैलड़े-मैलड़े भेस्सैं-नांऽ, अज किह्यां-करी आए तुसां मैलड़े भेस्सैं-नांऽ
भाई : माल जां खजानां भैणे मिये साढ़ा लुट्टीलेया साभकारां-नांऽ

घोड़ा जां तबेला भैणा साढ़ा लुट्टी लेया सरकारा-नांऽ
इत्ताणे-जां गलींदे भैण भाईयां-दैं गलै लग्गी जांदे-नांऽ
गलैं लग्गी भैण छम-छम देई रोऐ-नांऽ
नौश्रां लखां दा हार भैणा भाईयां दें गलैं लाया- नांऽ
श्रद्धे दा तुसां लैन्यों माल जां भाथेरा-नांऽ
होर जां लैन्यो मैह्लां जो राणियां-नांऽ
चुक्केया जां घड़ा कंड्ढड़ी मुड़ी घरैं चली श्रौंदी-नाऽ
सौह्रा पुच्छै नूहें मिये कैंह तूं ढूण मढूणी-नाऽ
सस्स पुच्छै नूंहें मिये कैंह्-तं ढूऽण-मढूऽणी-नाऽ
नौश्रां लखां दा हार सौरेया टुट्टी खूह्इया मंझ पेऽया-नाऽ
नौश्रां लखा दा हार सस्सू टुट्टी खूह्इया मंझ पेऽया-नाऽ

हिन्दी अनुवाद

कंड्ढ़ी क्षेत्र की गोरीं ने घड़ा उठाया श्रौर पानी भरने को चली गई। हां कंडड़ी क्षेत्र की गोरी घड़ा उठा कर पानी भरने चली गई। घड़ा भर कर श्रभी कंड्ड़ी में ऊंची डंगी पर रखा ही था कि डसे पंजल क्षेत्र के कुछ लोग श्राखेट खेलते हुए श्राते नज़र श्राए। हां पांच राणे श्राखेट खेलते हुए श्राते दिखाई दिये। श्ररे पानी भरती हुई हे नारी! हमें एक घूंट पानी तो पिलाना।

पानी तो तुम्हें पिलाऊंगी पर पहले यह बताश्रो कि तुम जाति के कौन हो? हम पंजल क्षेत्र के रहने वाले हैं पांच लोग हम राणा जाति से हैं। हम कंड्ढी क्षेत्र के लोगों के साख-सम्बन्धी भी हैं। ये चार मेरे भाई हैं।

श्ररे पंजल क्षेत्र के राणे कभी मैले वेश में दिखाई नहीं देते। पहले कभी इस मैले वेश में दिखाई नहीं दिये। श्राज श्राप कैसे मैले वेश में हो, मुझे बताश्रो। श्ररी बहिना! हमारी धन-दौलत साहूकारों ने लूट ली है श्रौर घोड़े-तबेले सरकार ने छीन लिए हैं।

इतना सुनते बहिन श्रपने भाइयों के गले लग गई। भाइयों के साथ श्रंकमाल होकर छम-छम रोने लगी।

बहिन ने श्रपने गले का नौलखिया हार उतारा श्रौर भाइयों को पहना दिया। श्ररे भाइयो! श्राधे हार से तुम जायदाद खरीदना श्रौर श्राधे से श्रपने महलों के लिए रानियां ले श्राना।

फिर वह कंड्ढो की महिला श्रपना घड़ा उठा कर घर लौट श्राती है।

ससुर अपनी बहू से पूछने लगा —अरी बहू उदास सी क्यों है ?
सास पूछती है अरी बहू तू उदास क्यों है ?
हे ससुर जी ! मेरा नौलखिया हार टूट कर कुंए में गिर गया है ।
हे सास जी ! मेरा नौलखिया हार टूट कर कुंए गिर गया है ●

संग्रहण व अनुवाद
डॉ० पीयूष गुलेरी

कांगड़ा (पालमपुर) क्षेत्र

शिव गौरजा का विवाह

प्रस्तुत गीत में हिमालय पर्वत के घर पैदा हुई गौरजा के विवाह तथा सगाई का वर्णन है ।

हिंचले राजे नैं कन्या जे जाई
सद्दे ब्राह्मण रास गणाई
इसा मेरीया कन्या जो, इसा मेरीया गौरजा जो
खरा वर चाहिए ए- छैल वर चाहिए
सुणा जी हमारेयां, प्रोहता जी
जोड़ी वर चाहिए—राम ।
ना इत्थू रसदी ना इत्थू बसदी,
कुसा देहिया सेधा मैं जाणा जी ?
काले-काले वणे बिच धूंए दी घट्टा
इसा देहिया सेधा तुसा जाओ प्रोहता जी ।
हत्थैं लई धोती ते कच्छा मारी पोथी

घर-वर ढूंढण चलेया—राम ।
इश्क वण हंडेया दुग्रा वण हडेया,
त्रियै वणैं साधुए दा डेरा राम ।
तू कजो ग्राया भोलेया ब्राह्मणा,
न मेरैं छन ता न मेरैं टपरी
न मेरैं झोली ता न मेरैं खपरी
न मेरैं खाणे जो दाणे—राम
मैं कियां व्याहणी गौरजां—राम ।
तेरैई छन ता तेरैं है टपरी
तेरैई झोली ता तेरैई खपरी
तेरैई खाणे जो दाणे – राम
तैंही व्याहणी गौरजा राणी शिवजी ।
चिकड़े-चिभढ़ैं शिव जी न्हौण संजोया
कालैं कजलैं पीवल कीती—राम ।
ग्रंगै वभूति गलै मुण्ड माला
राहूएं ता केतूएं ढोल बजाए
भूत प्रैत सह जानिया चलाए
बैंलैं चढ़ी सिब ब्याहणा ग्राए—राम ।
दिख-दिख नड्डुल्ले तू ग्रपणे जुग्राइये
धारीयैं कणसारीयैं सस दिखदी जुग्राइये
धीया सरूप जुग्राई करूप
फिट-फिट धीये तू कजो जाई
तिज्जो सरेखा नी मिल्लेया जुग्राई
तैं धीए लाज लुग्राई—राम ।
चिकड़े-चिभढ़ैं गौरजा जो न्हौण कराया
कालैं कजलैं पीवल कीती—राम ।
हत्थां दे गहणें सह पैरैं पुग्राए
ढाका दा घघरा सह सीसें लुग्राया
सिरे दा सालू सह ढाका बन्हाया
गौरजा दा रूप बदलाया—राम ।
धारेयां-धारेयां सिव जी ग्रपणे सरूपे
ग्रम्मा दा दुखड़ा मटायां—राम ।
गंगां ता जमना दा न्हौण संजोया
कुंगुएं-केसरैं पीवल कीती—राम ।

सूरज चन्द्रमा मुगटैं जड़ाए
म्याणु तारा कट्टी लाया—राम ।
सौ-सठ देवते जानिय चलाए
सदा सिव व्याहणा आए —राम
धारीयैं कणसारीयैं दिखदी नडुल्ल
धीया कुरूप जुआई सरूप
एह कीयां गल्ल बणनी — राम ।
गंगा जमना जलैं गौरजां जो न्हौणा कराया
कुंगुएं केसरै पीवल कीती — राम
हत्थां दे गहणे सह पैरै पुआए
ढाका दा घघरा सह ढाका वन्हाया
सिरे दा सालुआ सह सिरैं उड़ाया
गौरजां दा रूप सजाया—स्याम ।
सिव-गौरजां दा व्याह वो रचाया
धीया जो दिंदी धूप सह ससड़ी
जुआइये जो अर्घ दुआई राम
धन जी जुआइया धन-धन सिवजी
धन-धन वांकड़ा रूप— राम

हिन्दी अनुवाद

हिमालय के घर में जब गौरजा का जन्म हुआ तो उन्होंने ब्राह्मणों को बुला कर कन्या की राशि गिनवाई और लगन लगवाया (फिर वे बोले) मेरी बेटी गौरजा को आप अच्छा सा घर-वर ढूंडिए हमारे पुरोहित जी! आप सुन लीजिए अच्छा और सुन्दर वर चाहिए जिस से जोड़ी जच जाए। (ब्राह्मण बोले) यहां तो कोई भी बस्ती नगर नहीं मुझे बतलाइये कि मैं किस सीध (दिशा) में जाऊं? (राजा बोला) काले-काले (देवदार वाले) जगल में जहां से धूआं उठ रहा होगा तुम उसी दिशा में चले जाना प्रोहित जी। हाथ में धोती उठा कर और बगल में पोथी लेकर प्रोहित गौरजा के लिए घर-वर की तलाश करने चल पड़ा। प्रोहित ने एक वन पार किया फिर दूसरा, जब वह तीसरे वन में पहुंचा तो उसे एक साधु का डेरा दिखाई दिया। (ब्राह्मण को देख कर और उसका आशय भांप) शिव जी बोले, अरे भोले ब्राह्मण तुम यहां क्यों आए हो? मेरे पास न तो छन (छप्पर) है न

झौंपड़ी । न मेरे पास झोली है न भिक्षा मांगने के लिए खप्पर ही है और तो और मेरे पास तो खाने के लिए अन्न का दाना भी नहीं है । तुम्हीं बतलाओ मैं गौरजा को कैसे व्याह सकता हूं ? (इस बात को सुन कर) ब्राह्मण बोला, (आप ऐसा मत कहिये) आपके पास छन भी है और झौंपड़ी भी। खाने के लिए अन्न की भी आपके यहां कोई कमी नहीं है। गौरजा से आपका विवाह होकर ही रहेगा । (इतना कहकर ब्राह्मण लौट आया । शिव जी अपने विवाह की तैयारियां करने लगे) शिव ने कीचड़-गारे में स्नान किया । मेंहदी के स्थान पर काजल का प्रयोग किया । अंगों में विभूति रमा ली और गले में मुण्डमाला पहन ली । राहू और केतु को ढोल बजाने का कार्य सौंपा गया । सभी प्रकार के भूत-प्रेत बारात में चल पड़े और शंकर भगवान ने बैल पर चढ़ कर ससुराल की ओर प्रस्थान किया । (जब बारात सुसराल के समीप पहुंची तब) सभी स्त्रियां नडुल्ल (मयना) को कहने लगी कि तुम अपने जवाई को देख लो । (मयना) इधर उधर झांक कर अपने जंवाई को देखने लगी । उसने देखा कि जितनी सुन्दर उसकी बेटी है उतना ही कुरूप उसका जंवाई है। (मयना बोली। हे बेटी ! तुम्हारे जन्म लेने को धिक्कार है जितनी तुम सुन्दर हो उसके अनुरूप तुम्हें वर नहीं मिला । तुमने तो हमें भी लाज लगवाई है । उन्होंने गारे और कीचड़ से गौरजा को स्नान करवाया । मेंहदी की जगह काजल का प्रयोग किया । हाथों के गहने पैरों में पहनाए, घाघरे को सिर पर ओढ़ा दिया, सिर का दुपट्टा कमर में बांध दिया । इस प्रकार उन्होंने भी पति के अनुरूप ही गौरजा का रूप बना दिया । (अब गौरजा शिव जी को मन ही मन कहती है शिव जी ! आप अपना असली स्वरूप बना लो मेरी मां का दुखड़ा मिटा दो) । उन्होंने (शिवजी ने) गंगा जमना के जल से स्नान किया, कुंगू और केसर से शृंगार किया । सूर्य और चद्रंमा को मुकुट पर लगा लिया । भ्यारगु तारे (भोर के तारे) को अपनी कमर में बन्धे कमर बन्द से लगा लिया । सौ-साठ देवताओं को बारात में चलने को तैयार किया । इस प्रकार पूर्ण रूप से सुसज्जित होकर सदा शिव व्याह करने के लिए चले । (गौरा की मां) छुपछुप कर अपने जवाई को देखने लगी । उसने देखा कि उसकी बेटी तो इस वर के आगे बहुत कुरूप दिखाई दे रही है, शिव जी तो बहुत सुन्दर हैं । अब क्या होगा, यह बात बनती नही दीखती । उन्होंने भी गंगा जमना से जल मंगवा कर गौरजा को स्नान करवाया । कुमकुम और केसर से उनका शृंगार किया । हाथ के गहने हाथों में तथा पैर के गहने पैरों में पहनाए । घाघरा कमर में और सालू (ओढ़नी) सिर पर ओढ़ाया । इस प्रकार उन्होंने भी

दूल्हे के अनुरूप दुल्हिन का रूप भी संवार दिया। अब शिव गौरजा के विवाह की रसम पूरी होने लगी। सास गौरजा को धूप और शिव जी को अर्घ देकर उनका अभिनन्दन करने लगी और प्रसंशा करती हुई बोली भगवान शंकर तुम धन्य हो और तुम्हारा यह स्वरूप धन्य है।

कांगड़ा (पालमपुर) क्षेत्र

लंका दा दान

(प्रस्तुत गीत में लंका के निर्माण का वर्णन है)

चारेयो नदियां ज चारेयो बगियां जी
चोंही दे नीर सुहांए राम।
चारेयो नारी जी चारेयो पुरख
चोंही दे जोड़ जड़ाये राम।
चारेयो खुहीयां जो चारेयो बेड़ियां जी
चोंहीं दे नीर सुहाए राम।
गंगा दे न्होणे जो चलो भोलेनाथा
गंगा न्होणे जो जाणा राम।
इक्की बखैं न्हौणा लगे भोलेनाथ जी
दूए बखैं गौरजा राणी राम।
ठंडेया छिट्टेयां न लायां भोलेनाथ जी
ठंडेया छिट्टेयां न लायां राम।
दो हथ टपरू नी बणेया भोलेनाथा जी
कुथू बेई करनी है सध्या राम।
पले बिच खेल रचाई भोलेनाथे
सूने दी लंका बणाई राम।
भत्तर कोठे दो सौ चवारे
सौ सठ लाए दरवाजे राम।
दिख मेरी गौरां मैं लंका बणाई
इत्थू बैठी करनी है संध्या राम।
होरनी जो भेजणीयां चिट्ठियां ता पत्रियां

प्रोहते जो न्यूदर देणी राम ।
सब-सब ब्राह्मण आए भोले नाथ जी
कुले दा प्रोहत नी आया राम ।
अन्न मैं देसां धन मैं देसां
मुंह मंगी दछणा मैं देणी राम ।
अन्न बन्ही लैणा मैं धन बन्ही लैणा
दछणा च लैणी मैं लंका राम ।
हाथै लिया लोटा संकल्प जे कीता
लंका दीती दछणा राम ।

हिन्दी अनुवाद

चार नदियां है चारों बह रही हैं और चारों का जल सुहावना (निर्मल) है । चार नारियां हैं चार पुरुष है चारों का मेल कराने वाले श्रीराम हैं । चार कूंए हैं चार बावड़ियां हैं, चारों का जल स्वच्छ हैं । (पार्वती भगवान शंकर को कहती है) हे भोले नाथ ! आप हमारे साथ गंगा में स्नान करने के लिए चलिए । (भोलेनाथ जी पार्वती को लेकर गंगा में स्नान करने चले) एक ओर शिव जी नहाने लगे दूसरी ओर पार्वती । (भगवान शंकर पार्वती पर ठंडे जल के छींटे डाल कर उन से छेड़खानी करने लगे) पार्वती कहती है, भोलेनाथ जी ! आप ठंड़े पानी के छींटे मत लगाइये । (स्नान करते-करते रूठने की मुद्रा में पार्वती भगवान शंकर को ताना 'देती है) आप से दो हाथ झोंपड़ी भी बनाई नहीं गई बताइये अब मैं कहां बैठ कर सन्ध्या करू ?' (शंकर से भी ताना नहीं सहा गया) उन्होंने अपनी माया के बल से पल भर में सोने की लंका बना कर तैयार कर दी उस लका के बहतर कोठे और दो सौ चौबार थे । सैकड़ों ही दरवाजे उसमें लगाए गए । अब शंकर उससे बोले, 'देखो गौरजा ! मैंने तुम्हारे लिए लंका का निर्माण किया है तुम यहां बैठ कर पूजा करो ।' (अब पार्वती शिव जी से कहती है)' लंका की प्रतिष्ठा करवानी है कुल पुरोहित को बुला लीजिए औरों को बुलाने के लिए तो आप चाहे पत्र ही भेज दीजिए परन्तु अपने पुरोहित को तो विधिवत निमन्त्रण देना होगा ।'' (शकर भगवान ने सभी ब्राह्मणों की भान्ति पुरोहित को भी पत्र भेज दिया । सभी ब्राह्मण पहुंच गए परन्तु कुल परोहित नहीं आया) पार्वती बोली - भोलेनाथ जी सभी ब्राह्मण पहुंच गए हैं परन्तु कुल पुरोहित नहीं आया ! पुरोहित को बुलाने शंकर भगवान स्वय गए और बोले, मैं तुम्हें बहुत सा अन्न धन दूंगा और इसके अतिरिक्त

मुंह मांगी दक्षिणा भी दूंगा।'
(कुल पुरोहित पहुंच गया। उसने लंका की प्रतिष्ठा करवा दी, शंकर भगवान ने उसे अन्न और धन दिया) पुरोहित ने अन्न तथा धन बांध लिया। तब उससे भगवान शंकर ने दक्षिणा मांगने को कहा, पंडित ने दक्षिणा में लंका को ही मांग लिया।
शंकर भगवान ने हाथ में पानी का लोटा लिया और दक्षिणा के रूप में लंका का संकल्प कर दिया

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

राजा गोपी चन्द

राजा गोपी चन्द ने एक सूअर के बहाने गाय पर बाण चला दिया। गाय हत्या के प्राश्चित का वर्णन इस गीत में है।

सूरे दे बहाने गोपी चन्दे कपला जो मारी
जी कपला जो मारी
हत्या लगी कुलें सारै राजा जी।
घरै जे आया गोपी चन्द माता जो पुच्छदा जी
माता जो पुच्छदा
कियां जांगी हत्या म्हारी माता जी ?
कन्ना ता छेदी पुत्रा मुंदरा जे पायां
जी मुंदरा जे पायां
भागवां वस्त्र लायां बेटा जी
दखणे भी जायां पुत्रा पछमे भी जायां
जी पछमे भी जायां
माता दे बेहड़ै मत औंदा बेटा जी।

पहले दा हंडगा वो माता, माता दे वेहड़े
जो माता बेहड़े
देश्रो माता मिजो भिछिया माता जी ।
दखरगे भी जांया पुतरा पछमे भी जायां
जी पछेमे भी जांया ।
भैंणा दे देसैं न जायां बेटा जी ।
दूजी ता अलख गोपीचन्द भैंणी दे बेहड़ै
जी भैंणी दे बेहड़ै
देश्रो माई असां जो भिछिया, रामा जी
थाल ता भरी छोरी भिछिया लई आई
जी भिछिया लई आई
लियो जोगी तुसां भिछिया जी ।
तेरी ता भिछिया छोरी असा नी लैंणी
जी असां नी लैंणी
राणी देवे तां लइये छोरी जी ।
कही न सकां राणी बोली न सकां
जी बोली न सकां
इयां लगे भाई तुम्हारा राणी जी ।
नक्के कटासां श्रो छोरी, जीभा बढ़ासां
जी जीभा बढ़ांसा
महलां ते बाहर नकालां छोरी जी ।
थाल ता भरेया वो रणी मुंगेयां ता मोतियां
जी मुंगेया ता मोतिया
भिछिया देणा आई राजा जी ।
पैरा बखी दिखदी राणी मुखे बखी दिखदी
भैंणा ता गई लटोई राजा जी ।
तू ता था वो भाइया दिल्लिया दा राजा
वो दिल्लिया दा राजा
एह् क्या भेस बणाया राजा जी ?
चनण कटायां वो भाइया चिखा रचायां
जी चिखा रचायां
अणदागिया ठाह्री दाग लायां राजा जी

राजा गोपी चन्द (जब शिकार खेल रहे थे) ने सूअर समझ कर बाण चला दिया जो एक गाय को लगा जिससे गाय मर गई और यह गौ-हत्या का पाप सारे कुल के लिए कलंक बन गया।

घर आकर गोपीचन्द अपनी मां से पूछता है कि मां मुझे गऊ हत्या लग गई है इसके निर्वाण का उपाय बतलाइये।

मां कहती है, बेटा ! कानों में छिद्र कर मुंदरे डालो और भगवें रंग के वस्त्र पहन कर घर से निकल जाओ। तुम दक्षिण और पश्चिम दिशाओं में चले जाना किन्तु अपनी मां को शक्ल न दिखाना।

(इस पर राजा गोपी चन्द कहता है) मैं पहले तो तुम्हारे ही आंगन में अलख जगाऊंगा। मां तुम मुझे सबसे पहली भिक्षा अपने हाथ से ही देना।

माँ फिर कहती है तुम दक्षिण दिशा में भी जाना और पश्चिम में भी किन्तु अपनी बहन के देश में मत जाना।

गोपी चन्द मां से भिक्षा लेकर आगे निकल गया उसने बहन के आंगन में जाकर अलख जगा दी और बोला, 'माई भिक्षा दो'

अलख सुनकर बहन की नौकरानी थाल भरकर भिक्षा ले आई और बोली, 'लो जोगी जी ! भिक्षा ले लो।'

उसकी बात सुन कर राजा बोला' 'रे लड़की ! तुम्हारे हाथ की भिक्षा हम नहीं लेते। रानी देगी तभी लेंगे।'

बात सुनकर नौकरानी ने राजा को पहचान लिया परन्तु वह हैरानी में पड़ गई कि क्या यह गोपीचन्द ही है या का कोई अन्य ?

नौकरानी भीतर जा कर बोली, 'रानी ना तो मैं कह सकती हूं और न ही बोले बिना रह सकती हूं, मुझे तो वह साधु ऐसा लग रहा मानो आपका भाई गोपीचन्द हो'

उसकी बात को सुनकर रानी बोली 'तू यह क्या कह रही है मैं तुम्हारी नाक कटवा कर जीभ निकलवा कर तुम्हें अपने महलों से बाहर निकाल दूंगी।' इतना कहकर रानी ने मोतियों का थाल भरा और स्वयं भिक्षा देने के लिए बाहर निकली।

रानी की दृष्टि ज्यों ही राजा के स्वरूप पर पड़ी वह उसके मुख की ओर देखने लगी। भाई को देखते ही वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी और विलाप करने लगी भैया ! तुम तो दिल्ली के राजा थे, तुमने यह क्या वेश बनाया है? (अच्छा अब

मुझ से नहीं सहा जाता मेरे प्राण पखेरू उड़ने वाले हैं,) चन्दन के पेड़ को कटवा कर तुम चिता रचाना और ऐसे स्थान पर अग्नि लगा देना जहां कोई दाग न हो' (अर्थात तुम्हारी हत्या के कलंक को सुनकर और तुम्हारे वेश को देखकर मेरा तन मन जल कर राख हो रहा है ●

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

सस्सू झगड़ा रचाया

प्रस्तुत लोकगीत में सास के दुर्व्यवहार से बहू की हत्या का वर्णन है।

संझलीया बेला सस्सू झगड़ा रचाया जी
झगड़ा रचाया
दूरे दा भरना जलेया पाणी ए।
टट्टू तरियाहे नूंहैं बच्छू तरियाहे जो बच्छू तरियाहे
मरूए दी डाली कमलाई ए
पंज सत खूहीयां सस्सू पंज सत बेड़ियां जी
पंज सत्त बेड़ियां
चनणे दीया बांई ठंडा नीर ए।
चुकेया घड़ोलू नूहां मिणी पर रखेया जी
मिणी पर रखेया,
बाल नी लांदा पापी कोई ए।
पारलिया रिढ़ीया सस्सू दो जंणे उतरे जी, दो जणे उतरे
मंझ वो नणाना दा वीर ए।
सूई-सूई पगड़ी सस्सू कूंजां दी कगली, जी कूंजा दी कगली
चलदे दी चाल पछैणी ए
नणदा दियां अक्खां सस्सू देरे दी नुहार जी, देरे दी नुहार
चलदे दी चाल पछैणी ए।
देई दियां सस्सू मेरे गैह्णे ता कपड़े जी, गैह्णे ता कपड़े

औंदे जो करना सगार ए।
बत्ता दा थकेया तूहे धुप्पा दा भज्जेया जी, धुप्पा दा भज्जेया
नजर भरी मत दिखदी ए।
खाई लियां तूहें लुधियां कचौरियां जी, लुधियां कचौरियां
मंझलैं चबारैं चढ़ी सोयां ए।
पहले ता दिन्दी सस्सू रूखियां ता सुक्कियां जी, रूखियां ता सुक्कियां
अज कियां पक्के पकवान ए !
गले बिच पई जांदी चरमरी जी, चरमरी जी
पेटा च उठदा ऐ हौल ए
बछाई लियां तूहें अज ल्हेफ तलाइयां जी ल्हेफ तलाइयां
मंझले चबारैं चढ़ी सोयां ए।
अग्गैं ता दिन्दी सस्सू टुट्टडे खंधोलु जी, टुट्टडे खंदोलु
अज कियां ल्हेफ तलाइयां ए ?
बोहड़ी बछाए तूहे ल्हेफ तलाइयां जी ल्हेफ तलाइयां
मंझले चबारैं सई गई ए।
अम्मा भी सुभी मेरा बापू भी मिल्लेया जी, बापू भी मिल्लेया
नार मेरी नजरी नी आई ए।
चुकेया घड़ोलू पुत्रा ढाका पर रखेया, जी ढाका पर रखेया
खूहीया कनारे चली गेई ए।
खूहीया नी मिल्ली माए बोड़िया नी मिल्ली, जी बोड़िया नी मिल्ली
रातीं बेला कुथू गई ए !
सिरे पैरैं कमली पुत्रा चढ़ी के चबारे जी, चढ़ी के चबारे
मंझले चबारैं सई रही ए।
हक्का भी पाइयां माए बाहीं ल्होलियां जी बाहीं भी ल्होलियां
इक्क भी हक्क नहीं सुणदी ए !
खाधे पकुआन पुत्रा तिरमिरी पैई जी, तिरमिरी पैई
मुंहे ढकी सई गई ए।
फिट-फिट माए सिरैं हत्या तें लेई जी, हत्या तै लेई
तैं मेरी नार मुकाई ए।
पकड़ेया घोड़ू पुतरैं अड़िया दो लाई
हुण नहीं औंदा तेरैं देस ए।

हिन्दी अनुवाद

सांझ हो रही है, सास अपनी बहू से झगड़ रही है, अभी उसे बहुत दूर से पानी भी लाना है।

सास बहू को कहती है कि कट्टू (भैंस के बच्चे) और बच्छू (बछड़े) प्यासे हैं। मरूए की क्यारी भी सूख रही है तुम पानी लाओ।

बहू पूछती है 'मां जी ! पांच सात कुएं है और पांच सात बावड़ियां हैं मुझे बतलाइये कि मैं कहां से पानी लाऊं'

सास कहती है पांच सात कुएं और बावड़ियां तो हैं परन्तु तुम चनण की बावड़ी से ठण्डा पानी ले आओ।

बहू ने घड़ा भर कर मेंढ पर रख दिया किन्तु घड़ा बड़ा था उसे कोई भी व्यक्ति नहीं दीखता था जो उस घड़े को सिर पर उठाने में उसकी सहायता करे। सभी समीप से गुजर जाते थे किसी को उस पर दया न आई।

(किसी प्रकार घड़ा उठाकर वह अपने घर पहुंच गई और प्रसन्नता पूर्वक सास से बोली) 'मां जी ! पार वाले टीले से दो व्यक्ति उतरे हैं उनमें से एक नन्द का भाई (अर्थात मेरा पति) है'

(सास ने बहू से प्रश्न किया) तूने कैसे जान लिया कि पार वाले टीले से उतरने वाले लोगों में तुम्हारा पति भी है।

(तब बहू बोली) मैंने देखा कि उनकी लाल रंग की पगड़ी है, उस पर कूंज के पंखों की कलगी है और मैंने तो दूर से उनकी चाल भी पहचान ली है। ननद की तरह उनकी आंखें है देवर जैसी शकल है और चाल से तो पता ही चल जाता है।

अब आप जल्दी से मेरे गहने कपड़े निकाल दीजिए मैंने उनके आने से पहले-पहले शृंगार करना है।

तब सास बोली, देखो वह धूप से कुम्हलाया हुआ और सफर करके, थका मांदा घर आ रहा है। तुम आज उससे दूर ही रहना नज़र भरकर उसकी ओर मत देखना।

सास ने बढ़िया-बढ़िया पकवान पकाए और उसे खाने के लिए परोस दिए। उन्हें देखकर वह बोली 'सास जी ! पहले तो आप रूखी सूखी रोटी देती थीं आज पकवान किस लिए पकाए गए हैं ?' खाना खाते ही उसके गले में जलन सी पड़ती है और पेट में हौल उठने लगता है।

(अब सास उसे कहती है) 'बहू ! तुम लिहाफ और तलाइयों से बिस्तर लगा कर मंझले चौबारे में उनके आने से पहले-पहले सो जाओ'

सास के व्यवहार पर उसे आश्चर्य होने लगा कि पहले तो यह सास चीथड़ो में

सुलाती थी आज क्या बात है कि यह मुझे लिहाफ यौर तलाइयों में सुला रही है। उसने लिहफ-तलाइयों का ऊपरी चौबारे में बिछाया और सास के कहने के अनुसार जाकर सो गई।

(जब लड़का घर आया तो वह अह्लादित आंखों से इधर उधर अपनी प्यारी पत्नी को देखने लगा) वह बोला 'अम्मा से मिल लिया बापू से मिल लिया परन्तु मेरी पत्नी दिखाई नहीं दे रही है वह कहां है'

(तब मां बोली) 'बेटा! वह घड़ा उठाकर पानी लेने के लिए कुएं पर गई है।' (पति झट कुएं की ओर चल पड़ा परन्तु उसे वह वहां भी न मिली तो मां से बोला) 'मां! मैंने उसे कुएं पर भी ढूंढा, बावड़ी पर भी देखा तुम सच सच बताओ कि वह रात्री के समय कहां गई है?'
तब मां बोली 'उसने सिर पर कम्बल ओढ़ा है और बीच वाले चौबारे में चढ़ कर सो गई है।'

(इतना सुन कर वह चौबारे पर आ गया)। उसने आवाजें लगाई, बाहों से हिलाया किन्तु वह न उठी तब वह मां से बोला) 'मैंने उसे आवाजें लगाई हिलाया परन्तु वह तो बोलती ही नहीं है। मेरी एक भी आवाज नहीं सुनती।'
तब मां अपनी करतूत पर पर्दा डालती हुई बोली, 'बेटा! पकवान खाते ही उसके गले में जलन सी पड गई थी और इसीलिए तो वह मुंह ढाप कर सो गई थी।'

(बेटे को मां की काली करतूत समझने में देरी न लगी वह बोला) 'मां तुम्हारी इस काली करतूत को धिक्कार है, तुमने मेरी पत्नी की हत्या की है उसकी हत्या का कलंक तुम्हारे सिर पर है।'
उसने घोड़ा खोला और उस पर सवार होकर मां से बोला 'अब मैं तुम्हारे देश में कभी भी नहीं आऊगा।' इतना कह कर घोड़े को एड़ी लगाई और वहां से चल दिया ●

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

बली राजे दा जग

(राजा बली की दान परीक्षा का वर्णन)

राजैं बलीए कोई जग रचाया,
सौ सठ ब्राह्मण न्यूंदरे राम ।
पंज सत ब्राह्मण बीहा जे बैठे
पंज सत परोली दुआरैं राम ।
बालके दे रूपैं सुआमी जे आए
बैठे धूणी रमाई राम ।
क्या बालका धोती पोथी तैं लैंणी ?
की भत्त खाणा रसोई स्याम ।
न जजमाना धोती-पोथी मैं लैंणी
न भत्त खाणा रसोई राम ।
क्या बालका गजली घोड़ी तैं लैंणी
क्या राणिया पर हाथ स्याम ।
न वो राजा गजली घोड़ी मैं लैंणी
राणी हमारी है माता स्याम ।
ढाई पैर ब्राह्मण धरती जे मंगदा
इतणा की लैंणा मैं दान राम ।
औलिया दे मुकुएं सुक्कर जे बैठा
करना नी दिन्दा है दान स्याम ।
द्रुभा दे जुड़ूए दी सुक्करे जो लाई
सुकरे दी हाख फटाई स्याम

राजा बली ने यज्ञ रचाया जिसमें सैंकड़ो ब्राह्मणों को न्योता भेजा
पांच सात ब्राह्मण तो घर के बारह के बीह (अटली) पर आकर बैठ गए और कुछ डयोडी के दरवाजे पर
बालक के रूप में जगतपति भगवान स्वय वहां पधारे और धूनी जला कर बैठ गए
राजा ने बालक से पूछा, "हे बालक! क्या तुम पहनने को धोती और पढ़ने को पोथी लोगे अथवा रसोई घर में पका भात खाओगे ?"
बालक बोला, "हे यजमान! न तो मुझे धोती पोथी चाहिए और न मैं रसोई में पका भात खाऊंगा"
(इस पर राजा हंस कर) बोला, 'क्या तुम्हें गजली (बढ़िया) घोड़ी लेनी है या फिर तुम्हारी दृष्टि मेरी रानी पर है।'
तब बालक बोला, "नहीं राजा, मुझे तुम्हारी घोड़ी नहीं चाहिए, रानी तो हमारी माता तुल्य है।
मुझे तो केवल अढाई हाथ भूमि चाहिए जिस पर मैं अपनी कुटिया बनाऊंगा।"
इतनी बात जब ब्राह्मण ने की, राजा धरती दान करने को तैयार हो गया किन्तु उसका गुरू शुक्र सारी बात समझ गया वह मसरवे के मुख पर जाकर बैठ गया, जिससे संकल्प के लिए पानी ही नहीं निकल पाया।
(भगवान उसकी चालाकी भांप गए) उन्होंने दूब से मुसरवे की टूटी को छेड़ा जिससे शुक्र देवता की एक आंख फूट गई (और राजा से बावन ने संकल्प करवाया और तीन डगो में तीनों लोकों को माप लिया) ●

संग्रहण व अनुवाद
सुदर्शन डोगरा

कांगड़ा क्षेत्र

उआरे तैं आई राणी देवकी

यह लोकगीत उस समय की घटना को चित्रित करता है जब राजा कंस अपनी बहन देवकी की कोख से उत्पन्न सात सन्तानों का वध कर चुका होता है और भगवान कृष्ण के जन्म के उपरान्त देवकी अपने नवजात शिशु कृष्ण को यशोदा की कन्या से बदल लेने की आपसी सहमति व्यक्त करती है। इस योजना से नवजात कृष्ण को कंस के कोप से बचा लिया जाता है फिर भी यशोदा की कन्या को कंस देवकी की सन्तान समझ कर कठोर शिला पर पछाड़ता है। कंस द्वारा कन्या पछाड़े जाने से पहले आकाशवाणी करती हुई कि मरने वाला तो यमुना पार है, बिजली बन कर चमक उठी

उआरे तें आई राणी देवकी अजी ओ ...
पारे तें आई जसोदा, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी
भरेया घड़ोलू देवकिया डंगिया पर रक्खेया अजी ओ
नैण भरी-भरी रोए, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
तू कह्‌जो रोंदी भैह्‌णे देवकिए अजी ओ
क्या तेरे मने बिच कोह्‌, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
सत जनमें राजे कंसे मारे अजी ओ
अठुएं लैणा अवतार, झांझर बजदी

अजी ओ झांझर बजदी।
जे तेरें जन्मेगा बालक अजी ओ
गोकुल देणा पुजाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
भादुं म्हीने दी अष्टमी अजी ओ
जन्मेया कृष्णा मुरार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
जागदे पैंह्‌री सेई गेए न अजी ओ
खुल्ली गेऐ न धर्म दुआर, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ओ।
खाह्‌रिया पाया जी नी हे बसुदेवें अजी ओ
जाणा ऐ जमुना दे पार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
अग्गे तैं जमुना उछली अजी
पिच्छे तैं सींह घरणावे, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
चरणां बंदी जमुना थल्ले बगे अजी ओ
सींह लेया बणवास, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
उठ जसोदे सूत्तीए अजी ओ
'बसुआ' खड़ा दरबार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
बालक लीजो कन्या दीजो अजी ओ
कन्या लैंणी बटाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
छैल-छलैड़ी उठी ए अजी ओ
बालक लेया गलें लाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
औंदिया कन्या रोई सुणाया अजी ओ
कन्या लैया अवतार, झांझर बजदी
अजी को झांझर बजदी।
सुत्तेयो पैह्‌री जागी खड़ोत्ते अजी ओ
चढ़ी ए धर्म दुआर, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।

खबर करो राजे कंसे जो अजी ओ
कन्या लैया अवतार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
सद्दी बुलायो पढ़ेयो पंडतां अजी ओ
कन्या दा लग्न गणायो, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
वेदां दे अन्दर बालक अजी ओ
कन्या किस विध होई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
सच ग्लायां मैंह्णें देवकिए अजी ओ
तू सतवंती ए नार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
जन्मेया था वीरा बालक अजी ओ
कन्या लेई ए बटाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
सदू बुलायो चूसड़ धोबिए अजी ओ
वज्र सिला परछाड़यो, झांझर बजदी
अजो ओ झांझर बजदी ।
मिह्जो क्या मारना धोबिया अजी ओ
मरने वाला चमनापार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
हत्थां तैं छुड़की ओ गेई ए अजी ओ
बिजली लैया लशकारा, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।

हिन्दी अनुवाद

एक ओर से रानी देवकी आई
और दूसरी ओर से यशोदा, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती है ।
घड़ा भरकर देवकी ने डंगी पर रखा
नयन भर-भर कर रोती है, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती ।
तू किस लिए बहन देवकी रो रही है

कौन सा क्रोध तेरे मन में है, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती ।
मेरी कोख से पैदा हुए सातों को राजा कंस ने मार डाला
आठवें ने अवतार लेना है, झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजदी है ।
अगर तेरे घर बालक जन्मा
तो उसे गोकुल पहुंचा देना, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती
भाद्र मास की अष्टमी अजी हां
जन्मेया कृष्ण मुरारी, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती ।
जागते हुए पहरेदारोंकी आंख लग गई
धर्म द्वारा खुल गए, झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजती है
बासुदेव ने टोकरी में डाल
उसे यमुना के पार पहुंचना है
अजी हां झांझर बजती है
आगे से यमुना उछल पड़ी
पीछे से शेर गर्जने लगे, झांझर बजती है
अजी झांझर बजती है ।
यमुना ने बालकृष्ण के चरण छूए और नीचे से बह गई
शेर ने बनवास लिया, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है ।
सोई हुई जाग जा
बासुदेव तेरे द्वार पे खड़ा है, झांझर बजती है ।
अजी हां झांझर बजती है ।
बालक ले लो, कन्या दे दो
कन्या परिवर्तित कर लेनी है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है ।
सुन्दर छैल छबीली उठी
और बालक को गले लगा लिया, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है ।
कन्या ने आते ही रोकर सुनाया

कन्या ने अवतार लिया, झांझर बजती है।
सोए हुए पहरेदार जाग पड़े
धर्मद्वार पर वह चढ़ाई गई, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
राजा कंस को खबर करो
देवकी के यहां कन्या ने जन्म लिया है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
पढ़े लिखे पंडितों को बुलवा भेजो
कन्या का लग्न आदि गिनाओ, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
वेदों के अन्दर तो बालक है
कन्या ने किस विधि जन्म लिया, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
बहन देवकी सच बता
तू सतवंती नार है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
जन्मा तो वीर बालक था
उसे कन्या से बदल लिया है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
घूस लेने वाले धोबी को बुलाओ
इस कन्या को वह पत्थर शिला पर पटकाए, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
हे धोबी। तूने मुझे क्या मारना
मरने वाला तो बच कर युमना पार पहुंच गया है
अजी हां झांझर बजती है।
वह कन्या हाथ से तत्काल निकल छूटी
बिजली के रूप में चमकी, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

धर्मू सूरमा

लंज (कांगड़ा) क्षेत्र के आसपास ही क्या संपूर्ण कांगड़ा में धर्मू डाकू (धर्मू शूरवीर भी) प्रसिद्ध था। कहते हैं इस सम्पूर्ण क्षेत्र में इस डाकू का आतंक व्याप्त था। बड़े भाई ने पुलिस को इसके छुपे होने की सूचना दी। पुलिस पहले ही इसका पीछा कर रही थी। इसने डट कर पुलिस का मुकाबला किया। सिपाहियों और थानेदार ने उससे रिश्वत मांगी कि उसे छोड़ दिया जाएगा। रिश्वत देकर बच निकलना उसे शोभा नहीं दिया। अगली सुबह बड़ी चालाकी से उसने पांचों सिपाहियों और छठे थानेदार को तलवार से काट कर मौत के घाट उतार दिया। अन्त में मुकाबला करते मारा गया। उसका कलेजा सेर पक्के का निकला ऐसी किवदन्ती प्रचलित है।

ठंडडी-ठंडड़ी हवा वो धर्मू आ, बर्खा दी छणकार ओ
अन्दर पक्के फुलके धर्मू आं, बहार रिज्जै दाल ओ
बड्डे जे भाऊएं चुगली लाई, सद्दी बुलाई सरकार ओ
हौलें-हौलें पुलसा चलदियां, कड़ियां दी छणकार ओ
सौ-सौ रुपइया सपाही मंगदे, दो सौ ठाणेदार ओ
मैं कुत्थां ते देह्यां ओ लोक्को, देवे धर्मू जान लो
सुत्ता सुत्तेड़ा धर्मू उट्ठिया, हत्थें फड़ी तलवार ओ
पंजतां बड्डे पुलिस सपाही, छेवां ठाणेदार ओ
कोठैं चढ़ी कनैं बब्ब जी रोऐ, धर्मूए खाणी मार लो
तू कह्जो रोंदा ओ मेरे बापू, धर्मू नी खांदा मार लो
पैड़ियां चढ़दी माता जी रोवै, दर बिच तेरी नार ओ

तू कैंह् रोवैं मेरी ग्रमड़ी, धर्मू नीं खादा मार ओ
किसे दा नीं मारेया धर्मू मरदा, करमे दी एं हार लो
चार चुकेरैं धर्मू दौंड़े, पेह्या मूहां दे भार लो
पेह्ली गोली छातिया बज्जी दूजी कलेजे फाड़ लो
सेर तां पक्का कालजा निकलेया, चर्बी बेशुमार ओ
गड्डिया मोटरां जांदा, उतरी गेया हरिदुआर ओ
सैह्र बजारे डौंडी पिट्टी, धर्मू दी गेई लाश लो

हिन्दी ग्रनुवाद

धर्मू ठडी-ठंडी हवा चल रही है, भीनी भीनी वर्षा की बौछार है
ग्रन्दर चपातियां पक रही है धर्मू, बाहिर दाल पक रही है
बड़े भाई ने शिकायत लगाई और सरकार को बुला लिया
धीरे-धीरे पुलिस चल रही है, हथकड़ियों की छणकार की ग्रावाजें है
सौ-सौ रुपये सिपाही मांगते हैं, दो सौ थानेदार
मैं कहां से दू लोगो, दे धर्मू ग्रपनी जान लो
सोया-सोया धर्मू उठा हाथ में पकड़ी तलवार लो
पांच तो उसने पुलिस के सिपाही काटे, और छटा थानेदार
कोठे पर चढ़ कर उसका बाप रोए, धर्मू ने मार खानी हैं
तू किस लिए रोता है मेरे पिता, धर्मू मार नहीं खाता
सीढ़ियां चढ़ती माता रोए, दरवाजे के बीच में नार
तू किस लिए रोए मेरी माता, धर्मू मार नहीं खाता
किसी का मारा धर्मू मरता नहीं, कर्म की ही हार है
चारों तरफ धर्मू दौड़े, गिरा मुंह के बल पर लो
पहली गोली छाती में लगी, दूजी ने कलेजा फाड़ डाला
सेर पक्का तो कलेला निकला, और चर्बी का कोई हिसाब नहीं
गाड़ी-मोटरों में धर्मू गया (धर्मू की अस्थियां) उतरा हरिद्वार ओ
शहर बाजार प्रचार किया गया, धर्मू की लाश चली गई ●

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

धर्मू सूरमा

लंज (कांगड़ा) क्षेत्र के आसपास ही क्या संपूर्ण कांगड़ा में धर्मू डाकू (धर्मू शूरवीर भी) प्रसिद्ध था। कहते हैं इस सम्पूर्ण क्षेत्र में इस डाकू का आतंक व्याप्त था। बड़े भाई ने पुलिस को इसके छुपे होने की सूचना दी। पुलिस पहले ही इसका पीछा कर रही थी। इसने डट कर पुलिस का मुकाबला किया। सिपाहियों और थानेदार ने उससे रिश्वत मांगी कि उसे छोड़ दिया जाएगा। रिश्वत देकर बच निकलना उसे शोभा नहीं दिया। अगली सुबह बड़ी चालाकी से उसने पांचों सिपाहियों और छठे थानेदार को तलवार से काट कर मौत के घाट उतार दिया। अन्त में मुकाबला करते मारा गया। उसका कलेजा सेर पक्के का निकला ऐसी किवदन्ती प्रचलित है।

ठंडडी-ठंडड़ी हवा वो धर्मूआ, बर्खा दी छणकार ओ
अन्दर पक्के फुलके धर्मूआं, बहार रिज्जै दाल ओ
बडड़े जे भाऊएं चुगली लाई, सद्दी बुलाई सरकार ओ
हौलें-हौलें पुलसा चलदियां, कड़ियां दी छणकार ओ
सौ-सौ रुपइया सपाही मंगदे, दो सौ ठाणेदार ओ
मैं कुत्थां ते देह्यां ओ लोक्को, देवे धर्मू जान लो
सुत्ता सुत्तेड़ा धर्मू उट्ठिया, हत्थें फड़ी तलवार ओ
पंजूतां बड्डे पुलिस सपाही, छेवां ठाणेदार ओ
कोठैं चढ़ी कनैं बब्ब जी रोऐ, धर्मूए खाणी मार लो
तू कह्जो रोंदा ओ मेरे बापू, धर्मू नी खांदा मार लो
पैड़ियां चढ़दी माता जी रोवै, दर बिच तेरी नार ओ

तू कैंह्‌ रोवैं मेरी अमड़ी, धर्मू नीं खादा मार ओ
किसे दा नीं मारेया धर्मू मरदा, करमे दी एं हार लो
चार चुकेरैं धर्मू दौंड़े, पेह्‌या मूहां दे भार लो
पेह्‌ली गोली छातिया बज्जी दूजी कलेजे फाड़ लो
सेर तां पक्का कालजा निकलेया, चर्बी बेशुमार ओ
गड्डिया मोटरां जांदा, उतरी गेया हरिदुआर ओ
सैह्‌र बजारे डौंडी पिट्टी, धर्मू दी गेई लाश लो

हिन्दी अनुवाद

धर्मू ठंडी-ठंडी हवा चल रही है, झीनी झीनी वर्षा की बौछार है
अन्दर चपातियां पक रही है धर्मू, बाहिर दाल पक रही है
बड़े भाई ने शिकायत लगाई और सरकार को बुला लिया
धीरे-धीरे पुलिस चल रही है, हथकड़ियों की छणकार की आवाजें है
सौ-सौ रुपये सिपाही मांगते हैं, दो सौ थानेदार
मैं कहां से दू लोगो, दे धर्मू अपनी जान लो
सोया-सोया धर्मू उठा हाथ में पकड़ी तलवार लो
पांच तो उसने पुलिस के सिपाही काटे, और छटा थानेदार
कोठे पर चढ़ कर उसका बाप रोए, धर्मू ने मार खानी हैं
तू किस लिए रोता है मेरे पिता, धर्मू मार नहीं खाता
सीढ़ियां चढ़ती माता रोए, दरवाजे के बीच में नार
तू किस लिए रोए मेरी माता, धर्मू मार नहीं खाता
किसी का मारा धर्मू मरता नहीं, कर्म की ही हार है
चारों तरफ धर्मू दौड़े, गिरा मुंह के बल पर लो
पहली गोली छाती में लगी, दूजी ने कलेजा फाड़ डाला
सेर पक्का तो कलेला निकला, और चर्बी का कोई हिसाब नहीं
गाड़ी-मोटरों में धर्मू गया (धर्मू की अस्थियां) उतरा हरिद्वार ओ
शहर बाजार प्रचार किया गया, धर्मू की लाश चली गई ●

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

बुडड़ियां जां माइयां

यह गीत 'ढोलरू' के रूप में प्रचलित है। चाची ने अपने दोनों भतीजों को किस तरह जहर देकर अपनी दुश्मनी का बदला लिया हृदय कंपा देने वाला है। बड़े होने पर दोनों राणे अपनी चाची के पास श्रीनगर जाते हैं। उनके वहां पहुंचने पर चाची को पता चला तो उसने धाम रचा दी। धाम खाने के लिए दोनों राणे बुलाए गए पहले ग्रास में ही ज़हर की तिरमिरो दोनों को महसूस, हुई दूसरे ग्रास खाते ही दोनों के प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। महलों के निकट ही चाची ने उनका शवदाह किया और चैत्र मास में राजपूत पुत्रों की गवा भी गवा दी।

बुडड़िया जां माइयां राणेओ दोएओ बेटड़े पर जायो ना
बुडड़ियां जा माइया राणेओ दोएओ बेटड़े पर जायो ना
लोई नराणें लाइयां ना
बरिया दे ...
दूई बरिया दे होए मेरे दोएओ राणे श्रीनगरा जो चली जांदे ना
दूई बरिया दे ...
श्री नगरां जो जांदे मेरे दोयको राणे होर क्या कमांदे नां
छक्कुएं जा छाबूड़ग्रां दोएओ राणे फुलड़ूआ जां चगंदे नां
फुल्लां जा चगैए मेरे दोएओ राणे होर क्या कमांदे नां
फुल्लां जां चगैए मेरे दोएओ राणे खिन्नूओं जा खलेंदे ना
लटपटिया पगड़िया बन्हदे ग्रेडड़ेओ दोमाहू्णे नां
पगड़ियां लै बन्ही दोएओं मेरे राणे हारां जां परोन्दे नां

हारा जां परोन्दे मोरे दोएग्रो राणे पगड़ियां पर धरदे ना
पीड़ जां घोड़े दोएग्रो राणे होए रैंह्न्दे त्यार नां
लै जां घोड़े दोएग्रो राणे होए रैहुन्दे सुग्रार ना
ग्रो तेरिया जां परोली ग्रो चाचिए, दो परौह्णे बणी ग्राए नां
क्या-क्यां खातर करिए परौह्णेया दी क्या-क्या ग्रादर करिए नां
झिझणा जां गाड़ चाचिया लै धामा जो लगाया नां
ग्रो पंजसत लुंगा चाचिया जैह्र मौह्र पाया
जांदेयां जां ला राणेया चाचिया पन्दी दित्तियां बछाई नां
भला लोटेयां जा गड़बिया दोएग्रो राणे धामा खाणा मंगाए नां
पैह्ले जां ग्रांहें दोएग्रो राणेयां जो तिरीमिरी जां लगी नां
दूऐ जी जां ग्रांहें दोएग्रो राणे जांदे ना ग्रो समाई ना
भला बैरनी ना बैरनी चाचिया बैर लेया कमाई ना
भला चनण जा कटाया लै चाचिया चिखा दित्ती रचाई ना
बैरनी जां कैसी चाचिया बैर लेया ग्रो कमाई ना
मैंहला देग्रो कंडे लै चाचिया दाग दित्ता ग्रो दुग्राई ना
भला चैत्र जा म्हीने राणेया दी गीति दित्ती ग्रो गुग्राई ना

हिन्दी ग्रनुवाद

बूढ़ी माई ने दो बेटों को जन्म दिया था
नजर नारायण ने लगाई थी
एक वर्ष के हुए दोनों राणे क्या-क्या कमाते हैं
दो साल के हुए दोनों मेरे राणे श्रीनगर को चले जाते हैं
श्रीनगर को जाते मेरे दोनों राणे क्या कुछ कमाते हैं
छक्कु या छाबड़ी में दोनों राणे फूल चुनते हैं
फूल चुनकर दोनों मेरे राणे ग्रौर क्या कुछ कमाते हैं
फूल चुन कर दोनों मेरे राणे गेंद खेलते हैं
सुन्दर पगड़ियां तिह्रे लपेटे हिए, दो मनुष्य है
पगड़ियां कस कर दोनों मेरे राणे हार पिरोते हैं
हार पिरोकर मेरे दोनों राणे पगड़ियों पर उन्हें धारण करते हैं
दोनों राणे घोड़े कस कर तैयार रहते हैं
दोनों राणे घोड़ों पर सवार रहते हैं
ग्रो चाची तेरे दरवाजे पर दो ग्रतिथि ग्राए हैं
क्या-क्या ग्रादर सत्कार करें ग्रतिथियों की

झिझण और गरड़ से आटा पिसाकर चाची ने धाम लगाई
उस चाची ने पांच सात लूंगे (कुतरे) जहर मोहर डाला
और उसी समय चाची ने उन्हें बैठने के लिए बिछौने बिछाए
लोटे और गिलास पानी के देकर चाची ने धाम लगाई
पहले ग्रास में दोनों राणों को तिरमिर सी लगी
दूसरे ग्रास में दोनों राणे चित्त धरती पर गिरे
भला बैरिन चाची ने बैर कमा लिया
चन्दन कटा कर चाची ने चिता रचा दी
बैरिन चाची ने बैर कमा लिया
महलों के पास किनारे पर उन दोनों राणों का अन्तिम संस्कार किया गया
चैत्र मास में दोनों राणों की गीति गवां ली

संग्रहण व अनुवाद
डॉ प्रत्यूष गुलेरी

कांगड़ा क्षेत्र

कीधर देसे दी आई णी धोबन

प्रस्तुत गीत में एक धोबी ज़ाति (जिसे अछूत माना जाता रहा है) की सुंदरी एवं चम्बा रियासत के राजा की प्रणय गाथा गूँथी पड़ी है। राजा धोबिन की सुंदरता पर मोहित हो गया और उसने उसे अपनी रानी बनाने का निर्णय लिया, यद्यपि धोबिन ने उसे बार-बार इस कृत्य से राजा को रोका। राजा की पहली रानियां यह सब सहन नहीं कर पाई परिणामतः जल मरी।

कीधर देसे दी आईणी धोबन
कीधर देसे ओ जाणा रा
दखिन देसे दी आईणी धोबन
पच्छम देसे ओ जाणा रा
कपड़ेयां धोंदी नीं धोबन
छमां छमां दियां रोंदी नां
खौल्ला खौल्ला पाणी ई नदिया,
गहरा-गहरा लिभदा नां
सुरती दिखी भुल्लैं ना वो राजा
जाति दी मैं छींबी आं
खबरां गइयां ओ राजा
चम्बे दिया राणिया
सूरती दिखी भुल्लैं
न ओ राजा जाति
री मैं छीबी आ

सद्दिग्रो मंगा दा राजा
जिन्हां इन्हां काहारां जो
चुकिया डोला वो काहारां
लित्ता इन्हां महला जो
सब्बा सौ मरण चौल वो राजा
धामा जो लाए नां
जहर खादा वो राणिया
मरी तां गइयो नां
चनणी दा रुक्ख कटाया
चिख्खा च चिणाया ना
चैत्तर महीने बो धोबनी दी
गीत्त गाई ये नां

हिन्दी अनुवाद

अरी धोबिन ! तुम किस देश से आई हो
और किस देश को तुमने जाना है
मैं धोबिन, दक्षिण देश से आई हूं
और मुझे पश्चिम देश को जाना है
धोबिन कपड़े धो रही है
और छम-छम (आंसू बहा कर) रो रही है
नदिया का पानी मटमैला है
और गहरा-गहरा दिखाई देता है
अरे राजा ! मेरी सूरत देख कर तुम अपने होश हवास
मत खो दो (क्यों कि)
मैं जाति की छींबी (अछूत) हूं
(राजा छींबी पर मोहित हो गया है, ये)
खबरें चम्बा राज्य की
रानियों के पास पहुंची
अरे राजा ! मेरी (सुन्दर) सूरत देख कर तुम अपने
होश हवास मत खो दो (क्यों कि)
मैं जाति की छींबी (अछूत) हूं
राजा ने कहार बुला भेजे
कहारों ने (धोबिन का) डोला उठाया

ग्रौर महलों में पहुंचा दिया
राजा ने सवा सौ मन चावल
धाम (खिलाने) पर लगाए
राजा की रानियों ने जहर खा लिया
ग्रौर मर गई
(राजा ने) चन्दन वृक्ष कटवाया ग्रौर
चिता को चिनवाया
चैत्र मास में धोबिन से सम्बन्धित
यह गीतिका गाई जाती है

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

गज्जा लां बह्णे

प्रस्तुत गीत में कांगड़ा घाटी में बहती एक छोटी नदिया गज्ज के किनारे, एक मामा ग्रौर भानजा, जो दोनों राजा थे के बीच लड़ी गई लडाई का वर्णन है। इस गीत को 'घोड़ी' कहते हैं ग्रौर जाति विशेष के गायक चैत्र मास में घर-घर जाकर सुनाते है।

नीलिए नीं घोड़िये, लाखिये-हजी ना
दूमसु रंगे तेरे मैंहदिये हजी ना
ग्रो जाई खड़ोती बड्डी दे टयालें-हजी नां
गज्जा-लां दे बह्णें ग्रो लग्गिया
लड़ाइया-हजी नां
मामा ते भाणजे दिया लगियां
लड़ाइया-हजी ना
मामें ता हुण भाणजा मारी आ लिया
हजी ना

गज्जा-लां दे बह्णें
मुंड़िया दे टेड़ले हजी नां
ढाई घड़िया खून्नें दी गज्ज बग्गी-हजी नां

हिन्दी अनुवाद

ओ लाखे और नीले रंग की घोड़ी !
तुझे पूरी तरह से लड़ाई के लिए सजाया गया है
घोड़ी बट वृक्ष के चबूतरे के पास जा खड़ी हुई
'गज्ज' नदीया के किनारे
लड़ाई-लड़ी गई
ये लड़ाई मामे और भानजे के बीच लड़ी गई
मामा ने भानजा मार दिया
'गज्ज' नदिया के किनारे
सिरों के ढेर लग गए
अढ़ाई घड़ी तक गज्ज नदिया
खून से बहती रही ●

चैत्र मास का गीत

प्रस्तुत गीत भी जाति विशेष के लोग चैत्र मास के आरम्भ में घर-घरजाकर सुनाते हैं । ऐसी परम्परा है कि इन्हीं गायकों मुख से ही विक्रमी संवत् के आरम्भिक मास (चैत्र) का नाम सुनना (णां सुणणा) श्रेयस्कर होता है । गीत में अपेक्षित परिववंतन गायक लोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं । गीत ढोलकी पर गाया जाता है और प्रत्येक पंक्ति दोहराई जाती है ।

पहला ता ना लैणा नारायण दा
जिन्ही दुनिया बसाई ए
दुआ ता ना लैणा माई-बाप दा

जिन्हा दस्या संसार ए
तिजा ता नां लेइए गुरु आपणा
झड़ह् दे काया दे पाप नां
सब्बे ता ऋतु नें रामा फिरि रहिया
मानस फिरि ना औए नां
आया ता चैत वैशाख
जे कोई सुणें भाग मान नां
इन्दड़ा गिया घर अप्पणे
आई सो दी बहार नां
तुलसी डाली ता गोरिए नां लेइए
तुलसी जाति दी बमनेटी
मरूआ डाली ता गोरिए ना लेइए
मरुआ जाति दा कदरेटा ए
कौल्लेह् दे फुल्ले ता गोरिए ना लेइए
कौल्ला फुल्ल ठीकरें प्यारा
सीता चल्ली ए पाणिए
हत्थें लिया सीस गढ़ोलू
पुच्छणा लेई राजे राम चन्दे
सीता रहियो बढ़दी बहार

हिन्दी अनुवाद

सबसे पहले नारायण का नाम लेना है
जिसने सारी दुनिया बसाई है
दूसरा नाम माँ बाप का लेना
जिन्होंने संसार दिखाया है
तीसरा नाम गुरु का लेना है जिसके द्वारा शरीर के पाप झड़ जाते हैं
सब ऋतुए घूम फिर कर फिर से आ जाती हैं
पर एक बार गया (मरा) मनुष्य फिर नहीं लौटता
अब हम चैत्र बैशाख का नाम लेते हैं
जो इसे सुनें, वह भाग्यशाली होगा
इन्द्र अपने घर गया
इस कारण से सर्वत्र बहार हुई

अरी गोरी ! हम तुलसी की डाली नहीं लेंगे
क्यों की तुलसी-वृक्ष जाति में ब्राह्मणी मानी गई है
महुआ की डाली भी हम नहीं लेंगे
क्यों कि महुआ का वृक्ष, जाति में क्षत्रिय जैसा है
अरी गोरी ! हम कमल का फूल भी नहीं लेंगे
क्योंकि कमल का फूल भगवान को प्यारा है
सीता हाथ में शीशे का घड़ा लेकर
पानी भरने के लिए चली तब राजा
रामचन्द्र ने उसे पूछा और कहा
सीता, तुम सदा बहार की
तरह फलो फूलो

संग्रहण व अनुवाद
गिरिधर योगेश्वर

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

बारा तां बरियां

यह लोक गीत बड़ा मार्मिक है। इस गीत का नायक शादी करने के पश्चात अपनी पत्नी को घर छोड़कर चला जाता है। जब बारह वर्ष उपरान्त लौटता है तो जोकुछ होता है — इस लोक गीत में प्रस्तुत है।

बारा तां बरियां सस्सू ब्याहे कीते होइयां,
पुत्तर तेरा नजरी नी आया ऐ ?
काहली न होयां नूहें बौरी न होयां,
पुत्तर मेरा बागां जो आया ऐ।
कुथु बछां सस्सू कन्दे दे पलंगे,
कुथु बछां अपणी मंजी ऐ ?
ओबरिया बछायां नूहें कन्दे दे पलंगे,
उच्चिया पसारी तेरी मंजी ऐ।
अग्गैं किआं दिन्दी सस्सू सुक्के-मुक्के टुकड़े,
अज्ज किआं घ्योये दी चूरी ऐ ?
अग्गैं तां था नूहें सौहरे दा खट्टया,
अज्ज तेरे कन्दे दा खट्टया ऐ।
पहला ग्राह पाया राजे दिया बेटिया,
ओठां जो तिरमिरी आई ऐ।
दूजा ग्राह पाया राजे दिया बेटिया,
राजे दी बेटी गेई मरी ऐ।

बारें तां बरें माए ! मैं घरें आया,
नूह तेरी नजरी नी आई ऐ !
निंद्रा दी काह्‌ली पुत्तरा ! चिन्ता दी मारी,
राजे दी बेटी गेई सेई ऐ ।
उठदा कंद जी बागां जो जान्दा,
तूते दी छिटी ल्याया बड्डी ऐ ।
इक छिटी मारी कन्दें दूई छिटीं गूरी,
राजे दी बेटी न्यों जागी ऐ ।
दूई छिटी मारी कन्दें त्री छिटी गूरी,
राजे दी बेटी न्यों जागी ऐ ।
चुकेया ऐ हत्थ कन्दे मुहें पर फेरया,
राजे दी बेटी रेही ऐ मरी ऐ ।
चन्नण कटाया कन्दें चिखिया चणाई,
नारी जो दाग दुआया ऐ ।
हड्डियां बटोलियां कन्दें बटुए च पाईयां,
गंगा-जमना रढ़ाईयां ऐ ।
कन्न तां छेदे कन्दें मुद्रां जे पाईयां,
कीता ऐ जोगियां दा भेस ऐ ।
मरि-मरि जायां माए मुण्ढां दिए बैरनी,
मूइया जो मार दुआई ऐ ।
जोगी मैं होया माए बैरागी मैं होया,
तेरे मैं देसे माए कदि बी नी औंगा,
मूइया जो मार दुआई ऐ ।

हिन्दी अनुवाद

हे सास ! बारह वर्ष विवाह किए हो गए,
तेरा बेटा नजर नहीं आया ?
हे बहू ! शीघ्रता मत करो न ही व्याकुल हो,
मेरा बेटा बागों में आ गया है ।
हे सास ! मैं पति के लिए पलंग
तथा अपनी चारपाई को कहां बिछाऊं ?
हे बहू ! बन्द कमरे (ओबरी) में पति के पलंग को बिछा दो
और तेरी चारपाई दूसरी मंजिल पर रहेगी ।

हे सास ! पहले किस प्रकार रुखी-सूखी रोटियां देती थी,
आज घी-चुपड़ी क्यों दे रही हो ?
हे बहू ! पहले तेरे ससुर की कमाई थी,
आज तेरे पति की कमाई है।
पहला कौर राजा की बेटी ने डाला,
होठों पर मिर्चें सी लगने लगीं।
दूसरा कौर राजा की बेटी ने डाला,
राजा की बेटी मर गई।
मां ! मैं बारह वर्षों के बाद घर आया,
तुम्हारी बहू नजर नहीं आई ?
वह नींद को प्यार करने वाली और चिन्ता की मारी हुई है,
राजा की बेटी सो गई है।
पति उठता है तथा बाग को जाता है,
शहतूत की पतली डण्ड काट कर ले आता है।
पति एक डण्डा मारता है तथा दूसरा उठाता है,
राजा की बेटी नहीं जागती है।
पति दूसरा डण्डा मारता है तीसरा उठाता है,
राजा की बेटी नहीं जागती है।
पति ने अपना हाथ उसके मुंह पर फेरा,
राजा की बेटी मरी पड़ी है।
पति ने चन्दन कटवा कर चिता बनवाई,
और पत्नी को जला दिया।
पति ने हड्डियां इकट्ठी करके बटुए में डालीं,
गंगा-यमुना में जाकर बहा दीं।
कानों को छेद कर बालियां डाली
जोगी का भेष धारण कर लिया।
—आरम्भ की दुश्मन मां ! मर जाओ,
मरी को मार दिलवाई।
मैं जोगी बन गया मां ! वैरागी बन गया,
मां तेरे देश में कभी नहीं आऊंगा;
तुमने मरी हुई मेरी पत्नी को भी मार दिलवाई ●

संग्रहण व अनुवाद
हरिकृष्ण मुरारी

गुरमा गीत

लाहुल के तोद साईट में गैमूर नामक स्थान पर एक बौद्ध–विहार है। जिसका नाम 'सम्तान छोलीग' तथा स्थागीय भाषा में 'गौमूर गोनपा' के नाम से जाना जाता है। एक बार उधर धर्मप्रचारार्थ लद्दाख से प्रसिद्ध कलाकार एवं महान दार्शनिक लामा टशी तान पैल पधारे। वह 'आचार्य पद्म सम्भव' का जीवन-चरित लकड़ी के ऊपर खुदाई 'परशीङ' तैयार करवाना चाहते थे। तब मठ के लामा लोग तथा गांव के लोगों से सलाह मशवरा किया। अन्त में 'परशीङ' निमार्ण करने का निर्णय लिया गया।

आचार्य जी की जीवनी की पुस्तक का नाम 'लेहु दुनमा' अथवा सप्त परिच्छेद है। गांव वालों ने उस शुभकार्य के लिए दिल खोल कर दान और सहयोग दिया। उस परशीङ' का कार्य पूरा हो जाने के पश्चात एक दिन विशाल समारोह आयोजित किया गया। जिसमें गांव वाले तथा लामा लोग सम्मिलित हुए। इस कार्य में लोगों की श्रद्धा एवं उत्साह को देखकर प्रसिद्ध वैद्य भिक्षु जम्बा ङो ड़ुब ने भक्ति-गीत की रचना की जो 'गुरमा' गीत अथवा 'छोलु' से प्रसिद्ध है। इस गुरमा गीत को उस समारोह में गाया गया था। आज भी यह भक्ति गीत लोगों की जुबान पर है और आचायपद्म सम्भव की जीवनी का 'परशीङ' भी उसी गोनपा में सुरक्षित है।

हिमलयी युल जोङ गरजा फाग पे जिङ खाम
दम छो ड़ुब पे ति नस छा खोर सम्तान छो लींग।
ला लम खा ला ग्यु वा ठी दुङ ता दुन ग्यल मो
लींग जि मुन पा सेल छीर के गुई पल दु थर ता।
दद दन खाला ग्यु वे सोल देब लेहु दुन मा
छोजीन पर गी ठुल खोर गेग मेद छुल जिन ड़ुब सोङ।
टशी लु याङ बुल लो तान पा छोग चुर पैंल वे
गा किद तेन डेल जोम सोङ दम छीग चींग पे ड़ा चुन।
लो सेम चिग दुक्ष डील नस तान दोन जा वा ड़ुब पे
गा किद ग्यमक्ष् ला जिगक्ष् दङ तान जिन टशी तान पैल।
छोद योन दम छीग दन पे ड़ेल थोब दे छेन जिङ ना
जल वे तेन ड़ेल जोम सोडा छाङ छोद जम्बा ङो ड़ुब।
अमक्ष् गा किद पे लु-याङ दाग नांग लोंग नस बुल लो
दिर बद गेवे थु ला नग छोग दम स्रीद दुदु चोम।
छोद-योन छब स्रीद ग्यस शीङ कल ग्यार जब पद तान मींग
स्री जि दम लेगक्ष् गोङ फैल गे चुई यल ला चोद चोङ।
थश थुग नम स्येन थोब पे मोन दुन यीद जिन ड़ुब मीग
अला लाब सुभ ठो तेङ यो मेद तान पर जुग मोन।

हिन्दी अनुवाद

हिमालय की घाटी गरजा (लाहुल) आर्यों की भूमि
धर्मोपदेश तथा साधना की भूमि धर्मचक्र सम्तान लींग।
आकाश में चमकता हुआ सूर्य तथा चन्द्रमा जिस प्रकार अन्धकार को मिटाता है
उसी प्रकार चारों द्वीपों के लोगों का (अज्ञानरूपी) अन्धकार, गुरु मिटाता है।
श्रद्धालुओं ने दान देकर लेहु दुनमा नामक पुस्तक का
धर्म दानार्थ पर बिना विघ्न बाधा से निर्माण किया
अब (हम) मंगल भक्ति गीत गायें बुद्ध शासन को दस दिशाओं में फैलायें
आनन्दमय शुभ शकुन है एक गुरु शिष्य (लोग) सब इकट्ठे हुए।
(अब) तन मन से एक होकर नित्य स्थाई (सुख) की खोज की जाय
(अन्य लोग) आनन्द सुख ले (भोग) रहे हैं उनको देखो,
शासनधर टशी तान पैल।
गुरु तथा दाता (दान) के शुद्ध भावना से, मधुर सम्बन्ध से दोनों क्षेत्रों में
दर्शन हों, ऐसा लक्षण दिखाई देता है भिक्षु जम्बा डो ड़ुल।

आनन्दमय मधुर गीत हर्षोल्लास का वातावरण
कुशल कार्यों के बल से कृष्णपक्ष रूपी भूत प्रेत (अन्धकार) नष्ट हों।
गुरु शिष्य परम्परा शत कल्प तक अटूट रहे
इस लोक तथा परलोक (दोनों) में दश कुशल के नियमों का पालन करें
अन्ततोगत्वा बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए न्याय शिक्षा का अध्ययन जारी रखें,
इस प्रकार अटूट श्रद्धा प्रदर्शित करता हूं और प्रणिधान करता हू ●

घटना प्रधान गीत

लाहुल क्षेत्र

बुस्रींग का गीत

लाहुल के तोद घाटी में एक किंवदन्ति है कि प्राचीन काल में एक बार सभी लड़कियां कुंवारी रह गईं। मां बाप परेशान हो गये, किसी की भी शादी ब्याह का सम्बन्ध नहीं बन पा रहा था। लड़कियों की माताओं का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। लड़कियों के ऊपर उन की माताओं ने एक गीत तैयार किया जिस दिन गांव में मेला था उस दिन उस गाने को पेश किया गया। गीत ने लोगों का मन मोह लिया और वे लड़कियों की ओर आकर्षित हो गए। उस के बाद लड़कियों की अन्य गांव के लड़कों के साथ शादियां होने लगी। तब से लेकर आज तक इस गीत को 'बु स्रींग' के गीत से जाना जाता है। इस गीत में ऊंचाई निचाई मोटापन तथा पतलापन को तीन-तीन विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
दे दे थो ना जंग मे दे दे थो ना जंग।
यर कोन चोग ङे हुर मो यर कोन चोग ङे हुर मो

दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जग।
मा खांग ङे केस ताग मा खांग ङे केस ताग
दे दे थो ना जग भे, दे दे थो ना जंग।
थो वा ला थो सुम थो वाला थो सुम
दे दे थो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
मा जिग ङे युर गो मा जिग ङे युर गो
दे दे यो ना जंग भे, दे दे थो ना जंग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जग
मा खांग ङे थेम पा मा खांग ङे थेम पा
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जंग।
मा वाला मा सुम मा वाला मा सुम
दे दे मा ना जंग भे, दे दे मा ना जंग।
बु स्रींग ङे मीन मा बु स्रींग ङे मीन मा
दे दे मा ना जंग भे, दे दे मा ना जग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जंग।
मा जिङ ङे लोन दब मा जिङ ङे लोन दब
दे दे मा ना जग भे, दे दे मा ना जग।
बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोस ना जग भे, दे दे बोम ना जंग।
मा खांग ङे का वा मा खांग ङे का वा
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बोम ना जग।
बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बोम ना जंग।
बु स्रींग ङे पुंग पा बु स्रींग ङे पुंग पा
दे दे बोम ना जग भे, दे दे बोम ना जग।
बोम पा ला बोम सुम बोम पा ला बोम सुम
दे दे बोम ना जंग भे, दे दे बोम ना जग।
गो ख्यी ङे छे वा गो ख्यी ङे छे वा
दे दे बोम ना जंग भे, दे दे बोम ना जग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम

दे दे ठा ना जंग भे, दे दे ठा ना जंग।
ग्यलमो ङे दर कुद ग्यलमो ङे दर कुद
दे दे ठा ना जग भे दे दे ठा ना जंग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम
दे दे ठा ना जग भे दे दे ठा ना जग।
बु स्रीङ ङे केद पा बु स्रीङ ङे केद पा
दे दे ठा ना जंग भे, दे दे ठा ना जग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम
दे दे ठा ना जंग भे, दे दे ठा ना जग।
जोमो ङे रु चो जोमो ङे रु चो
दे दे ठा ना जंग भे, दे दे ठा ना जंग।

हिन्दी अनुवाद

ऊंचाई तीन प्रकार से होनी चाहिये
वह उसी में शोभायमान होती है।
जानता हूं, उसी ऊंचाई में सुन्दरता है।
भगवान की महिमा।
वह उसी में शोभायमान होती है।
जानता हूं, उसी ऊंचाई में सुन्दरता है।
ऊंचाई तीन प्रकार की होनी चाहिये,
वह उसी में शोभायमान होती है।
जानता हूं, उसी ऊंचाई में सुन्दरता है।
(यदि घर बने तो) मकान के खम्बे के पाए का पत्थर।
शोभायमान होता है।
जानता हूं, उसी ऊंचाई में सुन्दरता है।
ऊंचाई में तीन प्रकार से ऊंचा होना चाहिये,
वह उसी में शोभायमान होता है,
जानता हूं उसी ऊंचाई में सुन्दरता हैं।
(यदि खेतों में पानी की व्यवस्था करनी हो तो हमेशा)
नहर का सिरा ऊंचाई पर होना चाहिये,
वह उसी में शोभायमान होता है,
जानता हूं, उसी ऊंचाई में सुन्दरता है।
झुकाव तीन प्रकार का होना चाहिये,
वह उस में शोभायमान होता है,

जानता हूं, उसी झुकाव में सुन्दरता है ।
घर की सीढ़ियों में कम ऊंचाई होनी चाहिये
जानता हूं, उनका कम ऊंचा होने में सुन्दरता है ।
तीन प्रकार का झुकाव होना चाहिये
वह तो झुका होने में ही शोभायमान है,
जानता हूं, उसी झुकाव में सुन्दरता है ।
लड़की की भवें
झुकी होना शोभायमान है,
जानता हूं, उसी झुकाव में सुन्दरता है
तीन प्रकार का झुकाव होना चाहिये
वह झुकाव तो शोभायमान होता है
जानता हूं, उसी झुकाव में सुन्दरता है ।
खेतों की फसल की पत्तियां,
झुकी होनी शोभायमान हैं।
मोटापा तीन प्रकार का होना चाहिए
जानता हूं, उसी मोटापे में सुन्दरता है ।
(यदि घर बने तो) खबा मोटा होना चाहिये,
वह तो मोटेपन में शोभायमान है,
जानता हूं, उसी मोटापे में सुन्दरता है।
तीन प्रकार का मोटापा होना चाहिये,
वह मोटा होने में शोभायमान है,
जानता हूं, उसी मोटापे में सुन्दरता है ।
लड़कियों की भुजा मोटी होनी चाहिये,
वही मोटापा शोभायमान होता है,
जानता हूं, उसी मोटापे में सुन्दरता है ।
(यदि कुत्ता पालें तो) कुत्ते का दान्त मोटा होना चाहिये,
वही मोटापा शोभायमान है,
जानता हूं, उसी मोटापे में सुन्दरता है ।
तीन प्रकार का बारीक होना चाहिये,
वह उसी बारीकी में शोभायमान है,
जानता हूं, वह उसी बारीकी में सुन्दर है ।
(जो कता हुआ) रेशम का धागा,
वह बारीकी में शोभायमान है,
जानता हूं, उसी बारीकी में सुन्दर है ।

तीन प्रकार का पतलापन होना चाहिये,
उस पतले में ही शोभा होती है,
जानता हूं, उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
कन्या की कमर,
वह पतलेपन में ही शोभायमान है,
जानता हूं, उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
तीन प्रकान का पतलापन होना चाहिये,
उसी पतलेपन में शोभा है,
जानता हूं, उसी पतलेपन में सुन्दरता है ।
उसी बरीकी में शोभा है ।
जानता हूं, उसी बरीकी में सुन्दरता है ●

श्रम गीत

लाहुल क्षेत्र

खुई कोर थे

काम को हलका करने एवं थकान को दूर करने लिए काम करने वाले (श्रमिक) गीत गाते हैं । वे जो काम किया जाता है उस काम से सम्बन्धित जो गीत गाते हैं वह लोक गीत बन जाता है। ऐसा ही लाहुल के तोद घाटी एवं स्पीति–क्षेत्र में गहाई का काम करते समय गाए जाने वाले गीत में लगभग समानता ग्रौर शब्दों में एकरूपता है। खलिहान, लगभग सभी ग्रपने घर के सामने ही बनाते हैं क्योंकि एक तो ग्रनाज एवं भूसा ग्रादि ग्रन्दर करने में ग्रासानी हो जाती है व दूसरी बात पशुग्रों से रक्षा करने के लिए इसकी देखभाल भी सरल हो जाती है ।

गहाई के कामों को गाय से ही लिया जाता हैं । लाहुल-स्पीति में भी गाय प्रयोग करते हैं । गहाई के काम को 'खुई' या 'युल लस'

कहते हैं। एक रस्सी में गाय पंक्तिबद्ध बांध दी जाती है। खलिहान के बीच खंबा गाढ़ दिया जाता और उस से गायों को बांधकर घूमाते हैं जिस गाय को खंबे के साथ आगे बांधते है उसे 'मामा' तथा आखिर में बंधी गाय को 'पयारपा' कहते हैं।

'होलो' कहकर पुकारते, गाय को घुमाते हैं। अन्त में गाय छोड़ने से पूर्व उसका सिर से लेकर पांव तक वर्णन करके वर माँगते हैं—जिसे 'होंगबुर' कहते हैं।

मामे मल दु खोरो रो
लाङ छेन था ना हीरो हीरो
हो लो हो लो ...
हुल ताग टशी गोर मो रु
सेर मो नस ला रिग पा छाग
हो लो हो लो
गो मो रि यि ग्यलमो रु, होंग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो होद कि ग्यलपो कोर सुम।
सावा ङुल कर मे लोंग दु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
मीग मा गाङ सि नरो रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
मिग मा जिम छुङ ख्यील ड्रा रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
अम योग गो ख्यी थे बोङ दु. होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
ना मो सङ दाङ बुस ड्रा रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
चेमो दर लिङ्ग युग ड्रा रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ..
सोजो दुङ ड्राङ ठेंगवा ग्युस ड्रा रु, होंग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो ...
यल गब छो की लग शीङ ड्रा वा रु, होंग मा बुर छाग मा बुर।

मा मो
ड्राङ कोग तोद की ला खांग दु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
छीन पा जा रि मुग छुङ दु, होंग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो ..
लो वा गाङ रि करपो रु, होंग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो
ग्यु मा ज्ञा लाम ज्ञाङ रा रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
ङा मा मुतिग छा ला रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो ...
पीग मो जुमो कुग ड्रा रु, होंग मा बुर, छाग मा बुर।
जा खा वेद
थुङ खा वेद
मि रेरे ला गाल रेरे
दुद ड्रो रेरे ला गाल रेरे
बोर ला सोङ।
हो ख्यी।

हिन्दी अनुवाद

मामा वाली गाय उसी स्थान पर घुमाईं
आखरी वाला याक दूर दूर से घुमाना चाहिये
खलिहान मगलमय तथा गोलाकार है
अन्न - अनाज के ढेर पड़े है।
सिर पर्वतों के राजा अन्न रूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन चक्कर और लगा दो।
चांदी की तरह माथे और शीशे की तरह दिमाग सा,
अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
हिमखण्ड की तरह श्वेत भौंओं सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन चक्कर और लगा दो।
आंखें, मकान के भण्डार सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
कान, दरवाजे रूपी कुत्ते की थाम सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।

प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
नाक, सुगन्ध के भण्डार सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
जीभ, रेशम के दुपट्टे सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
दान्त, (शख की माला की तरह पिरोए हुए),
सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
जबड़ा, पोती की लकड़ी (लगशीङ) सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
छाती, ऊपर के देवालय सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
कलेजा, कत्थाई रग के पत्थर सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें तीन बार चक्कर और लगा दो।
फेफड़ा, श्वेत हिमगिरि सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें ...
अन्तड़ी, टेड़े मेड़े मार्ग सी, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें
पूंछ, मोती के गुच्छे सी, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें
धनुष की तरह टांगों सा, अन्नरूपी वर प्रदान कीजिए।
प्यारी गायें
खुर, लोहे के हथोड़े सा, अन्नरूपी वर दान कीजिए।
प्यारी गायें ...
तब खाने पीने का वर प्रदान कर प्रत्येक आदमी व पशु को बोझा (अन्न का)
छोड़ कर जाओ (हो ख्यो)।

श्रम गीत

लाहुल क्षेत्र

हौंग चर थे

गेहूं और जौ की गहाई के बाद, मिले जुले अनाज तथा भूसे को 'हौंग' कहते हैं। अब गहाई का काम तो कर दिया गया है। मगर अन्न तथा भूसे को अलग करने के लिए हवा की जरूरत पड़ी है। इसमें हवा की प्रशंसा तथा मान बढ़ाते हुए हवा को बुलाते हैं। यह तो सोने चांदी सी हवा है। ग्राम-देवता और कुबेर (हमें) अनाज का वर प्रदान करें।

'हौंग' को दो सिरे वाली लकड़ी से हवा में उठाते हुए हवा से भूसे को अलग करते हैं। दो आदमी दांई तरफ और दो बाईं तरफ बैठते हैं।

हवा आज हमारे खलिहान में शीघ्र तथा तेज होकर पधारे क्योंकि गहाई तो कर रखी है मगर आदमी कम हैं।

कु रु रु, बोन बोन्, पा जिग, बोन पा जिग
हुल ताग टशी गोर मो रु
ङोन मो ड्ड यो छर जिग बेबस्
छर दाङ ड्रा वे हौंग जिग सल
जमभला हौंग ला क्योद
जम सेर रा हौंग ला क्योद।
ययि सेर लुङ लुङ पा ना
ययि सेर लुङ लुङ पा ना

सेर गि गोमो ठीग गे जुग
सेर गि गोमो ठीग गे जुग
सेर लुङ वेद ला होंग ला क्योद
यथि ङुल लुङ लुङ पा ना
यथि ङुल लुङ लुङ पा ना
ङुल गि गोमो ठीग गे जुग
ङुल गि गोमो ठीग गे जुग
ङुल लुङ वेद ला होंग ला क्योद ।
यथि यु लुङ लुङ पा ना
यथि यु लुङ लुङ पा ना
यु यी गोमो ठीग गे जुग
यु यी गोमों ठीग गे जुग
यु लुङ वेद ला होंग ला क्योद ।
नस दाङ फुग मा ड्रान-ड्रा सल
ख्यीम सेर लुङ पो मि लाग सल । ●

हिन्दी अनुवाद

(कुरु रु रु बोन बोन, बोन पा जिग, बोन पा जिग —
इन शब्दों का विशेषार्थ नहीं है आकार प्रकार बोलने का ढंग ही है)
गोलाकार मंगलमय खलिहान में
अनाज रूपी हरियाली की वर्षा कीजिए
वर्षा की तरह अनाज रूपी वर प्रदान कीजिए
हे जम्मला ! वर प्रदान करने हेतु (हमारे यहां) पधारें ।
उस सोने की घाटी (नाला) में
सोने के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं
सोने की हवा बनकर वर प्रदान करने के लिए आईए ।
उस चांदी की घाटी में
चांदी के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं
चांदी की वायु बनकर वर प्रदान के लिए आईए ।
उस यु (फिरोज़ा) की घाटी में
यु के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं

मु की हवा बनकर वर प्रदान करने के लिए आईए।
हमें अनाज तथा भूसा बराबर मिलते रहने का वर प्रदान करें
गांव में विद्यमान वायु भी शीघ्र आए
क्योंकि आज काम करने वाले आदमी कम हैं ●

संग्रहण व अनुवाद
टशी लाग्याल

घटना प्रधान गीत

चम्बा क्षेत्र

कर्मों छैला

मामा के घर पले-पोसे कर्मो नामक व्यक्ति की, दो भाइयों की द्वेष-अग्नि में जीवनाहुति की मार्मिक घटना इस गीत में नहित है, जिसे हिन्दू समाज अक्षम्य अपराध की कोटी में गिनकर रौर व भागी माना करता है।

हाय बो मेरेया कर्मोआ छैला हे
तेरे साही मण्हूं भी नी हूणां हे
हाय बो मेरेया
त्रिकु गबै लेटरी बलोरी हे
आई मामें भाणजे री जोड़ी हे
बिसु मामें मंगणी कराई हे
होरी मामें दिले री कमाई हे
हाय बो मेरेया ...
बिसु मामा हट्टी पर भाले हे
होरी मामें जोता पर मारे हे
उच्ची-उच्ची धारा लगा सौणा हे
गमें दा मारोरा लगा पीणा हे

हाय बो मेरेया ...
अद्धी पीणी अद्धी जेबा पाणी हे
अद्धी असां ठेके दी मंगाणी हे
ठेके जाणा पता लगी जांदा हे
थोड़ा पीणा मता लगी जांदा हे
हाय बो मेरेया ...
पज-सत आये तिसुआला हे
कर्मो दी लास सुटी नाला हे
तिस्से किच्छा होया टेलिफूना हे
मोति रिया राखा होया खूना हे
हाय बो मेरेया ...
पंज माई षज वो सपाई हे
कर्मो दी लास कुदी पाई हे
सारे बो चुराही पाई रोली हे
पुछणा लगे बो छोली छोली हे
हाय बो मेरेया ...
अम्मा तेरी गाई लग्गी दूह्णा हे
झले-झले नैणा लगी रुणां हे
गाई दूही अन्दरा जो गेई हे
गस खाई सणे दुद्धे पेई हे
हाय बो मेरेया
लेरा दिदी आई ऊमा भैणा हे
तेरे बाझी असां कियां रैणा हे
रौंदी आई हरदेई भैणी हे
मिजर असां कुसजो मताणी हे
हाय बो मेरेया ...
बाबा तेरा लेरा लगा दैणां हे
भिड़ी भिड़ी गल लगा लाणा हे
होरे मामे लेरा लगे दैणा हे
बिसू मामे काह्ली लगी ईणा ह
हाय बो मेरेया ...
रौंदी बो बसन्ती झूरा गेई हे
बिना बो बियाई तेरी रेई हे
दिला री लगोरी कुनी हेरी हे

इत्ते बो बठोरी भी मैं तेरी हे
हाय बो मेरेया ...
मोति रिया राखा पेया त्रेला हे
बसन्ती तेरा गीत बड़ा छैला हे
हाय बो मेरेया कर्मोंश्रा छैला हे
तेरे साही मण्हूं मिनी हूणा हे
हाय बो मेरेया कर्मोंश्रा छैला हे
तेरा साही मण्हूं भिनी हूणा हे

हिन्दी अनुवाद

कर्मो तुम कितने सुन्दर हो
आप सरीखे कोई मनुष्य नहीं होगा
त्रिकु मोड़ पर टार्च जल रही है
मामा भानज की जोड़ी आ रही है।
बिसु मामा ने तुम्हारी सगाई करवा दी
दूसरे मामा ने दिल की बात कमाई
बिसु मामा दूकान पर इन्तजार करता
तो दूसरा मामा तुम्हें जोत (ऊंचे पहाड़) पर मारता

जब ऊंची ऊंची पहाड़ियों पर बर्फ गिर रही थी तो तुम गम से व्याकुल, शराब पीने लग (पड़े अपने अन्तर्मन में कहता कि) आधी पीऊगां और आधी जेब में रखुंगा और आधी ठेके की (अंग्रेजी) मंगवाऊंगा (फिर अपने ही मन में विचार करता है कि) यदि ठेके जाऊगा तो सब जान जायेंगे और फिर ठेके की थोड़ी सी भी पीओ तो बड़ी लग जाती है तीसा के पांच सात लोग आये और कर्मो को मार कर उसकी लाश नाले में फैंक गए तीसा से टेलिफून होता है कि मोती-की-राख में खून हुआ है। कर्मो के पांच भाई सिपाही थे फिर भी कर्मों की लाश कहां गई – सारे चुराही पूछ रहे थे।

माता गाय दूह रही थी जब इस घटना का पता चला तो वह मूसलाधार आंसू भी साथ बरसाती रही। जब गाय दूहकर दूध लेकर अन्दर (घर) आई तो चक्कर खाकर दूध सहित गिर पड़ी।

जब इसकी बहिन उमा को पता चला तो वह चिल्लाती हुई आई और कहती कि तेरे बिन हम कैसे जीयेंगे

रोती हुई हरदेई बहन कहती कि वह अब मिंजर किसे बांधेगी। रोता चिल्लाता पिता आया और गले से कस-कस कर लगाने लगा

दूसरा मामा चिल्लाने लगा, बिसु मामे को चक्कर आने लगा।
रोती-रोती बसन्ती गहरी सोच में डूब गई (और अपने आप से कहती है)
बिना विवाह किए भी मैं तेरी हूं। दिल की लगी किसने देखी ! मैं यहां हूं तुम कहाँ चले गये हो अर्थात तुम स्वर्ग में हो तब भी मैं तुम्हारी हूं।
जिस तरह मोती की राख में ओस की पड़ी बूंदे चमकती हैं) जो अत्यन्त सुन्दर दीखती हैं उसी तरह ही बसन्ती तेरा यह गीत भी बहुत सुन्दर है
कर्मों तुम कितने सुन्दर हो, आप सरीखे कोई मनुष्य नहीं होगा।

घटना प्रधान गीत

चम्बा क्षेत्र

दॆआं मेरा बिजलु दराट

यह लोकगीत प्रेमी प्रेमिका के जीवन में घटी घटना को व्यक्त करता है। प्रेमिका पर संदेह की दृष्टि से विकृतमन प्रेमी, प्रेमिका की हत्या कर देता है इसलिये की प्रेमिका के सिर पर पहनी जोजी (एक प्रकार की टोपी) को देखकर प्रेमी को संदेह होता है कि यह जोजी इसके किसी प्रेमी ने दी है जो वास्तव में प्रेमिका के भाई ने उसे उपहार स्वरूप दे रखी थी।

छोली-छोली पुच्छे नन्दू लाल, लाल जोजी कुनी दित्ती हो
मेरी जान ! लाल जोजी कुनी दित्ती हो
पंज भाईयां दी इक भैण, लाल जोजी भाईए दित्ती हो
मेरी जान ! लाल जोजी भाईए दित्ती हो
डेयां मेरा बिजलु दराट, धमणे दी पणी बढणी
मेरी जान ! धमणे दी पणी बढणी
घरे तेरे बकरी नी भेड़, पणी तेरी सोगा लाणी हो
मेरी जान ! पणी तेरे सोगा लाणी हो
गल सोगे दी बणी जाणी, अज पणी तेरी लाणी हो

मेरी जान ! अज पणी तेरी लार्णी हो
हत्था तेरे बिजलु दराट, मिंज्जो तेरा डर लगदा
नन्दू लाल ! मिंजो तेरा डर लगदा
लेई लै मेरा बालु ते बलाक, जान मेरी छड नन्दूआ
मेरी जान ! जान मेरी छड नन्दूआ
नैंयो लैणा बालू ते बलाक, जान तेरी नैंयो छडणी
मेरी जांन ! जान तेरी नैंयो छडणी ।
जली जांदे सड़के दे घूम, लेरा मेरी कोई नी सुणदा
मेरी जान ! लेरा मेरी कोई नी सुणदा ।
पैहली फट मारी नन्दू लाल, बांह सराणे बढी सुट्टी हो
ठगी जान ! बांह सराणे बढी सुट्टी हो
दूई फट मारी नन्दू लाल, धड़ मूंडी बख कीत्ती हो
लेई जान ! धड़ मूडी बख किती हो
छोली-छोली पुच्छे ठाणेदार, कितणे खून बो कीत्ते
सच बोल ! कितणे खून कीत्ते
छी खून कीत्ते सरकार, सतमें दी बारी आई हो
सरकार ! सतमें दी बारी आई हो
अग्गे-अग्गे बैंसनी दी लास, पिच्छे नन्दू खूनी चलेया
सुणो लोको ! पिच्छे नन्दू खूनी चलेया
लास पुज्जी डोगरे बजार, नन्दू खूनी कैद कित्तेया
सुणो लोको ! नन्दू खूनी कैद कित्तेया
पेशी लगी जजे दी केचैरी, नन्दू सामदार पुज्जेया
ठगी थे ! नन्दू सामदार पुज्जेया
हत्था हथकड़ी पैरा बेड़ी, चोबी फुट दुआल टप्पेया
मेरी जान ! चोबी फुट दुआल टप्पेया
बिगलिये बिगल बजाई, ता नन्दू पुला पार टप्पेया
मेरी जान ! नन्दू पुला पार टप्पेया

हिन्दी अनुवाद

नन्दू अपनी प्रेमिका (बैंसनी का) से बार बार पूछता है यह लाल जोजी (सर पर पहनने वाली एक प्रकार की टोपी) किसने दी है ।

उसकी प्रेमिका बैंसनी उत्तर देती है कि वह पांच भाइयों की एक बहिन है और यह लाल जोजी उसके भाई ने दी है।

नन्दू कहता है कि उसका बिजलु दराट (तेजधार की दरांती) दो वह धम्मण (पेड़ विशेष) की पत्तियां काटने जाएगा। बैंसनी पूछती है तुम्हारे घर न तो बकरी है न भेड़ है तो हरी पतियां मृत्यु के समय दान दोगे ? नन्दू उत्तर देता है कि बात तो मृत्यु उपरान्त दान की ही बन पयेगी। आज हरी पत्तियां तेरी बनाउंगा (मार दूंगा) बैंसनी कहती है कि तेरे हाथ में बिजलु दराट है, मुझे तुमसे डर लगता है। मेरी जान ! मुझे तुमसे डर लगता है।

ले लो मेरी बालू और बलाक (नथनी) पर मुझे छोड़ दो नन्दू।
नन्दू कहता कि न ही लूंगा तेरा बालू और बलाक और न ही तेरी जान छोड़ूंगा। बैंसनी कहती कि जल जाए यह सड़क के लम्बे लम्बे मोड़ मेरी चिल्लाहट भी कोई नहीं सुनता।

पहली बारी में बैंसनी का बाजू काट दिया धोखा देकर, जिसे सिरहाने रखा। दूसरी बार में धड़ से गर्दन अलग की।

थानेदार नन्दू को बार बार पूछता है कि सच कहो कितने खून किये हैं।

नन्दू कहता है कि छः खून किये हैं सरकार सातवें की बारी है। आगे-आगे बैंसनी की लाश चली और पीछे नन्दू खूनी चला। लाश जब डोगरे बाजार (चम्बा) में पहुंची तो नन्दू खूनी कैद कर लिया गया। सुनो लोगो ! नन्दू खूनी कैद किया जब जज की कचहरी में पेशी लगी तो नन्दू भाग कर शामदार (पहाड़ी का नाम) पहुंचा। हाथ में हथकड़ी और पाँव में बेड़ी पड़ी हुई थी तब भी नन्दू चौबीस फुट दीवार फांदकर भागा। जब बिगुलिये ने बिगुल बजाई तो नन्दू भागकर पुल के पार पहुंचा। मेरी जान ! नन्दू पुल के पार पहुंचा।

संग्रहण व अनुवाद
चंचल कुमार

घटना प्रधान गीत
भरमौर (चम्बा) क्षेत्र

ठिंडलु पुहाल

ठिंडलु पुहाल लाहौल और भरमौर में समानरूप से गाया जाता है। यह गाना त्रिलोक नाथ की मूर्ति से सम्बन्धित है। त्रिलोकीनाथ कहीं गुप्तरूप में हिंसे की धार पर बकरी का दूध पी जाता था। प्रतिदिन पुहाल का मालिक उस पर शक करता था कि वह स्वयं दूध पी जाता है। एक दिन त्रिलोकीनाथ दूध पीते रंगे हाथों पकड़े गए। वह मूर्तिरूप में परिणत हो गया। लोक-गीत की पंक्तियां इस प्रकार है।

ठिंडलु पुहाल भेड़ बकरी चरांदा जी ओ,
हिंसे री धारा भेड़ बकरी चरांदा जी ओ
रोज-रोज दुधा दूंधा जी ओ
ओ गाई हिंसा दी दूणा=चूणा कीती जी ओ
ठिंडलु पुहाल जोड़ा बकरी दूंधा जी ओ
ओ भेड़ा बकरी असी नहीं दूंधा जी ओ
ओ तू नहीं दूंधा होर कुण दूंधा जी ओ
ओ दुर्गा गोठे पलड़ी छाया जी ओ
ठिंडलु पुहाला जपतावा बैठी जी ओ
ओ सातों मूर्ति निकली नैं आई जी ओ
ओ साता मूर्ति से सात दी सात दुहणा आई जी ओ
ठिंडलु पुहाला बकरी दूंधा जी ओ

ओ ठिंडलु पुहाला जगदा थ्रैंड़ी जी ओ
छिओ मूर्ति छिप कर गई जी ओ
काणा मूर्ति ठिंडलु पकड़ी जी ओ
छोड़ पुहाला क्या इंतजामा लेणा जी ओ
से ठिंडलु पुहाला मांरदी उछाला जी ओ
ओ ठिंडलु पुहाला भेड़ बकरी दूंधा जी ओ

हिन्दी अनुवाद

ठिंडलु नामक चरवाह पर शक किया जाता है कि वह भेड़ बकरियां चराते हुए दूध दूह लेता है। वह हिंदसे की धार पर दुर्गा नामक गोठ (चरागाह का वह स्थान जहां भेड़ें बैठकर दिन या रात को आराम करती हैं) में कोई चोरी छिपे भेड़ों का दूध दूह लेता है। ठिंडलु पुहाल को इस आरोप पर दुःख होता है अतः वह सारा दिन भर सोता नहीं परन्तु जागता रहता है ताकि स्थिति का पता लगाए। अंततः सात मूर्तियां दूध दूहने के लिए उठती है। ठिंडलु एक को पकड़ लेता है परन्तु छः मूर्तियां छिप जाती हैं ◈

घटना प्रधान गीत
भरमौर (चम्बा) क्षेत्र

लुड्डी ब्रामणी

भारतभूमि के वीरों के साथ-साथ वीरांगनाओं ने भी वीरता के कार्य निभाए हैं। बात बहुत पुरानी है। भारत पर आक्रमणकारी अत्याचार मचाते आते थे और लोगों को आंतकित किया करते थे। कुछ आक्रमणकारी ऊधम मचाते चम्बा में आ गए। गांव में सब डर के मारे घरों में घुस गए। केवल लुड्डी नामक ब्राह्मणी ही उन से लड़ने के लिए निकली। उसने उन का सामना किया और चार को तो जान से मार डाला। इस पर चम्बा के राजा ने उसे ईनाम दे कर सम्मानित किया। यह गाथा छत्राढ़ी क्षेत्र में प्रचलित है।

लुड्डी ब्रामणीए बो तेरा कठेरा गमान
लुड्डी ब्रामणीए बो मारे चार जवान
लुड्डी ब्रामणीए मुइए मारे मुगल पठान
लुड्डी ब्रामणीए मुइए जांदी चम्बे रे चुगान
लुड्डी ब्रामणीए मुइए राजा खिनुए खेले
अते भला लुड्डी ब्रामणीए राजा पुछणा लग्गा
अते बला लुड्डी ब्रामणीय के अरदासा
लुड्डी बलणा लग्गी लुड्डी मारे चार जवान
अते मारे मुगल पठान
लुड्डी ब्रामणी मुइए जो राजे कीते पेरू दान
लुड्डी ब्रामणी बो तेरा कठेरा गमान ।

हिन्दी अनुवाद

गीत की कड़ियां आसान शब्दों में दी हैं । लुड्डी को गीतकार पूछता है कि हे लुड्डी ब्रामणी तुझे किस बात का गर्व है । लुड्डी के शब्दों में उस के बहादुरी के कारनामे बताए जाते हैं । वह इस बात की सूचना देने के लिए सिर ऊंचा करके चम्बे के राजे के पास जाती है । उस समय चम्बा का राजा चौगान में गेंद खेलता होता है और लुड्डी से पूछता है कि उस की क्या अरदास (अर्ज) है । और लुड्डी ब्रामणी अपनी वीरता की कहानी सुनाती है । राजा खुश होकर उसे ब्राह्म चांदी इनाम में दे कर सम्मानित करता है ✧

श्रम प्रधान गीत
भरमौर (चम्बा) क्षेत्र

त्रुटि मेरे छिकणु री काछी

प्रस्तुत लोक गीत गद्दी क्षेत्र में लोकप्रिय है । इस गीत के माध्यम से गद्दी जनजाति के कठिन जीवन-श्रम पर प्रकाश डाला गया है । जब आधुनिक यातायाय व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी उस

समय केवल मात्र अपनी टांगे ही सहारा थीं। ऐसी स्थिति में लोगों को अपना सारा समान लेकर चलना पड़ता था उस समय ठीक यही दशा होती थी जो गीत के शब्दों में बताई गई है।

त्रूटि ता मेरे छिकणु री काछी, बैरिआ भाले हो
मुक्की ता मेरे खलडुरी खरच, बैरिआ भाले हो
मुक्कू ता मेरे बिबड़ूरा पाणी, बैरिआ भाले हो
आई ता जली रात न्हरी, बैरिआ भाले हो
ल्हिसी जंघा, जोत किहां लाणा, बैरिआ भाले हो
भुखे पेट जोत किहां लाणा, बैरिआ भाले हो
जली जांदी जोतेरी चढ़ाई, बैरिआ भाले हो

हिन्दी आनुवाद

एक गद्दी युगल पीठ पर छिकणु (बोझ) लिए जोत (बर्फानी पर्वत) के मार्ग से जांधर (मैदानी क्षेत्र) को जा रहा है। रास्ते में महिला के उठाए बोझ की रसी टूट जाती है। भार इतना है कि उठाया नहीं जाता। वह अपने पति को बैरी करके सम्बोधित करती है और यहां तक कि अब भोजन सामग्री भी समाप्त हो जाती है। पर तिस पर भी यह कठिन मार्ग तय करना है। बिबड़ू (तूंबी) में पानी लिया था सो भी समाप्त हो जाता है। अब रात भी पड़ गई परन्तु बर्फानी पर्वत का रास्ता तय नहीं हुआ है। अब अंधेरी रात आ गई है। सब से बड़ी मुसीबत तो बीमारी काटने के बाद की कमजोर टांगे हैं जो चलने में साथ नहीं देती। तिस पर भी भूखा पेट। मानो सभी मुसीबतें एक साथ आ पड़ी हैं।

श्रम प्रधान गीत
भरमौर (चम्बा क्षेत्र)

भेड़ा दिया पाहलणु आ

यह प्रसिद्ध श्रमगीत है जो लोगों में काफी लोकप्रिय है। पाहल (चरवाह) का जीवन भी क्या जीवन है। बस रात दिन

भेड़ बकरियों के साथ सारा जीवन समाप्त हो जाता है। बड़ी मुसीबत तो उन दिनों आती जब पाहल अपनी भेड़ बकरियों को ऊंचे पहाड़ों पर ले जाते हैं। विशेषकर नव विवाहतों के तो मानो विरह के दिन काटे नहीं कटते। यही चित्रित हुआ है.... इस गाने में।

भेड़ा केरिआ पाहलणुआ, घरे जो इच्छे हो
घरा जो किहां इच्छु भेड़े सो लाया हो
सौ सुइयां भेड़लियां, पणासो सुइयां हो
धारा दिया पाहलणुआं, मन सुंघड़ लग्गा हो
सुंघड़ लग्गा हो सुंघड़ौणा, मने बुरा बुरा लग्गा हो
घरा किहां इच्छु भेड़ा सो लाया हो
कोढ़ा भला चितरा उरणु लई इच्छे फेरू पाणा हो
हंसु मोरु छेलु लई इच्छे, कुद्दणा पाणा हो
कुद्दणा पाणा हो जिंदड़ियां जो जिंद बणाली हो
भेड़ा भला तेरीं सोगे लाइयां घरा त्रडेरु हो
दुई भला अक्खे हंडकू रिझदा मु केलिए खाणा हो
दो भला सेज मंजलु लाया मु के लिया सोणा हो
भेड़ा केरिआ पाहलणु, तू घरा जो इच्छे हो

हिन्दी अनुवाद

गद्दन अपने गद्दी के विछोह में अकेली नहीं रह सकती अतः उसे (चरवाह) पाहल कह कर उसे घर आने के लिए कहती है परन्तु गद्दी (पहल) बेचारा विवश है वह घर नहीं आ सकता क्योंकि उसकी भेड़े तो बच्चों को जन्म देने की अवस्था में है और यहां तक कि कुछ पणसो (मरे बच्चे जनना) गई हैं उनकी देखभाल अनिवार्य है। लेकिन नव विवाहित गद्दी महिला की अवस्था भी विचारणीय है। उसे अपने पति के बिना बहुत उदासी रहती है। विरह से कई रोग उत्पन हो जाते हैं जो उसे भी हो गए हैं अतः कोढ़ा (लाल रंग का) उरणु (भेड़ का बच्चा) लाया जाय ताकि उसे फेरू (अताम रक्षा के लिए सिर के गिर्द घुमाना) पा सके। कोढ़ के साथ वह चित्रा (चितकबरा) भी हो। साथ ही इसी कार्य के लिए हंसु मोरु छेलु (सफेद काले रंग का बकरी का बच्चा) ले आए ताकि उसे कद्दण (रक्षा के लिए पानी

डालकर देवता के निमित्त रखना) पाया जाए। उस की दशा और भी हृदय विदारक नजर आती है जब वह मिट्टी के बर्तन में दो जनों के लिए भोजन तैयार करती परन्तु उसे अकेले ही खाना पड़ता है। उस दिन क्या बीतती होगी जब वह उस की प्रतीक्षा में दो के लिए सेज तैयार करती है पर बेचारी काफी प्रतीक्षा के बाद अकेली सोती है

श्रम ही तो है जो दो हृदयों को तड़फाता है।

संग्रहण व अनुवाद

अमर सिंह रणपतिया

श्रम प्रधान गीत

हमीरपुर क्षेत्र

कालुआ मजूरा दूर तेरा डेरा

कालू नाम का एक मजदूर जो घर से दूर जंगलों में मजदूरी करता है, की पत्नी घर पर अपने पति को याद करती है कि बहुत समय हो गया तुम्हें गए अब घर आ भी जाओ।

कालुआ मजूरा ओ दूर तेरा डेरा ओ कदी घरओणा
परदेसी सज्जणा ओ बीती गया फौगणा ओ कदी घर ओणा
जंगला तू फिरदा ओ कंडया च रूलदा ओ
छून तेरे डुलदा बुरा हाल घर दा,
मेरया प्रेमियां बीती गया फौगणा कदी घरे औणा।
काम्या मजूरा...

धुप्पा तू जलदा ओ पालें तू ठरदा ओ
बुरा हाल घर दा परदेसी सज्जना ओ बीती गया फौगणा ओ
कदी घर औणा, काम्या मजूरा...
दियालिया दे बबरू ओ लोहड़िया दी खिचड़ी
सै तिज्जो कियां विसरी
परदेस सज्जना कदी घर औणा— ...काम्या मजूरा
राती न सौन्दी मैं दिहाड़िया नी बौह्न्दी ओ
याद तेरी औन्दी
मेरया प्रेमिया दिला देआ मैहरमां ओ
बीती गया फौगणा ओ कदी घर औणा
कालुआ मजूरा दूर तेरा डेरा ओ कदी घर औणा ०

हिन्दी अनुवाद

मेरे मजदूर प्रेमी पता नही तू यहां से कितनी दूर रहता है। जंगलों में मजदूरी के लिए दर दर घूमता है खून पसीना एक करता है, अब तुम घर आ जाओ, घर का बुरा हाल है, तुम ने फागुन मास में आने का वचन दिया था वह भी बीत गया है, तुम कब घर आओगे ?

मेरे परदेस गए साजन तू धूप में काम करता हुआ जलता हैं ठण्ड में ठिठुरता है तुमने कब घर आओगे घर का बुरा हाल है फागुन बीत चुका है अब तो घर आ जाओ।

मेरे प्रियतम दीवाली के अवसर पर बबरू (विशेष खाना) खाती बार मुझे बार-बार तुम्हारी याद सताती रही इतने सुन्दर खाने को भी तू भूल गया और इन त्यौहारों पर तू नहीं आया, अब तो आ जा।

मेरे मन की बात जानने और समझने वाले मेरे प्रेमी मैं रात को भी नहीं सोती दिन भर काम काज में लगी रहती हूं। एक क्षण भी नहीं बैठती पर फिर भी जब तुम्हारी याद आती है मन को बड़ा दुःख होता है। मुझ से दूर रहने वाले मेरे प्रेमी अब तो फाल्गुन भी बीत गया है अब तो घर आ जाओ !

संग्रहण व अनुवाद

कमल हमीरपुरी

खेत खलिहान में कार्य कर रही नवयौवना खेत के काम में व्यस्त है। ऊपर से पड़ती सूर्य की तेज किरणें भी उनके अंगों को निहार रही हैं। अन्य महिलाएं उसके साथ काम करती हुई थकान को कम करने के लिए निम्न गीत गाती हैं :-

धुप लगी सिरा सामणे सिरा सामणे, सालुआ डिगी ओ रैह्‌दां
असां जाणा जिले कांगड़े जिले कांगड़े, डेरा जमुए लाणा
धुप लगी मत्थे सामणे, बिंदिया डिगी ओ रैह्‌दी
असां जाणा जिले कांगड़े, जिले कांगड़े डेरा जमुए लाणा
धुप लगी बांही सामणे, चूड़ा डिगी ओ रैह्‌दे
असां जाणा जिले कांगड़े...
धुप लगी पैरा सामणे पैरा सामणे पह्‌णियां डिगी ओ जांदी
असां जाणा जिले कांगड़े
धुप लगी गले सामणे, गले सामणे हार डिगी ओ रैह्‌दा
असां जाणा जिले कांगड़े, जिले कांगड़े डेरा जमुए लाणा.

हिन्दी अनुवाद

सिर पर तेज धूप पड़ रही जिसके कारण सिर पर ओढ़े हुए दुपट्टे का गोटा ऐसा चमक रहा है जैसे उस में आग सी लपटें हों। हम जिला कांगड़ा जाएंगे और फिर अपना डेरा जम्मू जाकर जमाएंगे।

तेज धूप माथे पर पड़ रही जिस के कारण माथे की बिंदिया ऐसे लग रही है जैसे

कि उसमें आग हो, हम जिला कांगड़ा चले जाएंगे ...

बाहों में पहना चूड़ा सूर्य की सीधी रश्मियों के कारण वह बहुत ज्यादा चमक रहा है, हम ने जिला कांगड़ा जाना है...

पैरों पर भी सूर्य की किरणे पड़ रही हैं जिसके कारण युवती के जूते भी बहुत ज्यादा चमक रहे हैं। हमने जिला कांगड़ा जाना है...

गले में पहना हुआ हार सूर्य की किरणों के कारण ऐसा चमक रहा है जैसे कि उसके (युवती के) वक्षस्थल पर भी एक छोटा सा सूर्य स्थित हो गया हो।

हम जिला कांगड़ा चले जाएंगे और फिर जम्मू जाकर अपना डेरा लगाएंगे।

संग्रहण व अनुवाद

बालक राम भारद्वाज

पितीराम पिराम फुआलं

लोकगीत में चरवाहों की कठिनाइयों, देवी-देवता सन्बन्धी विश्वासों तथा उनकी मान्यताओं और प्रसन्ता तथा दुखः के अनुभवों का शब्द-चित्र उकेरा गया है। सौनिगे (सावणी) देवियां पर्वतशिखरों के देवता माने जाते हैं। पर्वतशिखरों (कण्ढों) में पहुंचते ही चरवाहे (फुआलं) उनकी पूजा बलि देकर करते हैं। यदि विधिवत् पूजा न की जाए तो भेड़ें गुम हो जाती हैं, ऐसा बिश्वास किया जाता है।

गोल़े गो होना
हाया वे होना।
थङ सा पावङ चो़
इ विण्डो शालङ्।
इ विण्डो शालङ्, नो
हातो शालङ्?
नो शालङ् ता लोन्ना
बोलो, डोम्बोरु शालङ।
शालङ् ता डोम्बोरु,
पुआन हात दुग्योश?
पुआन ता लोन्मा,
भाटुआ लो छाङा।
भाटुआ लो छाङा,
हुरोमुआ ता बानजास।
हुरमुआ बानजास,
नामङ ठ दुग्योश?
नामङ ता लोन्मा,
पोती राम नेगी।

हिन्दी अनुवाद

टेक

ऊपर की ओर कण्ढे में
भेड़ बकरियों का एक झुण्ड।
एक झुण्ड, यह किसका
झुण्ड?
यह झुण्ड कहे तो
देवता का झुण्ड।
झुण्ड तो देवता का
पुआल (चरवाहा) कौन है?
पुआल कहे तो
भाट का लड़का।
भाट का लड़का
हुरम का भानजा।
हुरम के भानजा का
नाम क्या है?
नाम कहे तो,
पोतिराम नेगी।

पोती राम नेगी, पितीराम नेगी,	पोतिराम नेगी, पितीराम नेगी,
पती राम नेगी ।	पतीराम नेगी ।
पिती राम लोतोश-या	पितीराम ने कहा—ऐ
पंचो वइयार ।	पंच भाइयो !
या पंचो वइयार,	ऐ साथियो !
शालङ तङमिग मा दू ।	झुण्ड दिखाई नहीं देता ।
शालङ् तङमिग मादू,	झुण्ड नज़र में नहीं है,
अङ न्योटङ क्वी छङ ।	मेरे दो कुत्ते के बच्चे ।
हुन हाला लन्मे, शालङ्	अब क्या करें ? झुण्ड
ता मा दू ?	तो नहीं है ।
अई हाला लान्ते,	और क्या करें ? अब
हुन किमो बीते ।	घर चलें ।
अपने घोरे, अङ	अपने घर में, मेरे कोने
ज़रो मन बोन,	में माँ बाप ।
अङ ज़रो मन बोन,	मेरे कोने में माँ बाप,
शालङ ता मा दू ।	झुण्ड तो नहीं है—
थङको कोठियूदेन,	ऊपर की कोठी पर,
डोम्बोरी जान्याग्योश ।	देवता निकाला—
डोम्बोरिस लोतोश—	देवता ने कहा—
बनज़ीगे नीतोश ।	भानजी (सावनी देवता) होगी ।
बनजीगे नीतोश,	भानजी होगी पूजा
दाखेनङ शेरईं ।	करो ।
दखेनङ शेरईं,	पूजा लगाना (करना),
दखेनङ पानो ।	पूजा (के) पत्थर पर ।
दखेनङ शेशे, ओमसा ओमसी ।	पूजा की, पहले पहले ही ।
ओमसा ओमसी, अङ	पहले पहले ही, मेरे
न्योटङ क्वीछङ ।	दो कुत्ते के बच्चे,
अङ न्योटङ क्वीछङ	मेरे दो कुत्ते के बच्चे,
खबलू रङ दोमरो ।	[illegible] और दोमरू ।
न्युमसा न्युमसी अङ	पीछे पीछे ही मेरा
गुरा शालङ ।	नौ सौ (भेड़ बकरियों) का झुण्ड ।

ओमसा ओमसी अङ
फालोरया कारा ।
अङ ती तरया खाडो,
घण्ठङी वाजयों ।
पितीराम लोतो-या
पंचो वाईग़ार ।
या पञ्चो वइयार
वर क्योची शेस मिग ।
वर क्योची शेसमिग
ज़ोनमिग्या सोङगी ।
ज़ोनमिग्या सोङगी,
शुआलो चीमे ।
शुआलो चीमे
छोटास छोटस
ओसरङ ।

पहले ही पहले मेरा
फलोरेया (नाम वाला) मेमना-
मेरा चितकबरे मुंह
वाला खड्डू (मेमना), घण्टी
बजाते हुए ।
पितीराम ने कहा-
ऐ साथी भाइयो !
ऐ पंचो भाइयो, दूर
से ही पहचानने का-
दूर से पहचानने का,
पसन्द की साथी-
पसन्द की साथिन (प्रेमिका)
शुआल की लड़की ।
शुआल की लड़की,
छोटे छोटे कद की ।

संग्रह व अनुवाद
डॉ० बंशीराम शर्मा